बाल भारती

भाग 3

संयुक्ता लूदरा
सत्येन्द्र वर्मा

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
मई 1987 : बैसाख 1909

प्रथम संशोधित संस्करण
मार्च 2000 : फाल्गुन 1921

द्वितीय संशोधित संस्करण
सितंबर 2002 : भाद्रपद 1924

PD 650T NSY

ISBN 81-7450-009-x

एन.सी.ई.आर.टी. के प्रकाशन विभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैम्पस	108, 100 फीट रोड, होस्डेकेरे	नवजीवन ट्रस्ट भवन	सी.डब्लू.सी. कैम्पस
श्री अरविंद मार्ग	हेली एक्सटेंशन बनाशंकरी III इस्टेज	डाकघर नवजीवन	32, बी.टी. रोड, सुखचर
नई दिल्ली 110016	बैंगलूर 560085	अहमदाबाद 380014	24 परगना 743179

प्रकाशन सहयोग

संपादन	:	नरेश यादव
उत्पादन	:	विनोद देवीकर
		मुकेश कुमार गौड़
चित्र तथा आवरण	:	सीमा जबीं हुसैन

रु. 30.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटर मार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित ।

प्रकाशन विभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविन्द मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा शगुन ऑफसैट 132, मुहम्मदपुर, भीकाजी कामा पलेस, नई दिल्ली 110066 द्वारा मुद्रित।

प्राक्कथन

भाषा मनुष्य के वैयक्तिक और सामाजिक जीवन के विकास के लिए सबसे उपयोगी साधन है, इसलिए भाषा सीखना व्यक्ति की मूलभूत आवश्यकता है। यह एक सहज प्रक्रिया है। भाषा की शिक्षा के बिना मनुष्य का सामाजिक और बौद्धिक विकास पूर्ण नहीं होगा। भाषा का प्रवाह व्यक्ति और समाज में निरन्तर चलता रहता है। भाषा शिक्षण का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों को इस योग्य बना देना है जिससे वे भाषा के प्रवाह में स्वयं तैर सकें।

पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्य सामग्री का निर्माण एक सतत प्रक्रिया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 के तहत परिषद् ने नवीन पाठ्यपुस्तकों के निर्माण की जो शृंखला प्रारंभ की थी उसमें बाल भारती भाग 3 प्राथमिक कक्षाओं में मातृभाषा हिंदी पढ़ाने के लिए निर्मित पुस्तक की तीसरी कड़ी है। इस पुस्तक का प्रथम संस्करण 1987 में प्रकाशित किया गया था। सन् 2000 में परिषद् द्वारा विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा निर्मित की गई और उसके आधार पर पाठ्यक्रमों का निर्माण किया गया। इस पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य है – बस्ते के बोझ को कम करना, पाठ्य सामग्री को अद्यतन बनाना और मूल्यपरक शिक्षा प्रदान करना। परिषद् ने पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रमों को आधार बनाकर विभिन्न विषयों में नई पाठ्यपुस्तकों का निर्माण तथा अन्य पाठ्य सामग्री में संशोधन, परिवर्धन का कार्य आरंभ किया है।

इसी आधार पर बाल भारती भाग 3 में यथा-आवश्यक संशोधन किया गया है। प्रस्तुत पुस्तक को संशोधित करते समय ध्यान रखा गया है कि पाठ्यक्रम के बोझ को कम किया जा सके तथा पाठ्य सामग्री को नई पाठ्यचर्या के परिप्रेक्ष्य में अद्यतन बनाया जा सके।

प्रस्तुत पुस्तक में भाषा-कौशलों के साथ-साथ मनोरंजन पर भी पर्याप्त बल देने का प्रयास किया गया है, ताकि बच्चों में पठन-पाठन के प्रति रुचि उत्पन्न हो सके और अधिगम प्रक्रिया आनंददायी बन सके।

इस पुस्तक के निर्माण का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के मानसिक क्षितिज का सहज रूप से सम्यक विकास करना है। साहित्य की विविध-विधाओं के कुछ सरल रूपों– कहानी, कविता, निबंध, पत्र, संवाद, वर्णन, आत्मकथा, एकांकी, जीवनी आदि के माध्यम से इस पुस्तक में सामग्री को प्रस्तुत किया गया है। यह भी ध्यान रखा गया है कि विद्यार्थियों में पठित सामग्री के आधार पर चिंतन की योग्यता भी विकसित हो सके।

जिन विचारों एवं मानव मूल्यों पर अधिक बल दिया गया है उनमें कुछ इस प्रकार हैं– देशप्रेम, राष्ट्रीय एकता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास, सामाजिक सहयोग, पर्यावरण संरक्षण, पारस्परिक सद्भाव, समूह के प्रति उत्तरदायित्व की भावना, भारतीय संस्कृति एवं इतिहास का ज्ञान, सच्चाई, सफ़ाई, अनुशासन, समय-पालन, खेल भावना, साहस, श्रम का महत्त्व, स्वास्थ्य, सभी धर्मों के प्रति आदर का भाव आदि।

आशा है कि विषय, विधा तथा प्रस्तुतीकरण की दृष्टि से बाल भारती भाग 3 के इस नवीन संशोधित संस्करण का विद्यार्थियों और शिक्षकों द्वारा स्वागत होगा।

प्रस्तुत पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए विद्यार्थियों, अध्यापकों और भाषाविदों द्वारा भेजे गए सुझावों का हम सदैव स्वागत करेंगे।

जगमोहन सिंह राजपूत
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
फरवरी 2002

समीक्षा-संशोधन कार्यगोष्ठी के सदस्य

1. प्रो. मा. गो. चतुर्वेदी
   173, नीलगिरी, अलकनन्दा
   नई दिल्ली
2. डॉ. आनन्द प्रकाश व्यास
   छाया, एम.डी. 56
   विशाखा एन्कलेव, दिल्ली
3. श्री जय नारायण कौशिक
   सी-605, सरस्वती विहार
   दिल्ली
4. डॉ. नीरा नारंग
   शिक्षा विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय
   दिल्ली
5. श्री जगमोहन सिंह
   1-के/3, रामप्रिया निवास
   राम प्रिया रोड, इलाहाबाद
6. डॉ. सुरेश पंत
   सी-4 सी/10, जनकपुरी
   नई दिल्ली
7. श्री रामगोपाल शर्मा
   हिल ग्रूव स्कूल, ए-1, सफदरजंग एन्कलेव
   नई दिल्ली
8. सुश्री कुसुमलता अग्रवाल
   टी.जी.टी., सर्वोदय बाल विद्यालय
   रमेश नगर, नई दिल्ली
9. श्री विजय नारायण पाण्डेय
   वसंत वैली पब्लिक स्कूल
   वसंत कुंज, महरौली, महिपाल पुर, नई दिल्ली
10. श्रीमती संयुक्ता लूदरा
    सी-20/सी, गंगोत्री अपार्टमेंट्स
    अलकनन्दा, नई दिल्ली
11. प्रो. कृष्णकान्त वशिष्ठ
    अध्यक्ष, प्रा.शि. विभाग
    एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली
12. प्रो. रामजन्म शर्मा (संयोजक)
    एन.सी.ई.आर.टी.
    नई दिल्ली
13. डॉ. इन्दु सेठ (विभागीय सदस्य)
    एन.सी.ई.आर.टी.
    नई दिल्ली

शिक्षकों के लिए

बाल भारती पुस्तकमाला की यह तीसरी पुस्तक है। दूसरी पुस्तक समाप्त होने तक बच्चे अनेक सरल संयुक्त वर्णों से निर्मित शब्दों को शुद्ध उच्चारण में पढ़ना सीख जाते हैं। इस पुस्तक में कुछ अन्य संयुक्त वर्णों का समावेश किया गया है। इनसे बनने वाले अनेक शब्दों को किसी न किसी रूप में अभ्यासों में प्रस्तुत किया गया है। पाठ्यपुस्तक में जीवन के विविध क्षेत्रों से जुड़े बच्चों की रुचि पर आधारित पाठ लिए गए हैं। इन पाठों को कहानी, कविता, संवाद, वर्णन, आत्मकथा, निबंध, एकांकी, पत्र, जीवनी आदि विधाओं में सँजोया गया है।

पाठों के अंत में सुनियोजित ढंग से प्रश्न तथा अभ्यास दिए गए हैं। आशा है इनके द्वारा बच्चों में अर्थग्रहण करने, विस्तृत विवरण जानने, मुख्य विचार जानने, प्रत्यास्मरण करने, निष्कर्ष निकालने तथा घटनाक्रम समझने की योग्यताएँ विकसित की जा सकेंगी। इनके अतिरिक्त इनके कार्य-करण संबंध स्थापित करने, परिचित कहानी या घटना का संक्षेप में वर्णन करने, पठित अंश का शीर्षक बताने, कहानी या एकांकी के पात्रों के संबंध में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने, पात्रों का अभिनय करने, चित्र-चार्ट बनाने आदि की कुशलताएँ विकसित करने में भी सहायता प्राप्त होगी।

कक्षा ३ तक आते-आते बच्चों की झिझक समाप्त हो जाती है और वे भाषा सीखने-सिखाने तथा सुनने-बोलने की क्रियाओं में सक्रिय भाग लेने लगते हैं। उनमें शिक्षक, सहपाठियों तथा अन्य व्यक्तियों द्वारा कही गई बातों को धैर्यपूर्वक सुनने की कुशलता भी कुछ सीमा तक विकसित हो जाती है। इस कुशलता का और अधिक विकास अपेक्षित है। इस दृष्टि से कक्षा में विद्यार्थियों के बीच संवाद, समूह में चर्चा, अभिनय, भूमिका-निर्वाह, पूरी कक्षा के साथ विचार-विमर्श आदि क्रियाओं का आयोजन किया जा सकता है। इन क्रियाओं में प्रत्येक बच्चे की भागीदारी सुनिश्चित करें । साथ ही विद्यार्थियों में धैर्यपूर्वक सुनकर समझने तथा स्वाभाविक ढंग से बोलकर अपनी बात कहने की दक्षताओं का विकास किया जा सकता है।

बच्चों के परिवेश में घटित घटनाओं तथा उनकी रुचि के परिचित विषयों पर चर्चा में भाग लेने के लिए निरंतर प्रोत्साहित करना बहुत आवश्यक है। इन विषयों में सामाजिक उत्सव, राष्ट्रीय त्योहार, श्रमदान, सामुदायिक सेवा के कार्य आदि सम्मिलित किए जा सकते हैं।

बच्चे स्थानीय बोलियों के प्रभाव से मुक्त होकर हिंदी भाषा के परिनिष्ठित रूप का प्रयोग करने लगें, इसके लिए शिक्षक को निरंतर सुनियोजित प्रयास करना होगा। अतः ध्यान रखें कि बच्चे अपनी लिखित अभिव्यक्ति में यथासंभव मानक भाषा का ही प्रयोग करें।

बच्चों को पठन-संबंधी योग्यताओं में उत्तरोत्तर उन्नति और उनकी अन्य भाषिक योग्यताओं तथा अभिरुचियों के समुचित विकास के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि हम यह न सोचें कि आज हमें इतने पृष्ठ पढ़ा ही देने हैं। बल्कि हम यह मानकर चलें कि हमें तो भाषा-संबंधी अनुभवों को प्राप्त कराने के लिए पृष्ठभूमि तैयार करनी है। यह तभी हो सकता है जब भाषा के पाठ को विस्तृत अर्थ में लिया जाए।

भाषायी योग्यताओं को निरंतर बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है कि हम पढ़ाते समय इस बात का ध्यान रखें कि बच्चे समान रूप से सभी भाषायी योग्यताओं में कुशलता प्राप्त करें। किसी पाठ को पढ़ाने से पूर्व उसकी योजना बनाकर किस समय क्या पढ़ाया जाए, यह निश्चित कर लेने पर पाठ द्वारा विकसित—सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना तथा चिंतन संबंधी सभी योग्यताओं पर समान रूप से बल दिया जा सकता है।

शिक्षक शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को संपन्न करने के लिए निम्नलिखित सोपानों को अपना सकते हैं :

1. पृष्ठभूमि का निर्माण अथवा पाठ की तैयारी

किसी पाठ को पढ़ाने से पूर्व उसकी पृष्ठभूमि का निर्माण करना मनोवैज्ञानिक दृष्टि से सर्वथा उचित है। इससे बच्चों के पूर्वज्ञान का पता चल जाता है और उन्हें पाठ को समझने में सहायता मिलती है। इस सोपान के अंतर्गत बच्चों से पाठ की विषय-वस्तु से संबंधित ऐसे प्रश्न पूछे जाएँ जिनके उत्तरों से हमें उस विषय के संबंध में उनके पूर्व अनुभवों का पता चल जाए। साथ-साथ पाठ या कहानी से संबंधित कुछ अन्य बातें जिनका ज्ञान अभी बच्चों को नहीं है परंतु वे पाठ या कहानी के लिए आवश्यक हैं, उन्हें भी बताएँ। उदाहरण के लिए 'कोयल' शीर्षक पाठ कविता के रूप में है। इसे पढ़ाने से पहले निम्नलिखित प्रश्नों द्वारा बच्चों से चर्चा की जा सकती है–

— तुमने कौन-कौन सी चिड़ियाँ देखी हैं?
— तुमने किस-किस चिड़िया की आवाज़ सुनी है ?
— कोयल की बोली को लोग क्यों पसंद करते हैं ?
— कोयल अकसर किस पेड़ की डाल पर बैठती है ?

इन प्रश्नों से प्राप्त उत्तरों के आधार पर आप बताएँ कि वसंत के सुहाने मौसम में कोयल आम की डाल पर बैठकर 'कू-कू' कर अपनी मीठी आवाज़ सुनाती है। आज जो कविता हम पढ़ेंगे, वह कोयल के बारे में ही है। इसमें कवि ने कल्पना की है कि कोयल की मीठी आवाज़ से ही कच्चे आम रस से भरकर, पके, रसीले आमों में बदल जाते हैं। इस प्रकार बच्चों को मानसिक रूप से तैयार करने के बाद कविता का शिक्षण प्रारंभ करना उचित होगा।

कविता के शिक्षण के संबंध में यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि इसे पढ़ाने का ढंग कहानी, संवाद, वर्णन आदि विधा के पाठों को पढ़ाने से भिन्न है। कविता पढ़ाने का मुख्य उद्देश्य बच्चों को सौंदर्यबोध तथा रसानुभूति कराना है। कविता को पढ़कर वे आनंद प्राप्त करें, यही हमारा मुख्य लक्ष्य है। छोटी कक्षाओं में कविता की प्रत्येक पंक्ति का अर्थ स्पष्ट करना आवश्यक नहीं है। यदि कविता प्रकृति-प्रेम, देश-प्रेम, वातावरण, पशु-पक्षी आदि के विषय में है तो बच्चों को उसे पढ़कर आनंद प्राप्त करने के साथ-साथ देश, प्रकृति तथा पशु-पक्षियों के प्रति अनुराग और दया के भाव का भी बोध हो। इस स्तर पर इस बात पर विशेष बल दें कि बच्चे कविता को याद कर सकें और हाव-भाव तथा स्वर के उतार-चढ़ाव के साथ सुना सकें। इसके लिए आवश्यक है कि पहले शिक्षक उचित हाव-भाव में पूरी कविता को दो-तीन बार सुना दें जिससे बच्चों को कविता के भाव स्पष्ट हो सकें।

गद्य में कहानी, वर्णन आदि विधाओं के पाठ का शिक्षण करने में भी उचित पृष्ठभूमि का निर्माण करना आवश्यक है। उदाहरण के लिए 'कबूतर और मधुमक्खियाँ' पाठ कहानी विधा में है। इसे पढ़ाने से पहले बच्चों से उनके द्वारा देखे गए पक्षियों और छोटे जीवों के बारे में बातचीत की जा सकती है, जैसे–

— तुमने कौन-कौन से पक्षी देखे हैं?
— शहद बनाने वाली मक्खी को क्या कहते हैं?
— वह कहाँ रहती है?

कई बार कहानी की तैयारी कराते-कराते पाठ के सार व कहानी की मुख्य बात भी बच्चों के सम्मुख रखी जा सकती है जिससे बच्चे उसे समझने के लिए पूर्ण रूप से तैयार हो सकें। इससे बच्चों को पाठ पढ़ने और समझने में सरलता होगी। इस प्रकार पाठ की आवश्यक पृष्ठभूमि का निर्माण करने के पश्चात् बच्चों को पाठ का शीर्षक बताया जा सकता है, जैसे– बच्चो, आज हम 'कबूतर और मधुमक्खियाँ' नाम की कहानी पढ़ेंगे और मालूम करेंगे, इस कहानी में क्या हुआ।

2. नवीन शब्द परिचय

पाठ का प्रारंभिक परिचय देने के बाद बच्चों को उसमें आए नवीन शब्दों से परिचित कराना भी आवश्यक है। इस

सोपान के अंतर्गत यह निश्चित कर लेना आवश्यक है कि बच्चों ने प्रत्येक नए शब्द को संपूर्ण रूप से समझ लिया है। संपूर्ण रूप से हमारा तात्पर्य शब्द के उच्चारण, उसकी आकृति (लेखन) तथा उसके अर्थ से है। नवीन शब्दों से तात्पर्य प्रत्येक ऐसे शब्द से है जिन्हें बच्चे पहली बार लिखित रूप में देख रहे हैं और परिचय का अर्थ है कि बच्चा शब्द की आकृति, ध्वनि एवं अर्थ से भली-भाँति परिचित हो जाए। ऐसे नए शब्दों को अर्थपूर्ण संदर्भ में बोलकर बच्चों को उसके उच्चारण से परिचित कराएँ और फिर उन्हें श्यामपट पर लिखें जिससे वे शब्दों को देख सकें और अपने मन में उनकी बनावट ग्रहण कर सकें। बच्चों को शब्दों, ध्वनियों, आकृतियों और उनका अर्थ पहचानने में सहायता देने के लिए पर्याप्त अभ्यास दिए जाएँ। जैसा कि कहा गया है, शब्द की अवधारणा को अर्थपूर्ण संदर्भ में स्पष्ट किया जाए, शब्द को वाक्य में या किसी सार्थक प्रसंग में इस प्रकार प्रयुक्त किया जाए कि बच्चों को उसका अर्थ मालूम हो जाए। इसी विधि से पाठ के सभी नवीन शब्दों को श्यामपट पर लिख दिया जाए। यहाँ इस बात को स्पष्ट करना ज़रूरी है कि यदि बच्चों को उच्चारण, बनावट तथा अर्थ– किसी भी दृष्टि से शब्द की जानकारी नहीं है तो वह उसके लिए नया शब्द ही माना जाएगा। उदाहरण के लिए '**अच्छा**' शब्द '**च्**' और '**छ**' का संयोग होने के कारण उच्चारण तथा बनावट दोनों दृष्टियों से नवीन है। '**अच्छा**' शब्द सीख लेने के पश्चात **गुच्छा** और **मच्छर** शब्द पढ़ने में बच्चों को कोई कठिनाई नहीं होगी । यदि वह गुच्छा और मच्छर के अर्थ नहीं जानता है तो उसे इन शब्दों की अवधारणा स्पष्ट करनी पड़ेगी। ऐसी अवस्था में गुच्छा और मच्छर शब्दों को अर्थ की दृष्टि से नवीन माना जाएगा। किसी शब्द की पहचान कई विधियों द्वारा कराई जा सकती है, जैसे–

(क) आकृति संकेत द्वारा

(i) शब्द को अन्य शब्दों में पहचानना

(ii) शब्दों को वाक्यों में पहचानना

(ख) चित्र संकेत द्वारा

(ग) ध्वनि संकेत द्वारा

(घ) शब्दों के भागों की समानता द्वारा

शब्द को अच्छी तरह पहचानने के लिए आवश्यक है कि बच्चे उसे बार-बार देखें और बोलें। इसके लिए जितने अधिक अभ्यास दिए जाएँ उतनी ही जल्दी बच्चा उस शब्द को पहचान लेगा और समझ लेगा। पाठ में आए प्रत्येक नए शब्द का परिचय देते समय उसे श्यामपट पर लिखना अत्यंत आवश्यक है। शब्द का अर्थ जानने के लिए समानार्थक, विलोम, लिंग, मूल शब्द आदि का प्रयोग करना वांछनीय है। श्यामपट पर लिखे गए शब्दों को बार-बार बुलवाकर दृढ़ करते रहें।

3. वाचन

इस सोपान के अंतर्गत शिक्षक द्वारा आदर्श-वाचन तथा विद्यार्थियों द्वारा सस्वर वाचन एवं मौन वाचन लिया गया है। शिक्षक को चाहिए कि वह बच्चों के सम्मुख एक बार पाठ का आदर्श वाचन अवश्य करे। इससे बच्चों का उच्चारण और भी स्पष्ट हो जाता है तथा बलाघात और उचित विराम के साथ पढ़ने के लिए प्रोत्साहन भी मिलता है।

सस्वर वाचन भी किसी विशेष उद्देश्य के लिए कराना चाहिए। शिक्षक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि बच्चे यांत्रिक ढंग से किसी पाठ का वाचन न करें। सस्वर वाचन में कहानी, कविता या किसी अन्य पाठ के विभिन्न अंशों को बारी-बारी से उच्च स्वर में पढ़ने के लिए कहा जाता है। कभी एक-एक अनुच्छेद और कभी एक-एक पृष्ठ को पढ़वाया जा सकता है। इस प्रकार के वाचन को विशिष्ट प्रश्न पूछकर उद्देश्यपूर्ण बनाया जा सकता है, इन प्रश्नों का उपयोग निम्नलिखित के लिए किया जा सकता है :

– किसी घटना का क्रम जानने के लिए

– किसी घटना का विस्तृत विवरण जानने के लिए

— परिणाम ज्ञात करने के लिए
— अनुमान लगाने के लिए
— प्रत्यास्मरण के लिए
— तुलना के लिए
— कारण जानने के लिए, आदि ।

इस बात का ध्यान रखें कि कक्षा के प्रत्येक बच्चे को कहानी का कोई न कोई अंश सस्वर वाचन के रूप में पढ़ने का अवसर अवश्य मिले। कक्षा तीन से ही बच्चों को मौन वाचन का अभ्यास शुरू करा देना चाहिए।

कई बार प्रत्येक पृष्ठ पर दिए गए चित्रों की सहायता से विविध प्रश्नों द्वारा कहानी के वाक्यों को निकलवाया जा सकता है। शिक्षक बच्चों से ऐसे प्रश्न करें कि उनके उत्तर खोजने के लिए वे पाठ की पंक्तियों या अनुच्छेदों को मन ही मन पढ़ें। यदि बच्चे का उत्तर सही है तो स्पष्ट है कि उसने इन पंक्तियों का मंतव्य भली-भाँति ज्ञात कर लिया है और यदि उसका उत्तर सही नहीं है तो उसे फिर निर्दिष्ट पंक्तियों को पढ़कर सही उत्तर खोजने के लिए कहा जा सकता है। यह एक महत्त्वपूर्ण सोपान है क्योंकि बच्चा इस समय पहली बार अर्थपूर्ण इकाइयों के पठन से परिचित होता है और इस प्रकार के पठन को निश्चित तरीकों से समझने और तत्संबंधी ज्ञान विकसित करने का अभ्यास करता है।

4. भाषा-संबंधी कुशलताओं का विकास

पाठ की विषय-वस्तु को समझने के साथ-साथ यह भी अपेक्षित है कि बच्चे में भाषा-संबंधी योग्यताओं का निरंतर विकास होता रहे। भाषा एक योग्यात्मक विषय है अतः भाषा सिखाने के लिए योग्यताओं को व्यवस्थित ढंग से विकसित करना आवश्यक है।

सामान्य रूप से 'पढ़ना' के अंतर्गत अर्थग्रहण और शब्दबोध संबंधी कुशलताएँ होनी हैं। प्रत्येक पाठ के अंत में (पाठ्यपुस्तक में) इन कुशलताओं के विकास के लिए अभ्यास दिए गए हैं परंतु केवल ये ही अभ्यास पर्याप्त नहीं हैं। अतः प्रत्येक पुस्तक की अभ्यास-पुस्तिका में इन कुशलताओं से संबंधित कुछ अतिरिक्त अभ्यास दिए गए हैं। ये अभ्यास इस प्रकार तैयार किए गए हैं कि इनके द्वारा विभिन्न भाषायी योग्यताओं का विकास हो सके। अर्थग्रहण की कुशलताओं में प्राथमिक कक्षाओं के लिए मुख्य विचार जानने, विस्तृत विवरण ज्ञात करने, कारण जानने, परिणाम ज्ञात करने, निष्कर्ष निकालने, घटनाक्रम पहचानने, प्रत्यास्मरण करने, अनुमान लगाने, अप्रासंगिक बात का पता लगाने, सामान्यीकरण, तुलना करना तथा वर्गीकरण आदि कुशलताएँ आती हैं। शब्द संबंधी कुशलताओं में शब्द को पहचानना, शब्द के अर्थ जानना, शब्द-निर्माण, शब्द-रूपांतर, प्रत्यय-निर्माण तथा मुहावरों के अर्थ आदि आते हैं। शिक्षक इस प्रकार के अभ्यास स्वयं भी बना सकते हैं अथवा अभ्यास-पुस्तिका में दिए गए अभ्यासों द्वारा भी इन कुशलताओं का विकास कर सकते हैं। भाषा की सभी योग्यताएँ— सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना तथा चिंतन करने का विकास साथ-साथ होना ज़रूरी है । अभ्यास करवाते समय इस बात को ध्यान में रखा जाए।

5. अनुभव-विस्तार के क्रियाकलाप

भाषा-ज्ञान एकांगी ही न रहे, इसके लिए यह आवश्यक है कि भाषा की योग्यताओं के साथ-साथ अन्य विषयों के साथ भी उसका संबंध स्थापित किया जाए। भाषा-ज्ञान कराते समय यदि पर्यावरण अध्ययन, गणित आदि विषयों के संबंध में कोई बात आए तो उसका स्पष्टीकरण आवश्यक है। उदाहरण के लिए पक्षी के बारे में दी गई किसी कहानी के साथ विज्ञान के संदर्भ में चिड़ियों, उनकी आदतों, उनके भोजन, उनके रहने और अन्य संबंधित बातों के बारे में सामान्य रूप से चर्चा करने का अवसर मिल सकता है।

कहानी में भोजन के संबंध में आने वाले किसी प्रसंग की स्वास्थ्य, भोजन के पोषक तत्त्वों आदि के साथ चर्चा

की जा सकती है। हमें यह स्मरण रखना चाहिए कि भाषा का पाठ, पाठ्यक्रम से अलग कोई विषय नहीं है बल्कि उसमें अन्य विषयों के साथ जुड़ने की अधिक संभावना होती है। इससे भाषा-ज्ञान समृद्ध होता है।

इसके अतिरिक्त कविता, कहानी, अभिनय एवं संगीत द्वारा भी पाठ में वर्णित विषय-वस्तु को स्पष्ट किया जा सकता है। बच्चों के रचनात्मक तथा सृजनात्मक विकास के लिए उनसे कला संबंधी अथवा लेखन संबंधी क्रियाकलाप करवाए जा सकते हैं, जैसे– चित्र, चार्ट, कार्ड, एलबम बनाना, पत्र-पत्रिकाओं से सामग्री एकत्र करना, खिलौने, मुखौटे बनाना, मॉडल बनाना आदि। समय-समय पर विद्यालय में बाल-सभा का आयोजन करना तथा दर्शनीय स्थानों की सैर को ले जाना बच्चों के ज्ञान एवं अनुभव को विस्तृत बनाने में बहुत सहायक हो सकता है। भाषा के किसी पाठ द्वारा केवल पढ़ना सीखना-सिखाना ही अंतिम लक्ष्य नहीं है अपितु बच्चों में अपेक्षित मानवीय गुणों और आदतों का निर्माण करना भी है। इसके अतिरिक्त और महत्त्वपूर्ण बात यह भी है कि बच्चों की कठिनाइयों और कमियों का निदान कर उनका आवश्यक उपचार किया जाए, तभी निर्दिष्ट लक्ष्य की संप्राप्ति होगी।

किसी भी आदर्श या अच्छी पाठ-योजना के कई पहलू होते हैं। हमें किसी भी पाठ को व्यवस्थित ढंग से क्रमिक रूप में विकसित करना चाहिए ताकि वह उद्देश्यपूर्ण और उपयोगी हो सके।

गांधी जी का जन्तर

तुम्हें एक जन्तर देता हूं। जब भी तुम्हें सन्देह हो या तुम्हारा अहम् तुम पर हावी होने लगे, तो यह कसौटी आजमाओ :

जो सबसे गरीब और कमजोर आदमी तुमने देखा हो, उसकी शकल याद करो और अपने दिल से पूछो कि जो कदम उठाने का तुम विचार कर रहे हो, वह उस आदमी के लिए कितना उपयोगी होगा। क्या उससे उसे कुछ लाभ पहुंचेगा ? क्या उससे वह अपने ही जीवन और भाग्य पर कुछ काबू रख सकेगा ? यानि क्या उससे उन करोड़ों लोगों को स्वराज्य मिल सकेगा जिनके पेट भूखे हैं और आत्मा अतृप्त है ?

तब तुम देखोगे कि तुम्हारा सन्देह मिट रहा है और अहम् समाप्त होता जा रहा है।

मो॰ क॰ गांधी

विषय सूची

भारत का संविधान

भाग 4अ

नागरिकों के मूल कर्त्तव्य

अनुच्छेद 51अ

मूल कर्त्तव्य- भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्त्तव्य होगा कि वह -

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे,

(ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे,

(ग) भारत की संप्रभुता, एकता और अखंडता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण बनाए रखे,

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे,

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभावों से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो महिलाओं के सम्मान के विरुद्ध हो,

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्त्व समझे और उसका परिरक्षण करे,

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणिमात्र के प्रति दयाभाव रखे,

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे,

(झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे, और

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत् प्रयास करे, जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊंचाइयों को छू सके।

1

वीर तुम बढ़े चलो
धीर तुम बढ़े चलो।

हाथ में ध्वजा रहे
बाल-दल सजा रहे
ध्वज कभी झुके नहीं
दल कभी रुके नहीं
वीर तुम बढ़े चलो
धीर तुम बढ़े चलो।

सामने पहाड़ हो
सिंह की दहाड़ हो
तुम निडर हटो नहीं
तुम निडर डटो वहीं
वीर तुम बढ़े चलो
धीर तुम बढ़े चलो।

अध्यापन संकेत : यह कविता एक प्रयाण गीत है। बच्चे इसे याद करें और कदम-से-कदम मिलाकर चलते हुए जोशपूर्ण स्वर में गाएँ। आवश्यकतानुसार कुछ पंक्तियों का भाव स्पष्ट करें। बच्चों से ही झंडे बनवाएँ जिन्हें हाथ में ले वे प्रयाण गीत का अभ्यास करें। कोई और झंडा गीत सुनाएँ। बातचीत द्वारा इन बातों पर ध्यान दिलाएँ– तिरंगा झंडा हमारे देश की शान है। इसे सदा ऊँचा रखना चाहिए। इसका सम्मान करना चाहिए। हमें बाधाओं की चिंता किए बिना अपने मार्ग पर आगे बढ़ते रहना चाहिए।
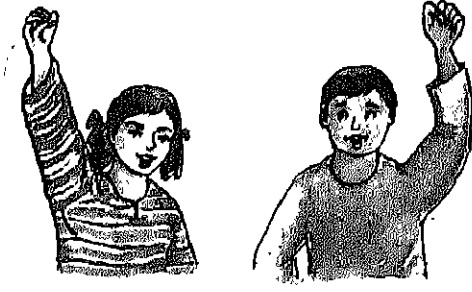
मेघ गरजते रहें
मेघ बरसते रहें
बिजलियाँ कड़क उठें
वीर तुम बढ़े चलो
धीर तुम बढ़े चलो।

प्रात हो कि रात हो
संग हो न साथ हो
सूर्य-से बढ़े चलो
चंद्र-से बढ़े चलो
वीर तुम बढ़े चलो
धीर तुम बढ़े चलो।

— द्वारिकाप्रसाद माहेश्वरी

अभ्यास

1. इस कविता को याद करो। फिर कदम-से-कदम मिलाते हुए इस गीत को गाओ।

2

कबूतर और मधुमक्खियाँ

मधुमक्खियाँ	**प्रयत्न**	**छटपटाना**	**दया**
उपाय	**प्रतीक्षा**	**विश्वास**	**परेशान**
झपटीं	**रक्षा**	**सनसनाहट**	

नदी के किनारे एक पेड़ था। पेड़ पर मधुमक्खियों का छत्ता था। छत्ते में बहुत-सी मधुमक्खियाँ रहती थीं।

एक दिन की बात है। मधुमक्खियाँ छत्ते से बाहर निकलीं। निकलते ही उनमें से एक बड़ी मधुमक्खी नदी में गिर पड़ी। उसने पानी से निकलने का बहुत प्रयत्न किया, पर वह निकल न सकी। वह नदी की धारा में बहने लगी। नदी के किनारे एक कबूतर पानी पी रहा था। उसने मधुमक्खी को पानी में छटपटाते हुए देखा। उसे मधुमक्खी पर बहुत दया आई। वह उसे बचाने का उपाय सोचने लगा। अचानक उसे एक उपाय सूझा। वह तेज़ी से उड़कर पेड़ के नीचे पहुँचा। पेड़ के नीचे सूखे पत्ते पड़े थे। कबूतर ने एक पत्ता अपनी
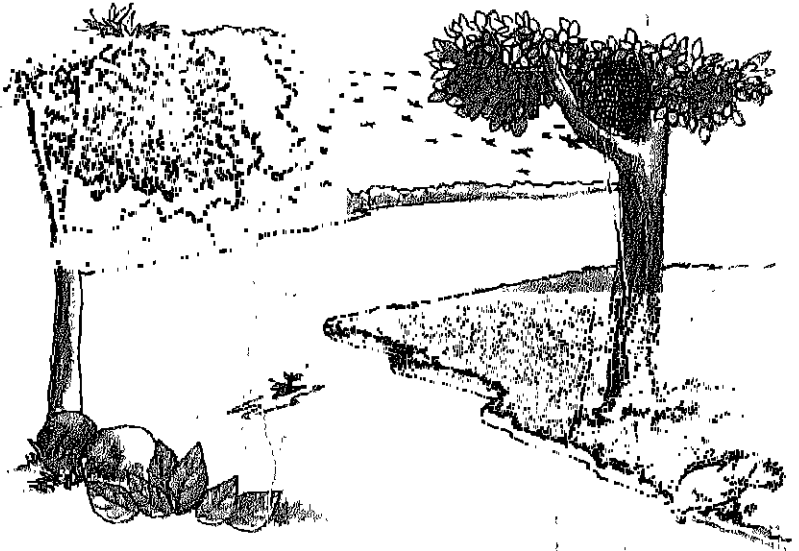
अध्यापन संकेत : नए और कठिन शब्दों को श्यामपट पर लिखकर उनका शुद्ध उच्चारण करें तथा बच्चों से करवाएँ। **प्रयत्न, प्रतीक्षा, प्रसन्नता** में (प्+र) के संयुक्त लिखित रूप **'प्र' की ओर विशेष ध्यान** दिलाएँ। एक ही शब्द के दो बार प्रयोग वाले जोड़ों — **किनारे-किनारे, धीरे-धीरे, घूम-घूमकर** को स्पष्ट करें कि **एक शब्द को दो बार कहने** से उस बात पर अधिक ज़ोर पड़ता है जैसे– धीरे-धीरे का अर्थ है बहुत धीरे। **मुसीबत में फँसे लोगों की मदद करनी चाहिए, भलाई के काम का परिणाम अच्छा होता है**– मूल्यों को उभारें। कक्षा में कहानी का अभिनय कराएँ। **बच्चों को समूहों में बाँटकर** कबूतर, शिकारी और मधुमक्खियों के बारे में चर्चा करने तथा उससे प्राप्त जानकारी को पूरी कक्षा को **बताने का अवसर** दें।

चोंच में दबाया और नदी के किनारे-किनारे उड़ने लगा। कुछ ही दूर उसे मधुमक्खी दिखाई दी। उसने पत्ता मधुमक्खी के बिलकुल आगे डाल दिया। मधुमक्खी पत्ते पर चढ़ गई और डूबने से बच गई।

कबूतर कुछ देर तक पत्ते के साथ-साथ उड़ता रहा। उसने देखा कि मधुमक्खी तो बिलकुल हिलती-डुलती नहीं। वह सोचने लगा— क्यों न मैं यह पत्ता पेड़ के नीचे ले जाकर रख दूँ। उसने पानी में अपनी चोंच बढ़ाई और पत्ता चोंच में दबाकर पेड़ के नीचे ले आया। कुछ देर तक वह इस बात की प्रतीक्षा करता रहा कि मधुमक्खी हिलती-डुलती है या नहीं। मधुमक्खी कुछ हिलने लगी। वह धीरे-धीरे पत्ते पर चलने भी लगी। उसने कबूतर की ओर देखा। कबूतर को विश्वास हो गया कि अब मधुमक्खी बच जाएगी। मधुमक्खी धीरे-धीरे उड़कर अपने छत्ते में चली गई।
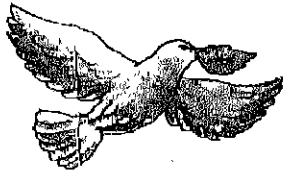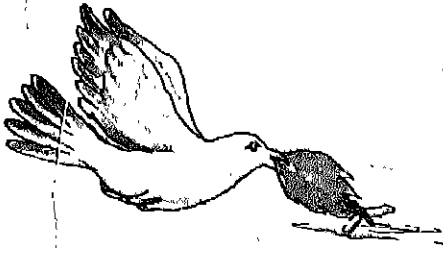
एक दिन एक शिकारी उधर आया। वह नदी के किनारे घूम-घूमकर चिड़ियों का शिकार करने लगा। उसके भय से सभी पक्षी इधर-उधर उड़ने लगे। जिस कबूतर ने मधुमक्खी को बचाया था, वह भी उड़ता हुआ उसी पेड़ के पास आ गया। डर के मारे वह पेड़ के पत्तों में छिप गया। मधुमक्खी ने उस कबूतर को देखा तो तुरंत अपनी सहेलियों से कहा— हमें किसी भी तरह इस कबूतर की रक्षा करनी चाहिए। उसकी बात सुनते ही कई मधुमक्खियाँ छत्ते से निकल पड़ीं।

उधर शिकारी ने कबूतर को देख लिया था। वह उसकी ओर निशाना साध ही रहा था कि मधुमक्खियाँ तेज़ी से उसकी ओर झपटीं। शिकारी घबरा गया और उसका निशाना चूक गया। कबूतर ने तीर की सनसनाहट सुनी। उसने डर के मारे अपनी आँखें बंद कर लीं। उसे कुछ मधुमक्खियाँ पेड़ की ओर आती दिखाई दीं।

कबूतर सब कुछ समझ गया। उसने मधुमक्खियों की ओर देखा और मन-ही-मन उनको धन्यवाद दिया।

1. प्रश्नों के उत्तर दो

(क) कबूतर ने मधुमक्खी की मदद कैसे की?

(ख) शिकारी नदी के किनारे क्यों आया था?

(ग) कबूतर पेड़ के पत्तों में क्यों छिप गया?

(घ) मधुमक्खियों ने कबूतर की सहायता कैसे की?

(ङ) यदि मधुमक्खियाँ शिकारी की ओर न झपटतीं तो क्या होता?

2. बोलो और लिखो

मक्खन मक्खी
रत्न प्रयत्न
कन्या धन्यवाद
प्रेम प्रतीक्षा

3. पढ़ो, समझो और लिखो

आँख आँखें
बात ....
रात ....
पुस्तक ....

4. सही शब्द चुनकर वाक्य पूरे करो

शिकारी प्रयत्न चोंच मधुमक्खियों प्रतीक्षा डर

(क) पेड़ पर .... का छत्ता था।
(ख) मधुमक्खी ने पानी से निकलने का .... किया।
(ग) कबूतर ने एक पत्ता अपनी .... में दबाया।
(घ) .... के मारे कबूतर ने अपनी आँखें बंद कर लीं।
(ङ) .... ने कबूतर को देख लिया था।
(च) कबूतर मधुमक्खी के हिलने-डुलने की .... करता रहा।

5. करो

(क) कबूतर, मधुमक्खी और शिकारी में से आपको कौन अच्छा लगा और क्यों? चर्चा करो।
(ख) शहद के बारे में जानकारी प्राप्त करो।

3

स्वच्छता

स्वच्छता	कूड़ेदान	इकट्‌ठा	भिनकना
नगरपालिका	दोष	गंदगी	प्रारंभ
मोहल्ला	उत्साह	सप्ताह	व्यक्ति

मोहन इस शहर में नया-नया आया था। मोहन पढ़ने में बहुत होशियार था। वह कक्षा में हमेशा प्रथम आता। खेलकूद में वह सबसे आगे रहता। जल्दी ही कक्षा में उसके कई मित्र बन गए। अजय उसका सबसे अच्छा मित्र था।

एक दिन अजय ने मोहन को अपने जन्मदिन पर बुलाया। मोहन ने उसे उपहार में देने के लिए कहानियों की एक पुस्तक खरीदी। उसे रंगीन कागज़ में लपेटा और अजय के घर चल पड़ा। जैसे ही मोहन अजय की गली में पहुँचा, उसके ऊपर केले का एक छिलका आ गिरा।

अध्यापन संकेत : इकट्‌ठा, मट्‌ठा, गड्‌ढा आदि शब्द श्यामपट पर लिखकर ङ, छ, ट, ठ, ड, ढ, द, ह के अ रहित रूप का अन्य व्यंजन के साथ संयुक्त होने पर हलंत (्) लगाकर लिखने का अभ्यास करवाएँ। वचन के अनुसार शब्द के रूप-परिवर्तन का बोध उदाहरण देकर कराइए, जैसे– नाली, नालियाँ, नालियों में आदि । बातचीत के द्वारा उभारिए : **गंदगी से बीमारियाँ फैलती हैं। स्वच्छ रहने के साथ-साथ हमें घर-पड़ोस भी स्वच्छ रखना चाहिए।** कक्षा को दो समूहों में बाँटकर स्वच्छता से होने वाले लाभों और गंदगी से होने वाली हानियों पर चर्चा करवाएँ। उन्हें विद्यालय में सफ़ाई सप्ताह मनाने तथा सार्वजनिक स्थानों की सफ़ाई में भाग लेने का अवसर दीजिए।

"छि, छि! कितनी बुरी आदत है सड़क पर छिलका फेंकना", मोहन ने मन में सोचा। उसने छिलका उठाया और इधर-उधर देखा। कुछ दूरी पर उसे एक कूड़ेदान दिखाई दिया। उसने छिलका उसमें डाल दिया। बहुत-सा कूड़ा कूड़ेदान के बाहर फैला हुआ था। वहाँ मक्खियाँ भिनक रही थीं और चारों ओर गंदगी फैली हुई थी।

कुछ और आगे बढ़ा तो मोहन को बड़ी बदबू आई। उसने देखा — नालियों में कूड़े के कारण पानी रुका हुआ है। इसी पानी से बदबू आ रही है।

मोहन नाक पर रूमाल रखे अजय के घर पहुँचा। वहाँ अजय के और भी कई मित्र आए हुए थे। अजय ने मोहन को अपनी माँ और पिता जी से मिलाया। अजय की दादी जी बीमार थीं। मोहन उनसे भी मिला। मेज़ पर खाने की चीज़ें रखी थीं, जिन पर बार-बार मक्खियाँ आ जाती थीं। मोहन ने अजय से कहा, "अजय, तुम्हारे मोहल्ले में इतनी गंदगी क्यों है? क्या नगरपालिका इसे साफ़ नहीं कराती?"

अजय की माता जी ने कहा, "बेटा, नगरपालिका की गाड़ी आया करती है। जगह-जगह कूड़ेदान भी हैं, पर कुछ लोग उनमें कूड़ा नहीं डालते। वे कूड़ा सड़क पर ही फेंक देते हैं इसीलिए सफ़ाई नहीं रहती।"

दूसरे दिन पाठशाला में मोहन ने अपने अध्यापक को यह बात बताई। अध्यापक ने कहा, "तुम ठीक कहते हो, मोहन। गंदगी बहुत से रोगों की जड़ है। नगरपालिका का काम नगर को स्वच्छ रखना तो है,

पर हमें भी नगरपालिका की सहायता करनी चाहिए। चलो, एक दिन हम सब अजय के मोहल्ले में चलें और स्वयं सफ़ाई का काम प्रारंभ करें।"

रविवार के दिन सभी अजय के मोहल्ले में गए। सबके हाथ में एक-एक टोकरी और झाड़ू थी। सड़क पर झाड़ू लगाकर उन्होंने कूड़ा इकट्ठा किया। नालियों की सफ़ाई की और पानी बहने का रास्ता बनाया। उनमें मक्खी-मच्छर मारने वाली दवा डाली। कूड़ेदान पर ढक्कन रखा। मोहल्ले में रहने वाले सभी लोग बाहर निकल आए और उन्हें देखने लगे। बच्चों में बहुत उत्साह था। देखते ही देखते पूरा मोहल्ला स्वच्छ हो गया।
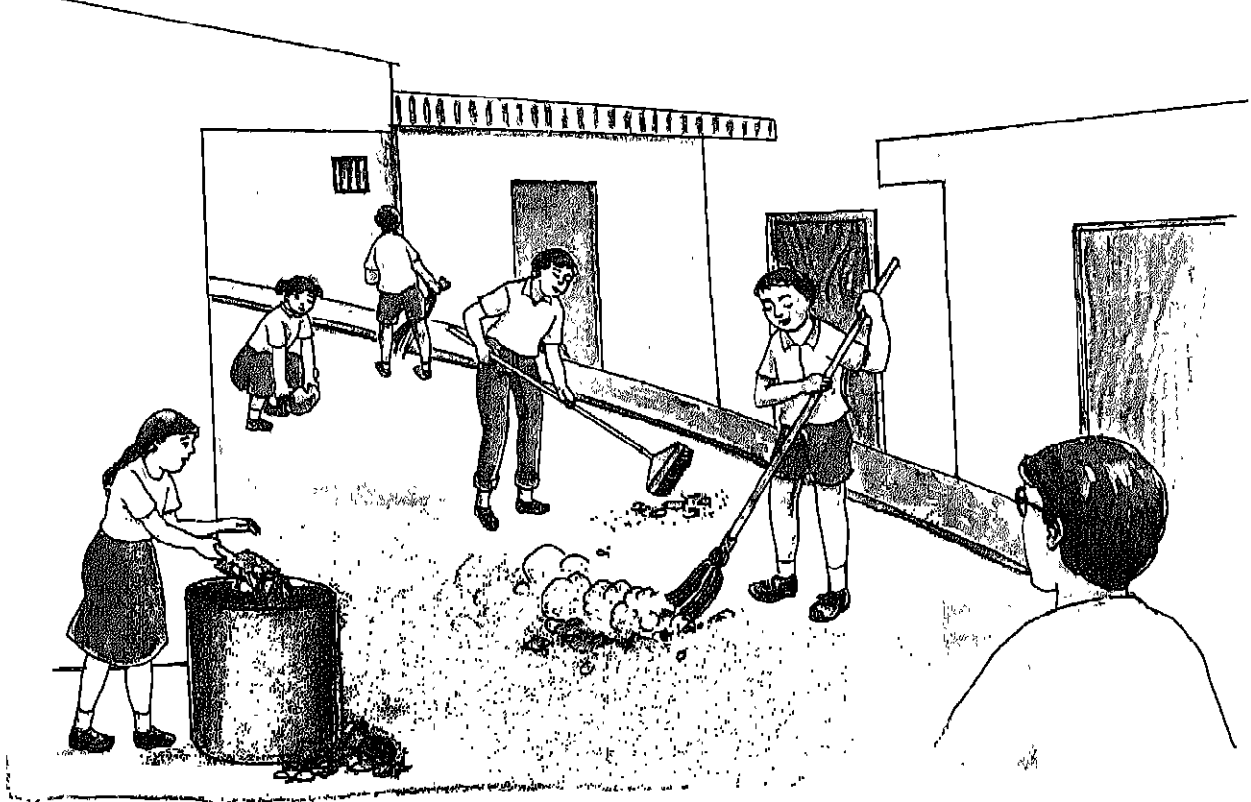
अध्यापक ने लोगों को समझाया कि वे घर का कूड़ा कूड़ेदान में ही डालें। वे अपने घर के आसपास सफ़ाई रखें क्योंकि गंदगी से रोग फैलते हैं।

उन्होंने कहा, "मेरी पाठशाला के बालक सप्ताह में एक बार यहाँ आया करेंगे। वे आपके मोहल्ले को साफ़ करेंगे। आप भी इस काम में इनकी सहायता करें।"

एक व्यक्ति ने आगे बढ़कर कहा, "नहीं, नहीं। इन बच्चों के आने की कोई आवश्यकता नहीं। हम लोग स्वयं ही अपने मोहल्ले को स्वच्छ रखेंगे। अब आप इसे हमेशा साफ़-सुथरा पाएँगे।"

1. **प्रश्नों के उत्तर दो**

(क) अजय के मोहल्ले में मोहन ने क्या देखा?
(ख) मोहल्ले में गंदगी क्यों फैली हुई थी?
(ग) अध्यापक बच्चों को अजय के मोहल्ले में क्यों ले गए?
(घ) हम नगरपालिका की मदद कैसे कर सकते हैं?
(ङ) हमें अपना घर और मोहल्ला क्यों साफ़ रखना चाहिए?

2. **वाक्य पूरे करो**

स्वच्छ पानी मक्खी-मच्छर कूड़ेदान स्वच्छता

(क) मोहन को .... का बहुत ध्यान रहता था।
(ख) नालियों में कूड़े के कारण .... रुका हुआ था।
(ग) नगरपालिका का काम शहर को .... रखना है।
(घ) कूड़ा .... में डालना चाहिए।
(ङ) नालियों में .... मारने वाली दवा डाली।

3. **बोलो और लिखो**

इकट्ठा गट्ठर भट्ठी
प्रथम प्रतिदिन प्रारंभ
ढक्कन पक्का चक्की
सप्ताह गुप्तचर

4. **विपरीत अर्थवाले शब्द लिखो**

गंदगी	×	सफाई	आरंभ	×	अंत
बदबू	×	....	बंद	×	....
मुश्किल	×	....	पास	×	....

5. **लिखो**

मोहल्ला आरंभ स्वच्छता नगरपालिका उत्साह
स्वयं मित्र प्रतिदिन सप्ताह गंदगी

4

कोयल

देखो कोयल काली है पर
मीठी है इसकी बोली
इसने ही तो कूक-कूक कर
आमों में मिसरी घोली

कोयल! कोयल! सच बतलाओ
क्या संदेशा लाई हो
बहुत दिनों के बाद आज फिर
इस डाली पर आई हो।

क्या गाती हो, किसे बुलाती
बतला दो कोयल रानी
प्यासी धरती देख माँगती
हो क्या मेघों से पानी?

कोयल! यह मिठास क्या तुमने
अपनी माँ से पाई है
माँ ने ही क्या तुमको मीठी
बोली यह सिखलाई है?
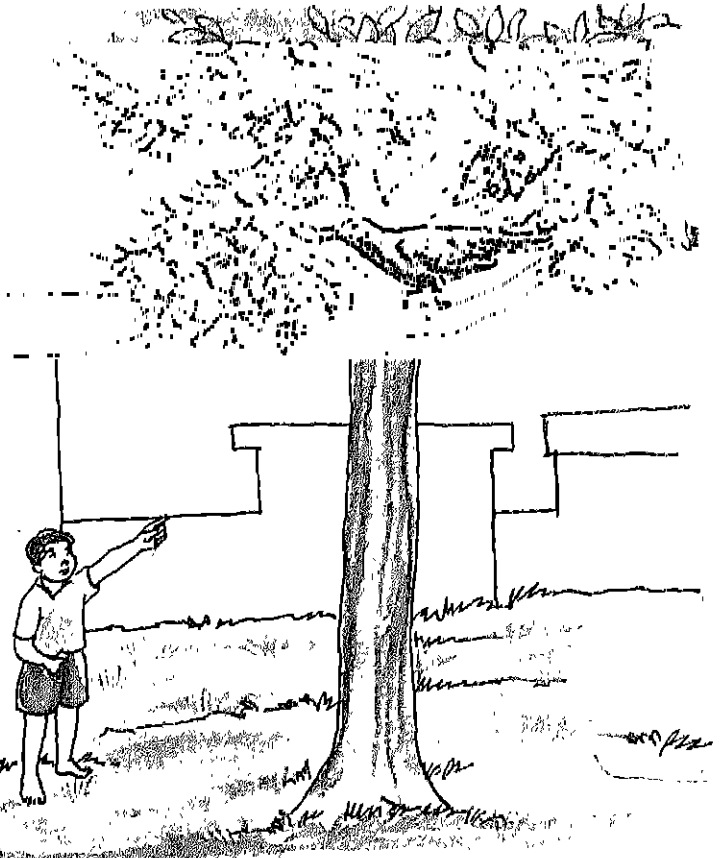
अध्यापन संकेत : लय, तान और स्वर के उतार-चढ़ाव के साथ कविता को स्वयं पढ़कर सुनाएँ। बच्चे सुनें और दोहराएँ। कविता की इन पंक्तियों की ओर उनका ध्यान दिलाएँ और चर्चा दुवारा इनका भाव स्पष्ट करें : **आमों में मिसरी घोली – अपनी मीठी आवाज़ से आमों को मिश्री जैसा मीठा बना दिया है।** इसी प्रकार स्पष्ट करें – **प्यासी धरती देख माँगती हो क्या मेघों से पानी, सबसे मीठे-मीठे बोलो।** ध्यान दिलाएँ मीठी बोली सबको प्यारी लगती है। हमें मीठे बोल बोलने चाहिए। कोयल या किसी अन्य पक्षी के बारे में कोई और कविता सुनाएँ।

डाल-डाल पर उड़ना गाना
जिसने तुम्हें सिखाया है
सबसे मीठे-मीठे बोलो
यह भी तुम्हें बताया है।

बहुत भली हो तुमने माँ की
बात सदा ही है मानी
इसीलिए तो तुम कहलाती
हो सब चिड़ियों की रानी।

– सुभद्राकुमारी चौहान

1. प्रश्नों के उत्तर दो

(क) कोयल की आवाज़ कैसी होती है?
(ख) कोयल ने अपनी माँ से क्या-क्या सीखा?
(ग) कोयल को चिड़ियों की रानी क्यों कहते हैं?

2. पढ़ो, समझो और लिखो

मिसरी सा मीठा
बरफ़ सा ....
दूध सा सफ़ेद
कोयले सा ....
.... सा लंबा
.... सा हलका

3. करो

(क) इस कविता को याद करो। कोयल से संबंधित कोई अन्य कविता याद करके कक्षा में सुनाओ।
(ख) कोयल का चित्र बनाओ।

5

ईश्वरचंद्र विद्यासागर

ईश्वरचंद्र	विद्यासागर	स्टेशन	लालटेन
विशेष	संकेत	व्यक्ति	चरणों

एक छोटा-सा स्टेशन था। कोई-कोई गाड़ी ही वहाँ रुकती थी। दूर से सीटी की आवाज़ सुनाई दे रही थी। स्टेशन मास्टर हाथ में लालटेन लिए कमरे से बाहर आए। तभी छुकछुक-छुकछुक करती गाड़ी स्टेशन पर आ रुकी।

मनमोहन हाथ में सूटकेस लिए डिब्बे के दरवाज़े पर खड़ा था। उसने आवाज़ लगाई, "कुली! कुली!"

इधर-उधर देखा पर वहाँ कोई कुली न था। छोटा-सा स्टेशन होने के कारण गाड़ी यहाँ दो मिनट रुकती थी। तभी गार्ड ने हरी झंडी दिखाई। वह जल्दी से नीचे उतरा। इतने में गाड़ी चल पड़ी।

उसने फिर आवाज़ दी, "कुली ! कुली।"

स्टेशन मास्टर लालटेन लिए उसी की तरफ़ आ रहे थे। उन्होंने आते ही कहा, "साहब ! यहाँ कोई कुली नहीं मिलेगा।"

मनमोहन ने परेशान होकर कहा, "मेरा सामान कौन उठाएगा?" तभी एक व्यक्ति उनकी तरफ़ आया और बोला, "मैं ले चलता हूँ आपका सामान।"

"ठीक है ! ठीक है! जल्दी से उठाओ। मुझे पहले ही बहुत देर हो गई है।"

अध्यापन संकेत : इस पाठ में से 'ज़' ध्वनि वाले कुछ शब्दों का प्रयोग है, जैसे– **आवाज़, दरवाज़ा** आदि। अतः **सजा-सज़ा, बाजा-दरवाज़ा,** जैसे शब्द श्यामपट पर लिखकर उनका उच्चारण कराएँ तथा अंतर स्पष्ट करें। 'गंदगी', 'चंद्र' जैसे शब्दों में न् का प्रयोग होता रहा है किंतु अब वर्ग के पंचम वर्ण (ङ्, ञ्, ण्, न्, म्,) के स्थान पर अनुस्वार (ं) का प्रयोग किया जाता है। जैसे– गंदगी, चंद्र आदि। **संकेत, संकोच, अहंकार, यहाँ, वहाँ, पहुँच,** जैसे शब्दों का शुद्ध उच्चारण करवाकर, अनुस्वार तथा अनुनासिक (ँ,चंद्रबिंदु वाली) ध्वनियों का अंतर स्पष्ट करें। संयुक्त व्यंजन वाले शब्दों के शुद्ध उच्चारण तथा लेखन का अभ्यास कराएँ। उभारें: हमें अपना कोई भी काम करने में संकोच नहीं करना चाहिए। नम्र होना और दूसरों की सहायता करना अच्छी बात है। अपना काम स्वयं करो से संबंधित कोई अन्य घटना, संस्मरण या कहानी सुनाएँ।
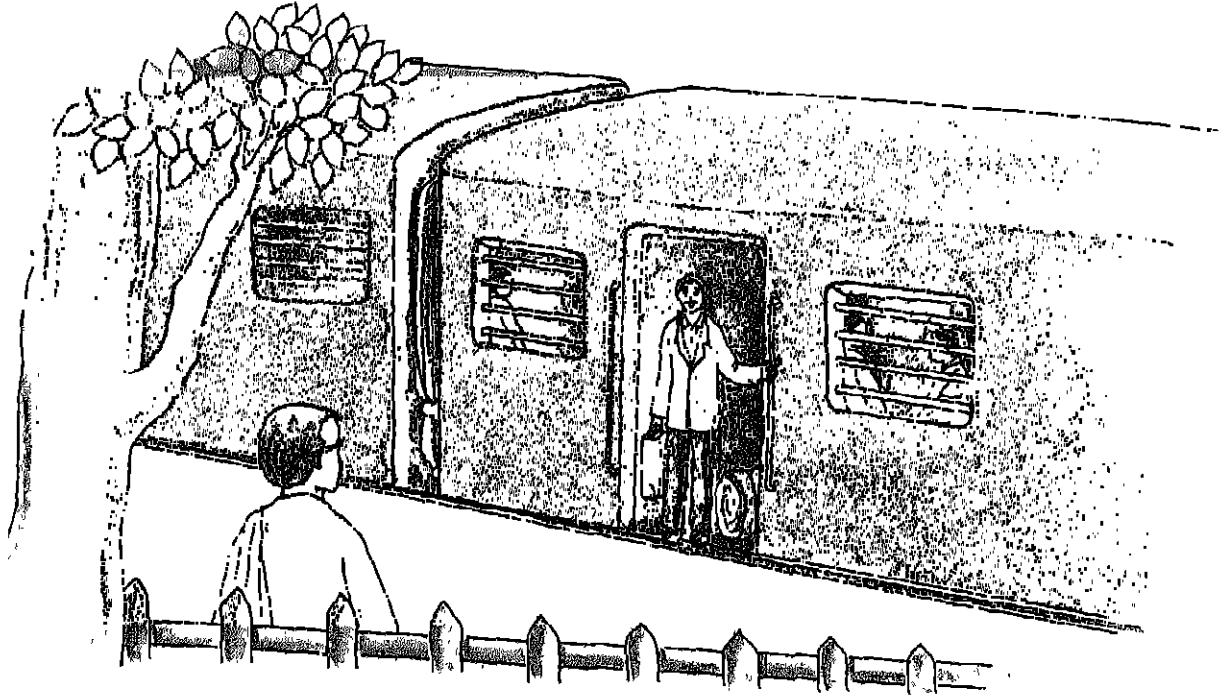
स्टेशन मास्टर ने कुछ कहने को मुँह खोला ही था कि सामान उठाते उस व्यक्ति ने कुछ संकेत किया। स्टेशन मास्टर चुप रह गया।

सूटकेस सिर पर रखे वह व्यक्ति जल्दी-जल्दी स्टेशन से बाहर निकला। उसने पूछा, "क्या आप यहाँ पहली बार आए हैं?"

"हाँ। मैं यहाँ एक विशेष व्यक्ति से मिलने आया हूँ।" मनमोहन ने उत्तर दिया।

"किससे?" सूटकेस सीधा करते हुए उसने फिर पूछा।

"ईश्वरचंद्र विद्यासागर से। क्या तुम उन्हें जानते हो?"

"हाँ, मैं जानता हूँ। पास ही रहते हैं। मैं आपको वहीं ले चलता हूँ," उसने उत्तर दिया।

समीप ही एक घर में पहुँचकर उसने सूटकेस एक ओर रख दिया। कुरसी सामने रखी और कहा, "बैठिए। कहिए क्या काम है, मैं ही ईश्वरचंद्र विद्यासागर हूँ।"

जब मनमोहन ने यह सुना तो वह ईश्वरचंद्र विद्यासागर के चरणों में गिर पड़ा।

1. प्रश्नों के उत्तर दो

(क) गाड़ी स्टेशन से जल्दी ही क्यों चल पड़ी?
(ख) मनमोहन "कुली ! कुली!" क्यों चिल्ला रहा था?
(ग) उस व्यक्ति ने स्टेशन मास्टर को चुप रहने का संकेत क्यों किया?
(घ) मनमोहन का सामान उठाने वाला व्यक्ति कौन था?
(ङ) मनमोहन ईश्वरचंद्र के चरणों में क्यों गिर पड़ा?

2. पढ़ो, समझो और लिखो

(क) ईश्वर श्वास विश्व विश्वास
विद्या विद्यालय विद्यासागर
व्यक्ति व्यवहार व्यायाम
वक्त रक्त शक्ति

3. समान अर्थवाले शब्द लिखो

रात	=	रात्रि	समीप	=	....
विशेष	=	....	शीघ्र	=	....
जवाब	=	....	संकेत	=	....

4. इन शब्दों के वाक्य बनाओ

समीप लालटेन परेशान विशेष

5. श्रुतलेख

ईश्वर स्टेशन विद्यासागर व्यक्ति मास्टर
लालटेन संकेत परेशान

6

तूफ़ान की सूचना

तूफ़ान	सूचना	गोविंदम	शंख	भंडार
समुद्र	इडली-डोसा	वृद्ध	स्त्रियाँ	चौकन्ना
भोंपू	डोंगी	सराहना	फड़फड़ा	

गोविंदम आज बहुत प्रसन्न है। आज उसके पास अपने शंखों से खेलने का काफ़ी समय है। वह अपना भंडार खोलकर एक-एक शंख को देख रहा है। कोई शंख बड़ा है तो कोई छोटा, कोई रंगीन है तो कोई सफ़ेद। उसके पास कई तरह की सीपियों का भी भंडार है।

गोविंदम और उसकी बहिन मीनाक्षी को शंख और सीपियाँ इकट्ठा करने का बहुत शौक है। वे अपना खाली समय समुद्र के तट पर ही बिताते हैं। समुद्र तट से वे सीपियाँ तथा शंख चुनकर लाते हैं। गोविंदम के पास सभी मित्रों से अधिक सीपियाँ और शंख हैं। मीनाक्षी ने सीपियों और शंखों की कई मालाएँ भी बनाई हैं।

अध्यापन संकेत : काफ़ी, सफ़ेद, तूफ़ान शब्दों में '**फ़**' का प्रयोग है। अतः फल, फाटक, फली, सफल आदि शब्दों के साथ उनका उच्चारण करते हुए दोनों के उच्चारण में अंतर स्पष्ट करें। 'स्त्रियाँ' का उच्चारण कर बच्चों से बुलवाएँ। स्त्री और इस्तरी का उच्चारण-भेद समझाएँ। स्पष्ट करें कि पंचम वर्ण की आवृत्ति होने पर अनुस्वार का प्रयोग नहीं होता, जैसे– चौकन्ना, प्रसन्न, अम्मा, सम्मान, सम्मेलन आदि। ध्यान दिलाएँ : संकट का सामना समझदारी से करना चाहिए। सतर्कता और फुरती से काम करके संकट से बचा जा सकता है।

गोविंदम के पिता नाव लेकर समुद्र में मछली पकड़ने गए हैं। वे दो दिन बाद लौटने वाले हैं। जब वे आएँगे तो गोविंदम और मीनाक्षी को बहुत काम रहेगा। वे जाल में से छोटी-छोटी मछलियाँ टोकरियों में भरेंगे। गोविंदम माँ के साथ मछलियाँ बेचने बाज़ार जाएगा।

गोविंदम ने सोचा– आज समुद्र तट पर सभी साथियों को बुलाकर पिकनिक मनानी चाहिए। उसने अपनी माँ से एक छोटी टोकरी में खाना रखने को कहा। माँ ने कुछ केले, इडली और डोसा उसकी टोकरी में रख दिए। पीने के लिए कच्चे नारियल भी दे दिए। फिर माँ उसके दादा जी को खाना देने लगी। गोविंदम के दादा जी बहुत वृद्ध हैं। वे मछली पकड़ने समुद्र में नहीं जा सकते। वे घर में नारियल के रेशों से रस्सी बनाते हैं।

गोविंदम के सभी साथी अपनी-अपनी टोकरी लेकर आ गए। टोकरियों में खाना था। उन्हीं टोकरियों में वे सीप और शंख भरकर लाएँगे। बच्चे अभी कुछ ही दूर गए होंगे कि अचानक ज़ोर से आवाज़ सुनाई दी। सभी चौकन्ने हो गए, "अरे, यह तो भोंपू की आवाज़ है।" किसी ने कहा। सभी आवाज़ की तरफ़ भागने लगे। घरों से स्त्रियाँ और वृद्ध भी निकलकर बाहर आ गए। एक जीप मछुआरों की बस्ती के पास आ गई थी। उसी पर बैठा एक व्यक्ति ऊँची आवाज़ में कह रहा था, "तूफ़ान आने वाला है। कोई भी समुद्र की ओर न जाए।"

गोविंदम के पिता अन्य मछुआरों के साथ समुद्र में मछली पकड़ने जा चुके थे। उन्हें गए एक घंटा बीत चुका था। अब क्या होगा? सभी स्त्रियाँ और वृद्ध चिंतित थे। कुछ लोग समुद्र की तरफ़ दौड़कर मछुआरों को सूचना देने चल दिए।
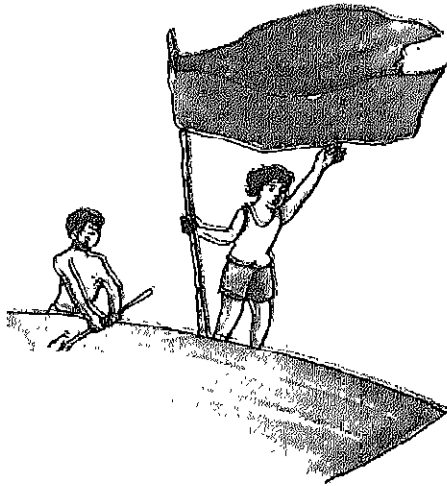
गोविंदम को अचानक एक उपाय सूझा। उसने मीनाक्षी से कुछ कहा। वह भागकर माँ की लाल साड़ी उठा लाई। गोविंदम साड़ी लेकर समुद्र की ओर दौड़ा। समुद्र तट पर एक डोंगी खड़ी थी। वह झट से उस पर चढ़ गया। उसने डोंगी में रखे एक लंबे बाँस पर लाल साड़ी बाँधकर बाँस खड़ा कर दिया। इतने में गोविंदम का एक मित्र दौड़ता हुआ आया और उसके साथ डोंगी में बैठ गया। अब वे डोंगी खेते हुए समुद्र में चले गए।

बहुत-से लोग तट पर खड़े चिल्ला रहे थे और मछुआरों को हाथ हिला-हिलाकर संकेत से वापस बुला रहे थे। गोविंदम की डोंगी जब कुछ दूर पहुँच गई तो दोनों मित्र ऊँची आवाज़ में चिल्लाने लगे, "लौट आओ, लौट आओ, तूफ़ान आने वाला है।"

दूर नावों पर जाते हुए मछुआरों ने कुछ शोर सुना तो वे मुड़कर देखने लगे। डोंगी पर लाल कपड़ा हवा में फड़फड़ा रहा था। मछुआरों ने लाल कपड़ा देखा तो तुरंत लौट पड़े। दोनों मित्रों ने अपनी डोंगी लौटा ली।

इतने में हवा कुछ और तेज़ हो गई। गोविंदम किनारे पर पहुँचा तो उसके लिए डोंगी को बाँधना मुश्किल हो गया। उसके दादा जी और मीनाक्षी ने आगे बढ़कर डोंगी पकड़ ली और उसे बाँध दिया। लाल साड़ी अभी भी हवा में फहरा रही थी। आधे घंटे में सारी नावें तट पर पहुँच गईं। नावें बाँधते-बाँधते हवा बहुत तेज़ हो गई। वर्षा भी होने लगी।

मछुआरों ने दोनों बच्चों की बड़ी सराहना की। गोविंदम के पिता बोले, "तुम दोनों ने बड़ी समझदारी का काम किया है। तूफ़ान बढ़ता जा रहा है, चलो अब घर चलें।"

1. प्रश्नों के उत्तर दो

(क) गोविंदम और मीनाक्षी ने क्या-क्या जमा कर रखा था?
(ख) उनके पिता समुद्र में क्यों गए थे?
(ग) गोविंदम की माँ ने उसे खाने के लिए क्या-क्या दिया?
(घ) बस्ती के लोगों को तूफ़ान की सूचना कैसे मिली?
(ङ) गोविंदम ने बाँस पर लाल साड़ी क्यों बाँधी?
(च) सीपियों और शंखों से क्या-क्या चीज़ें बनती हैं?

2. पढ़ो, समझो और लिखो

सीप	सीपियाँ	सीपियों में
मछली	....	....
डोंगी	....	....
साड़ी	....	....
रस्सी	....	....

(इसी प्रकार **में, से ने, के, को** आदि के साथ इन सभी शब्दों का अभ्यास वाक्य में प्रयोग करके करवाइए)

3. अर्थ लिखो

तट वृद्ध सराहना भयानक उपाय भंडार

4. पढ़ो और समझो

रंगीन शंख, ऊँची आवाज़, छोटी मछलियाँ, कच्चे नारियल, लाल साड़ी

जिन शब्दों के नीचे रेखा खिंची है, वे अपने साथ लिखे शब्द के बारे में कुछ बता रहे हैं। जैसे– रंगीन शब्द बता रहा है कि शंख कैसा है। इसी तरह ऊँची, छोटी, कच्चे, लाल– शब्द अपने साथ लिखे शब्द के बारे में कुछ बता रहे हैं।

7

रक्षाबंधन

रक्षाबंधन	पूर्णिमा	त्योहार	तिलक	निराश	प्रण
युद्ध	संकट	चित्तौड़	कर्मवती	हुमायूँ	

कल सावन की पूर्णिमा है। राखी का त्योहार है। उषा अपनी सहेलियों के साथ राखी लेने बाज़ार गई।

राखी की दुकान पर बड़ी भीड़ थी। दुकानदार जल्दी-जल्दी राखियाँ बेच रहा था। उषा और उसकी सहेलियों ने भी रंग-बिरंगी राखियाँ खरीदीं। फिर वे घर आ गईं।

अगले दिन उषा जल्दी उठी। नहा-धोकर उसने नए कपड़े पहने और तिलक की थाली सजाई। माँ रसोईघर में जल्दी-जल्दी खाना बना रही थीं। उन्हें भी अपने भाई को राखी बाँधने जाना था ।

अध्यापन संकेत : एकवचन और बहुवचन शब्दों के अनुसार क्रिया रूपों में होने वाले परिवर्तनों को उदाहरणों द्वारा समझाएँ, जैसे– उषा ने राखी खरीदी। निशा ने राखियाँ खरीदीं। **ड़** और **र** ध्वनियों के उच्चारण में अंतर को स्पष्ट करने के लिए श्यामपट पर **कपड़ा, कमरा, सड़क, सरक** आदि शब्द लिखें और उनका उच्चारण करवाएँ। रक्षाबंधन से पहले कक्षा में बच्चों से राखियाँ बनवाएँ। बच्चों ने रक्षाबंधन का त्योहार कैसे मनाया, समूहों में चर्चा कराएँ।
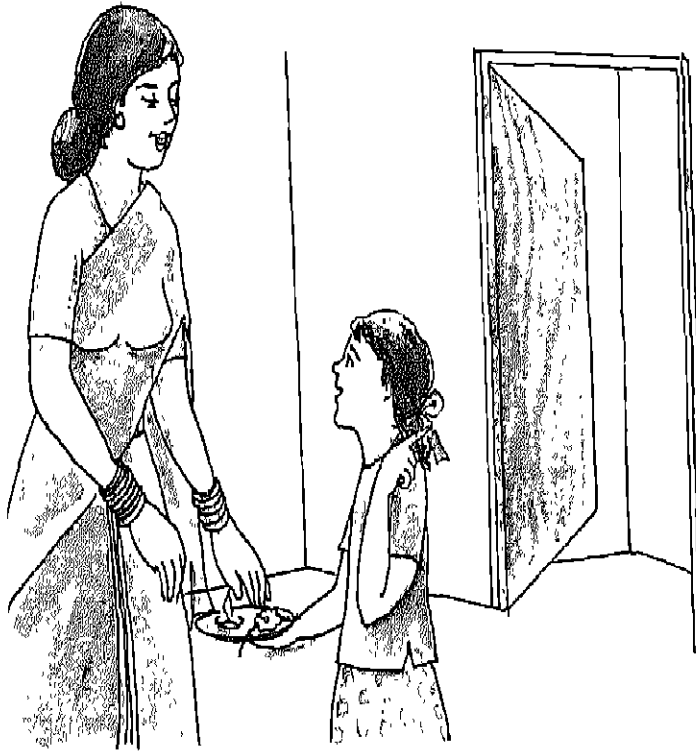
उषा के भाई आगरा से आने वाले हैं। जब कभी सड़क पर कुछ आवाज़ होती, उषा दौड़कर दरवाज़े पर जाती और सड़क की ओर देखती। भाई को न आते देख, वह निराश होकर लौट आती।

उषा ने माँ से कहा – क्या बात है, भैया अभी तक नहीं आए? आज मैं किसे राखी बाँधूँगी?

उषा को उदास देखकर माँ ने कहा, "कोई बात नहीं, उषा। पहली गाड़ी निकल गई होगी। थोड़ी देर में दूसरी गाड़ी आने वाली है। प्रभात ज़रूर आएगा।" माँ यह कह ही रही थीं कि हाथ में अटैची लिए प्रभात भीतर आ गया। भाई को देखकर उषा बहुत खुश हुई।

"देखिए, आपने कितनी देर कर दी, भैया", उषा ने प्रभात से कहा।

"क्या करता उषा, गाड़ी ही देर से आई !" माँ के पाँव छूते हुए प्रभात बोला।

"अब तुम जल्दी से नहा लो" माँ ने कहा।

नहा-धोकर प्रभात तैयार हो गया। उषा ने भाई के माथे पर तिलक लगाया, कलाई पर राखी बाँधी और फिर उसे मिठाई खिलाई। प्रभात ने बहिन को प्यार किया और उपहार दिया। उछलती-कूदती उषा सहेलियों के साथ खेलने चली गई।

1. सही वाक्य चुनो

(क) रक्षाबंधन के दिन क्या-क्या करते हैं? नीचे लिखे जो उत्तर सही हैं उनके आगे (√) लगाओ।

[ ] घर सजाते हैं और दीप जलाते हैं।

[ ] बहिन भाई को राखी बाँधती है।

[ ] भाई बहिन को तिलक करता है।

[ ] बहिन भाई को तिलक करती है।

[ ] भाई बहिन को उपहार देता है।

(ख) नीचे लिखा अनुच्छेद पढ़ो और पाठ के अनुसार जो वाक्य सही नहीं है उसके नीचे रेखा खींचो।

उषा बाज़ार से रंग-बिरंगी राखियाँ ले आई। अगले दिन उसने नहा धोकर तिलक की थाली सजाई। उसकी माँ ने भी जल्दी-जल्दी खाना बना लिया। फिर वे मंदिर चली गईं। उन्हें अपने भाई को राखी बाँधनी थी।

2. बताओ

बहिन अपने भाई को राखी क्यों बाँधती है?

3. पढ़ो और समझो

रक्षाबंधन	=	रक्षा + बंधन	रेलगाड़ी	=	रेल + गाड़ी
वनवास	=	....	रसोईघर	=	....
सेनापति	=	....	प्रधानमंत्री	=	....

4. पढ़ो और लिखो

चित्तौड़	रक्षाबंधन	युद्ध	संकट	राखियाँ	प्रण
प्रभात	कर्मवती	हुमायूँ	त्योहार	सहेलियाँ	प्रार्थना

5. करो

रंग-बिरंगी राखियाँ बनाओ।

8

गौरैया के लिए

गौरैया	पुरखों	परती	बटोरना	उत्सुकता
संध्या	ध्यान	चहचहाना	निर्णय	लहलहाना

उसका नाम था बलराम। गाँव था पोखरी। काम था खेती। मुश्किल यह थी कि खेती करने में उसका मन नहीं लगता था। पुरखों की सारी ज़मीन परती पड़ी थी। करे तो क्या करे? भूख तो रोज़ ही लगती। इसलिए सुबह-सुबह वह जंगल की ओर चल पड़ता। जंगल में पके फल मिल जाते। जब फल नहीं मिलते तो सूखी लकड़ियाँ बटोरता। लकड़ियों को लेकर गाँव आता । यदि कोई लकड़ियों के बदले दो-चार रोटियाँ दे देता तो बलराम का पेट भर जाता। कभी-कभी वह सोचता कि अपने पुरखों की ज़मीन पर खेती ही करे। लेकिन सोचते ही उसे लगता कि परती ज़मीन पर खेती करना उसके बस की बात नहीं है।

एक दिन बलराम जंगल में लकड़ियाँ बटोर रहा था। अचानक उसका हाथ किसी कोमल चीज़ पर पड़ा। चीं-चीं की हलकी-सी आवाज़ आई। बलराम ने उत्सुकता से देखा, वह एक नन्हीं सी गौरैया थी। बलराम ने गौरैया को उठाया। वह कमज़ोर और बीमार लग रही थी। उसकी चीं-चीं की आवाज़ भी बड़ी धीमी निकल रही थी। बलराम को लगा, गौरैया उससे कुछ कह रही है। गौरैया भूखी-प्यासी होगी, ऐसा सोचकर उसने दो बूँद पानी चिड़िया की चोंच में डाला। एक जंगली फल खाने को दिया। बलराम दिनभर चिड़िया को कंधे पर बैठाए, जंगल में लकड़ियाँ चुनता रहा।

संध्या के समय वह सीधा अपने पड़ोसी के घर गया। लकड़ियाँ देकर कुछ दाना ले आया। गौरैया को दाना डाला। वह खाने लगी। बलराम बोला, "देखो चिड़िया रानी, आराम से मेरे घर रहो। जब ठीक हो जाओ तो उड़ जाना।"

अध्यापन संकेत : इस कहानी में जीव-जंतुओं से प्रेम तथा परिश्रम की महत्ता पर बल दिया गया है। चर्चा द्वारा इन मूल्यों को उभारें। कहानी की मूलकथा पर बात करने के बाद बच्चों को स्वयं कहानी पढ़ने को प्रेरित करें। **जब-तब** और **तो** वाले वाक्यों की ओर ध्यान आकर्षित करें। ऐसे कुछ और वाक्य श्यामपट पर लिखकर पढ़वाएँ। परती, पुरखों शब्दों के अर्थ स्पष्ट करें।

गौरैया बलराम के घर खुश थी। वह रोज़ बलराम के कंधे पर बैठ जंगल जाती। रास्ते में उसे मीठा गाना सुनाती। शाम को उसी के साथ लौट आती। बलराम गौरैया की खूब देखभाल करता। अब वह रोज़ लकड़ियाँ चुनकर लाता। लकड़ियाँ बेचकर अपने लिए खाना और चिड़िया के लिए दाना लाता। दोनों बातें करते। धीरे-धीरे बलराम गौरैया को चाहने लगा। उसे एक साथी मिल गया।

धीरे-धीरे गौरैया ठीक हो गई। पर बलराम चाहता था कि गौरैया उसके साथ ही रहे। गौरैया भी बलराम को छोड़कर कहीं जाना नहीं चाहती थी।

बरसात का मौसम आ गया। कई दिन तक लगातार पानी बरसता रहा। बलराम लकड़ियाँ लेने जंगल नहीं जा सका। बलराम सोचने लगा– अब गौरैया के लिए दाना कहाँ से आएगा। सोचते-सोचते उसका ध्यान अपनी ज़मीन की ओर गया।

आखिर में बलराम ने अपनी परती पड़ी ज़मीन पर ही खेती करने का निर्णय ले लिया। वह फावड़ा उठा कर चल दिया। उसने एक नज़र ज़मीन पर डाली और फिर ज़मीन खोदने में जुट गया। वह ज़मीन को खूब गहरा खोदता, कंकड-पत्थर छाँटकर अलग कर देता। मिट्‌टी को बिछाता जाता। गौरैया उसके आसपास उड़ती रहती।
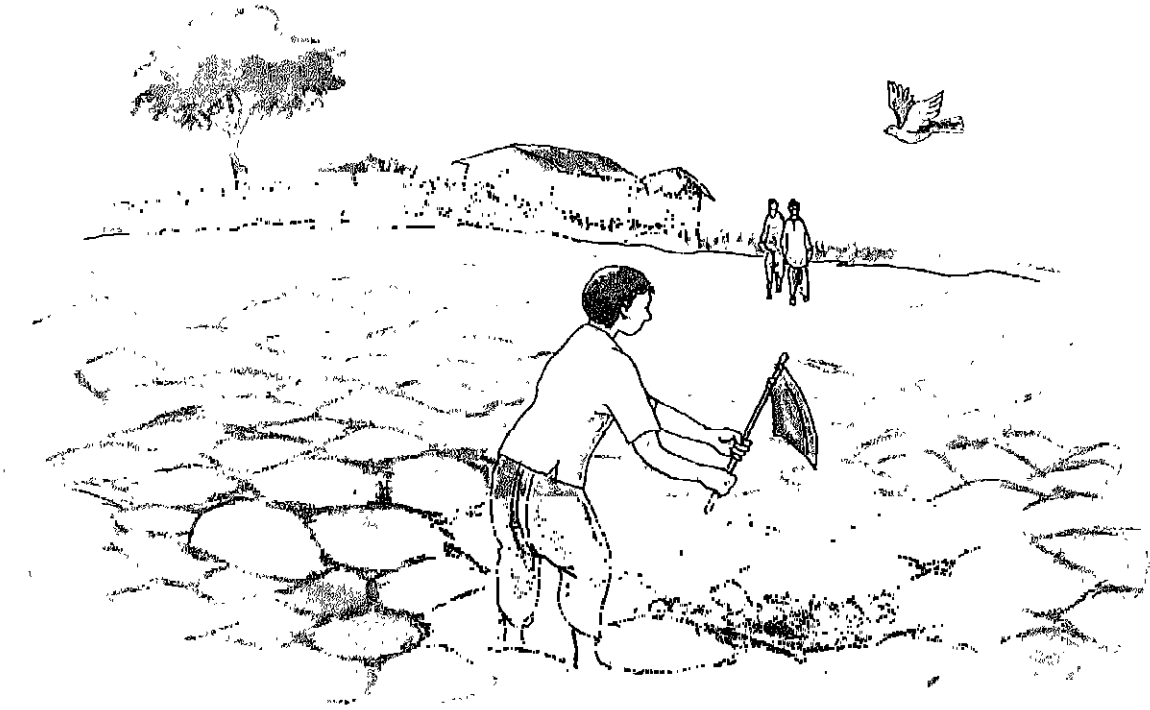
गाँव वालों ने जब बलराम को इतना कड़ा परिश्रम करते देखा तब वे भी उसका हाथ बँटाने आ गए। एक पड़ोसी ने खेत जोतने के लिए अपने हल-बैल दे दिए और दूसरे ने कुछ बीज।

कुछ ही समय में खेत में पौधे लहलहाने लगे। बलराम उनकी अच्छी देखभाल करता। फसल पकी तो अनाज से घर भर गया। बलराम की खुशी का ठिकाना न रहा। अनाज का ढेर गौरैया को दिखाते हुए वह बोला, "यह सब तुम्हारे लिए है। तुम्हें कहीं जाने की ज़रूरत नहीं है। अब तुम हमेशा मेरे साथ ही रहना।"

बलराम की बात सुनकर गौरैया खुशी से चहचहाने लगी।

1. प्रश्नों के उत्तर दो

(क) बलराम पहले क्या करता था?

(ख) बलराम को गौरैया कहाँ मिली?

(ग) बलराम को अपनी परती ज़मीन पर खेती करने का ध्यान क्यों आया?

(घ) गाँव वालों ने बलराम की क्यों मदद की?

(ङ) बलराम की खुशी का ठिकाना क्यों न रहा?

2. बताओ

इस कहानी का कौन-सा भाग तुम्हें सबसे अच्छा लगा? क्यों?

3. पढ़ो और समझो

(क)

खोदना	=	खुदाई
जोतना	=	जुताई
बोना	=	बुवाई
पढ़ना	=	पढ़ाई

(ख)

पुरखे	=	दादा-परदादा
परती	=	ऐसी ज़मीन जिस पर बहुत समय से खेती न हो रही हो।
लहलहाना	=	हवा में झूमना
बटोरना	=	इकट्ठा करना

4. पढ़ो, समझो और करो

इन शब्दों में से सही शब्द चुनकर खाली जगह में लिखो

पके सूखी नन्ही मीठा साफ़ परती गीला

पके	फल	....	गाना
....	पानी	....	गौरैया
....	ज़मीन	....	लकड़ियाँ

5. वाक्य बनाओ

कोमल परिश्रम निर्णय देखभाल

6. श्रुतलेख

गौरैया	पुरखों	उत्सुकता	खिलाऊँगा	नन्ही	संध्या
कंकड़-पत्थर	निर्णय	ध्यान	जल्दी	मुश्किल	परिश्रम

सबसे बढ़कर

आलपीन के सिर होता पर
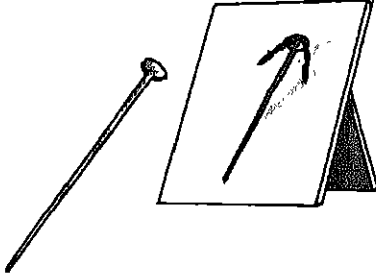
बाल न होता उसके एक।
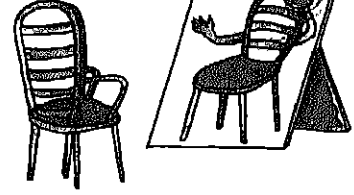
कुरसी की दो बाँहें हैं पर

गेंद नहीं सकती है फेंक।
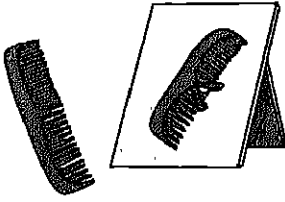
कंघी के हैं दाँत मगर वह

चबा नहीं सकती खाना।

गला सुराही का पतला है

किंतु न गा सकती गाना।
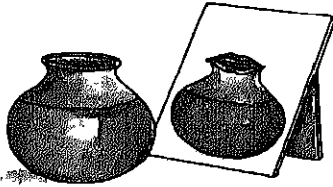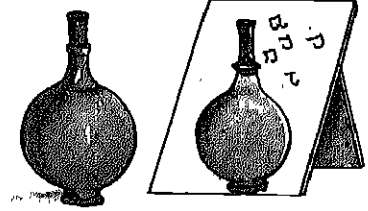
होता है मुँह बड़ा घड़े का

पर वह बोल नहीं सकता ।

अध्यापन संकेत : इस कविता में मनुष्य के शरीर के अंगों और उनके कार्यों के संबंध के आधार पर आठ अलग-अलग वस्तुओं के अंगों के बारे में कौतूहल उत्पन्न किया गया है। बच्चों को बताएँ – **सिर, बाँह, दाँत, गला, मुँह, पैर, जीभ** तथा **आँख** मानव शरीर के कुछ मुख्य अंग हैं। इनके अलग-अलग कार्य हैं। आलपीन, कुरसी, कंघी, सुराही, घड़ा, पलंग, जूते तथा नारियल के भी क्रमशः मानव शरीर के अंगों के नाम वाले अंग हैं किंतु उनसे वे काम नहीं कर पाते जो मनुष्य के अंग करते हैं।

चार पैर पलंग के होते पर
वह डोल नहीं सकता।

जूते के है जीभ मगर वह
स्वाद नहीं चख सकता है।

आँखें होते हुए नारियल
देख नहीं कुछ सकता है।

है मनुष्य के पास सभी कुछ
ले सकता है सबसे काम

इसीलिए दुनिया में सबसे
बढ़कर है उसका ही नाम।

— रमापति शुक्ल

1. इन पंक्तियों को पूरा करो

(क) कंघी के हैं दाँत मगर वह
.........................।

(ख) गला सुराही का पतला है
.........................।

(ग) चार पैर पलंग के होते पर
.........................।

2. बताओ

हम इनसे क्या-क्या काम लेते हैं–
कंघी, कुरसी, पलंग, सुराही, जूता, आलपीन

3. करो

(क) पत्रिकाओं से कुछ मनपसंद कविताएँ चुनकर कक्षा में सुनाओ और उन्हें लिखकर अपनी एक कविता-पुस्तिका बनाओ।

(ख) इस कविता को याद करो।

10

नीम

कुल्हाड़ी	कराहना	आनंद	संदूक
शुद्ध	निबौरी	फोड़े-फुंसियाँ	

रमेश को एक दिन एक कुल्हाड़ी मिल गई। वह कुल्हाड़ी लेकर बाहर निकला। सामने नीम का एक पेड़ था। रमेश उस पेड़ के तने को कुल्हाड़ी से काटने ही लगा था कि कहीं से आवाज़ आई। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ क्योंकि आसपास कोई न था। वह ध्यान से सुनने लगा। उसे लगा कि पेड़ उससे कुछ कह रहा है, "रमेश, तुम मुझे क्यों काट रहे हो? क्या तुम नहीं जानते कि मैं तुम्हारे कितने काम आता हूँ?"
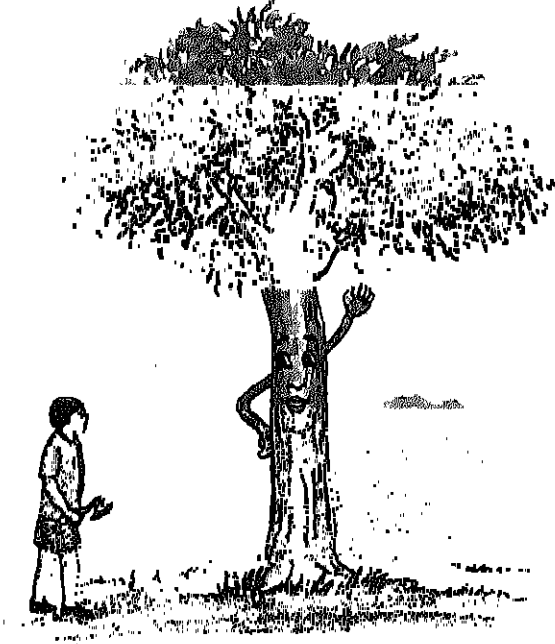
रमेश, मेरी पत्तियों को देखो। ये पत्तियाँ इतनी घनी हैं कि सूर्य की किरणें धरती तक नहीं पहुँच पातीं और मेरे नीचे सदा छाया बनी रहती है। तुम भी तो अपने मित्रों के साथ मेरी छाया में बैठते और खेलते हो। तुम्हें मेरे नीचे बैठकर आनंद आता है न ! तुम्हारी ही तरह दूसरे लोग और पशु भी मेरी छाया में बैठकर आराम करते हैं। इतना ही नहीं, मेरी पत्तियों पर जब सूर्य की किरणें पड़ती हैं तब ये हवा को शुद्ध कर देती हैं।

तुमने कभी किसी को गरम कपड़ों के संदूक में मेरी सूखी पत्तियाँ रखते हुए देखा है? क्या तुम

अध्यापन संकेत : यह पाठ आत्मकथा शैली में लिखा गया है। यहाँ नीम स्वयं अपने बारे में कह रहा है। आसपास नीम का पेड़ हो तो बच्चों को दिखाएँ और उसके विभिन्न भागों से परिचित कराएँ। नीम की दातुन उपयोग में लाने के लिए प्रोत्साहित करें-- नीम की तरह अन्य पेड़ों के भी अपने-अपने लाभ हैं। पर्यावरण से जोड़ते हुए पेड़ों के बारे में सामान्य चर्चा करें। पेड़ों से लाभ का चित्रमय चार्ट बनवाएँ।

जानते हो, वे ऐसा क्यों करते हैं? ऐसा करने से गरम कपड़ों में कीड़ा नहीं लगता। मैं किसान के अनाज की भी रक्षा करता हूँ। अनाज में मेरी सूखी पत्तियाँ रख देने से उनमें कीड़ा नहीं लगता। मेरी सूखी पत्तियों को जलाकर धुआँ कर दिया जाए तो मच्छर भाग जाते हैं।

मुझ पर फूल और फल भी लगते हैं। मेरे फल को निबौरी कहते हैं। मेरे फूल और निबौरी भी बहुत काम की चीज़ें हैं। इन्हें खाने से पेट की बीमारियाँ दूर हो जाती हैं। निबौरी की गुठली से जो तेल निकलता है, उससे साबुन बनाते हैं। निबौरी की गुठली का तेल और इस तेल से बना 'साबुन' फोड़े-फुंसियों को ठीक कर देता है। बच्चों को फुंसियाँ बहुत तंग करती हैं। अगर फुंसियों पर मेरी छाल घिसकर लगा दो तो ये फुंसियाँ ठीक हो जाएँगी।

क्या तुमने कभी मेरी दातुन से दाँत साफ़ किए हैं? यह कड़वी तो ज़रूर होती है, पर दाँतों के लिए बहुत अच्छी होती है। इससे दाँत मज़बूत होते हैं और उनमें कीड़ा भी नहीं लगता।

बुखार में तुम मेरी जड़ को पानी में उबालकर पी लो तो तुम्हारा बुखार दूर हो जाएगा।

देखा तुमने ! मैं तुम्हारे कितने काम आता हूँ! मेरे सभी भाग किसी न किसी काम में लाए जाते हैं। अब तो तुम जान गए न कि मैं बीमारियों को भगाने वाला पेड़ हूँ। मैं सब जगह आसानी से लगाया भी जा सकता हूँ। इसीलिए क्या गाँव, क्या शहर – सब जगह लोग मुझे लगाते हैं और मेरी ठंडी छाया में बैठकर सुखी होते हैं।

नीम की ये बातें सुनकर रमेश को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह सोचने लगा – कितना अच्छा है यह नीम का पेड़ और मैं इसे काट रहा था ।

1. प्रश्नों के उत्तर दो

(क) नीम की पत्तियाँ किस-किस काम आती हैं?

(ख) नीम के तेल से क्या लाभ हैं?

(ग) नीम के पेड़ को बीमारियाँ भगानेवाला पेड़ क्यों कहते हैं?

(घ) नीम की दातुन क्यों करनी चाहिए?

2. वाक्य पूरे करो

(क) नीम की पत्तियाँ हवा को .... कर देती हैं।
(ख) घनी पत्तियों से नीम के नीचे सदा .... रहती है।
(ग) नीम की सूखी पत्तियाँ रखने से कपड़ों में .... नहीं लगता।
(घ) नीम की पत्तियों को जलाकर धुआँ करने से .... भाग जाते हैं।
(ङ) नीम की .... करने से दाँत साफ़ रहते हैं।
(च) नीम के साबुन से नहाने से .... ठीक हो जाते हैं।

3. पढ़ो, समझो और लिखो

(क)	नाली	=	नालियाँ	(ख)	भरना	=	भरा
	बूटी	=	....		फैलना	=	....
	निबौरी	=	....		पीसना	=	....
	गुठली	=	....		घिसना	=	....
	फुंसी	=	....		फेंकना	=	....

4. पढ़ो और लिखो

निबौरी	धुआँ	पत्तियाँ	आनंद
रक्षा	फुंसियाँ	सूर्य	कुल्हाड़ी
लकड़ियाँ	आश्चर्य	बीमारियाँ	मच्छर

5. करो

(क) हमें पेड़ नहीं काटने चाहिए – विषय पर कक्षा में चर्चा करो।
(ख) अपने घर के आसपास नीम का एक पेड़ लगाओ।

11

बीरबल की खिचड़ी

बादशाह	विद्वान	चतुराई	प्रसिद्ध	चाव
ब्राह्मण	नम्रता	उपस्थित	सम्मान	राजमहल

अकबर के दरबार में अनेक विद्वान थे। बीरबल उन्हीं में से एक थे। वे अपनी चतुराई के लिए बड़े प्रसिद्ध थे। अपनी चुतराई से वे बादशाह को भी हरा देते थे। अकबर और बीरबल के बारे में अनेक किस्से प्रसिद्ध हैं। लोग उन्हें बड़े चाव से सुनते-सुनाते हैं।
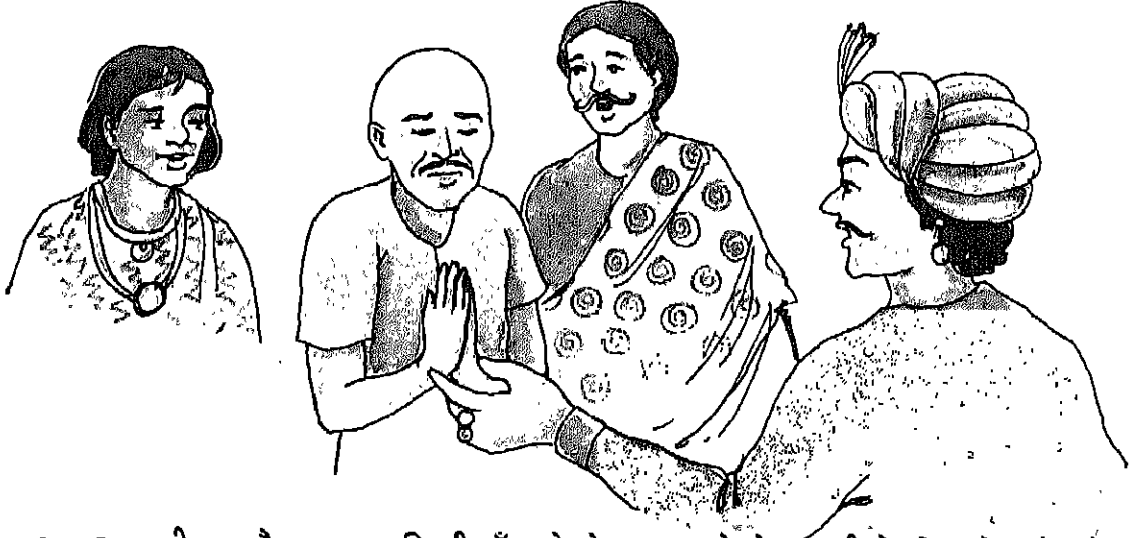
एक बार की बात है। अकबर किसी गाँव से होकर जा रहे थे। सरदी के दिन थे। गाँव के लोग आग जलाकर, उसके चारों ओर बैठे बातें कर रहे थे। जब बादशाह अपने साथियों के साथ वहाँ पहुँचे तो ब्रह्मदत्त नाम का एक ब्राह्मण कह रहा था कि मैं यमुना के पानी में रात भर खड़ा रह सकता हूँ।

अध्यापन संकेत : पाई हटाकर बनने वाले संयुक्त व्यंजनों के लिखित रूप पर विशेष ध्यान दिलाएँ, जैसे– **विश्वास, आश्चर्य, उपस्थित** आदि। **विद्वान, प्रसिद्ध** जैसे शब्दों को पढ़वाएँ तथा लिखवाएँ। संयुक्त व्यंजन बनाते समय हलंत (्) की ओर ध्यान दिलाएँ। बीरबल की चतुराई की ओर संकेत करते हुए, कुछ और किस्से बच्चों को विभिन्न समूहों में पढ़ने को कहें। इन विराम चिह्नों– **पूर्णविराम, प्रश्नवाचक, विस्मयबोधक** तथा **उद्धरण चिह्न** (" ") का प्रयोग सिखाएँ । कुछ चुटकुले चार्ट पर लिखवाकर फ्लैनल बोर्ड पर लगवाएँ।
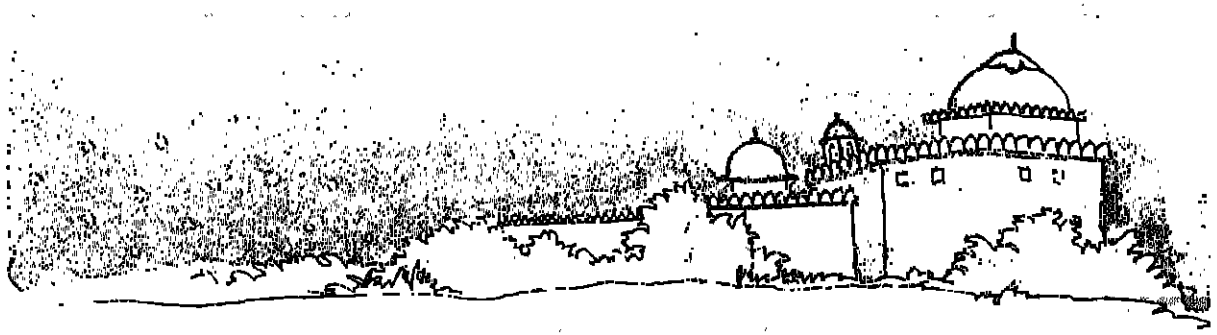
अकबर को इस बात पर विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने ब्रह्मदत्त से कहा कि यदि तुम सारी रात पानी में खड़े रहो तो मैं तुम्हें थैलीभर मोहरें इनाम में दूँगा। ब्रह्मदत्त मान गया।

अगली रात ब्रह्मदत्त यमुना के ठंडे जल में पूरे समय खड़ा रहा। प्रातः वह बादशाह के दरबार में आया।

बादशाह ने आश्चर्य से पूछा, "तुम इतनी सरदी में सारी रात पानी में कैसे खड़े रहे?"

ब्रह्मदत्त ने नम्रता से उत्तर दिया, "महाराज, आपके राजमहल से दीपक का प्रकाश आ रहा था। मैं उसे देखते हुए सारी रात पानी में खड़ा रहा।"

बादशाह ने कहा, "तो तुम मेरे दीपक की गरमी के कारण ही सरदी से बच सके। तुम्हें कोई इनाम नहीं दिया जाएगा।"

ब्रह्मदत्त बहुत दुखी हुआ। वह उदास होकर चला गया। उस समय बीरबल भी दरबार में उपस्थित थे। उन्होंने सोचा – इस व्यक्ति की सहायता करनी चाहिए।

दूसरे दिन बीरबल दरबार में नहीं आए। अकबर को चिंता हुई कि कहीं बीरबल बीमार तो नहीं पड़ गए। उन्होंने बीरबल को बुला भेजा। बीरबल ने कहलवाया कि मैं खिचड़ी पका रहा हूँ, पक जाने पर दरबार में हाज़िर हो जाऊँगा।

अगले दिन बीरबल को फिर दरबार में न देखकर बादशाह ने कुछ सोचा। फिर वे बोले, "चलो, स्वयं ही जाकर देखें कि बीरबल कैसी खिचड़ी पका रहा है।"

जब बादशाह बीरबल के यहाँ पहुँचे तो उन्होंने देखा कि एक लंबे बाँस के ऊपरी सिरे पर एक हाँडी लटकी हुई है। हाँडी के काफ़ी नीचे ज़मीन पर बहुत थोड़ी-सी आग जल रही है। बादशाह ने हैरानी से पूछा, " बीरबल ! भला यह खिचड़ी कैसे पक सकती है? हाँडी तो आग से बहुत दूर है।"

बीरबल ने उत्तर दिया, "हुजूर अगर कोई राजमहल के दीपक की गरमी के सहारे सारी रात ठंडे पानी में खड़ा रह सकता है तो इस आग से मेरी खिचड़ी क्यों नहीं पक सकती?"

अकबर को बात समझ में आ गई। उन्होंने दूसरे दिन ब्रह्मदत्त को दरबार में बुलाया और बड़े सम्मान के साथ उसे मोहरों की थैली भेंट की।

1. प्रश्नों के उत्तर दो

(क) बीरबल कौन थे?
(ख) बीरबल में क्या-क्या गुण थे?
(ग) अकबर ने ब्रह्मदत्त को इनाम न देने का क्या कारण बताया?
(घ) बह्मदत्त उदास क्यों हुआ?
(ङ) बीरबल ने हाँडी आग से इतनी दूर क्यों लटका रखी थी?

2. सही शब्द चुनकर वाक्य पूरे करो

चतुराई विश्वास दीपक प्रकाश सम्मान

(क) अँधेरा हो गया .... जला दो।
(ख) अकबर को ब्रह्मदत्त की बात पर .... नहीं हुआ।
(ग) बीरबल की .... से अकबर खुश हुए।
(घ) बल्ब जलाते ही सारे कमरे में .... हो गया।
(ङ) हमें बड़ों का .... करना चाहिए।

3. पढ़ो और लिखो

प्रातः	प्रातःकाल	विद्वान	द्वार	ब्रह्मा	ब्राह्मण
निश्चित	आश्चर्य	प्रसिद्ध	बुद्धिमान	हिम्मत	सम्मान

4. समान अर्थवाले शब्द लिखो

प्रकाश	रोशनी	उपस्थित	....
दीपक	....	पुरस्कार	....
आश्चर्य	....	उत्तर	....

5. विपरीत अर्थवाले शब्द लिखो

उदास	×	खुश	एक	×	अनेक
प्रकाश	×	....	शुद्ध	×	....
दुखी	×	....	चतुर	×	....

6. करो

बीरबल और तेनालीराम की कोई कहानी या चुटकुला कक्षा में सुनाओ।

12

फूलों की घाटी में

चलो-चलो उड़ चलें आज हम
फूलों की उस घाटी में
जहाँ फूल ही फूल खिले हों
घाटी की उस माटी में।

देवलोक से परियाँ आतीं
वहाँ देखने फुलवारी
रंग-बिरंगे फूल खिले हैं
महके केसर की क्यारी।

अध्यापन संकेत : लय और स्वर के उतार-चढ़ाव के साथ कविता को दो-तीन बार सुनाएँ। बच्चे सुनें और मिलकर दोहराएँ। रंग-बिरंगे फूल, झूमती कलियाँ, उन पर मँडराती तितलियाँ, भौंरों की गुनगुन, चारों ओर फैली हरियाली-प्रकृति के ऐसे सुंदर दृश्य बच्चों की कल्पना में बातचीत द्वारा उभारें। भाव स्पष्ट करें— **मंद पवन दुलराए जब-जब, झूम उठें कलियाँ सारी**— हवा धीरे-धीरे बह रही है। हवा के झोंकों से हिलती हुई कलियाँ झूमती-सी लगती हैं। बारह मास जहाँ पर हर दिन बासंती मँडराती है— जहाँ हर दिन बसंत जैसी शोभा फैली रहती है। **वाणी से मधुर बरसाएँ**— मीठे वचन बोलें।

मंद पवन दुलराए जब-जब
झूम उठें कलियाँ सारी
थिरक-थिरक कर तितली झूमे
फूलों की शोभा न्यारी।

भीनी खुशबू से खुश होकर
बुलबुल गीत सुनाती है
बारह मास जहाँ पर हर दिन
बासंती मंडराती है।

उसी जगह भौंरों के संग हम
फूल-फूल पर इठलाएँ
गुनगुन-गुनगुन गीत सुनाकर
वाणी से मधु बरसाएँ।

– शोभनाथ लाल

1. बताओ

(क) परियाँ फूलों की घाटी में क्यों आती हैं?

(ख) फूलों की घाटी में ये क्या-क्या करते हैं– मंद पवन, बुलबुल, बासंती ।

2. करो

इस कविता को याद करो और बालसभा में सुनाओ।

13

एडीसन

एडीसन	प्रकाश	बल्ब	बुद्धिमान	महान
कारीगर	प्रयोग	मग्न	उपयोग	उत्साह

जैसे ही बटन दबाओ, बल्ब जल उठता है और कमरा प्रकाश से जगमगा उठता है। क्या तुमने कभी सोचा है कि बिजली का बल्ब किसने बनाया ?

बिजली का बल्ब बनाने वाले व्यक्ति का नाम था– एडीसन। एडीसन का पूरा नाम थामस एलवा एडीसन था। वह अमरीका का रहने वाला था। एडीसन बचपन से ही कुछ न कुछ सोचता रहता । कक्षा में बैठा हुआ भी वह अपने ही विचारों में खोया रहता।

पाठशाला से लौटते ही थामस अपने कमरे में घुस जाता। वह छोटी-छोटी शीशियों में कुछ उलटता-पलटता और बड़े ध्यान से उनको देखता। वह अपने काम में इतना मग्न रहता कि खाना-पीना भी भूल जाता। माँ उसे खाने के लिए बुलातीं पर वह कमरे से बाहर न निकलता । माँ खाना कमरे में रख देतीं तो खाना वैसे ही पड़ा रहता।

थामस के अध्यापक उसे साधारण बालक समझते लेकिन उसकी माँ उसे बहुत बुद्धिमान समझती थीं। वे अपने
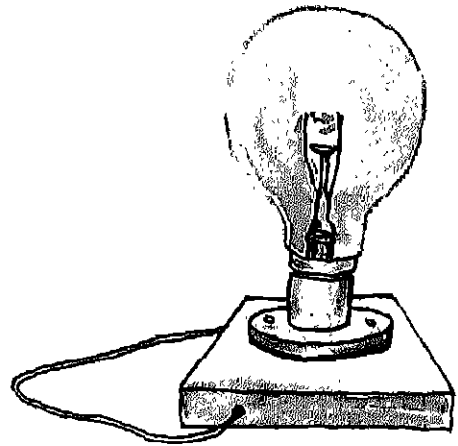
अध्यापन संकेत : यह पाठ एडीसन नामक एक वैज्ञानिक के बारे में है जिसने अपनी नई-नई खोजों से हमारे दैनिक जीवन को सुविधाजनक बनाया है। उनके जीवन की घटनाओं को सुनाते हुए बच्चों में परिश्रम की भावना तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करें। प्रमुख भारतीय वैज्ञानिक और उनकी प्रमुख खोजों के बारे में बताएँ । उनके चित्र एकत्र कर चार्ट पर लगवाएँ।

पड़ोसियों से कहतीं कि बड़ा होकर थामस ज़रूर महान व्यक्ति बनेगा। थामस को माँ की बातों से बड़ा उत्साह मिलता और वह हर समय अपने काम में लगा रहता।

बारह वर्ष का होने पर थामस ने अखबार बेचने का काम शुरू कर दिया। वह रेलगाड़ी में अखबार बेचता और बाकी समय अपनी खोजों में लगा रहता। वह जो भी पैसा कमाता, उसे खोज के काम में लगा देता।

एक बार थामस ने एक ऐसी फ़ैक्टरी में नौकरी कर ली जिसमें कई मशीनें लगी थीं। एक दिन एक मशीन खराब हो गई। कोई भी कारीगर उस मशीन को ठीक न कर सका। पास ही थामस खड़ा था। उसने अपने मालिक से आज्ञा लेकर मशीन को देखा। बस फिर क्या था ! थामस को अपना मनपसंद काम मिल गया। वह मशीन ठीक करने लग गया। कुछ ही घंटों में परिश्रम से मशीन ठीक हो गई। फिर तो मालिक ने उसे मशीनें ठीक करने का काम सौंप दिया।
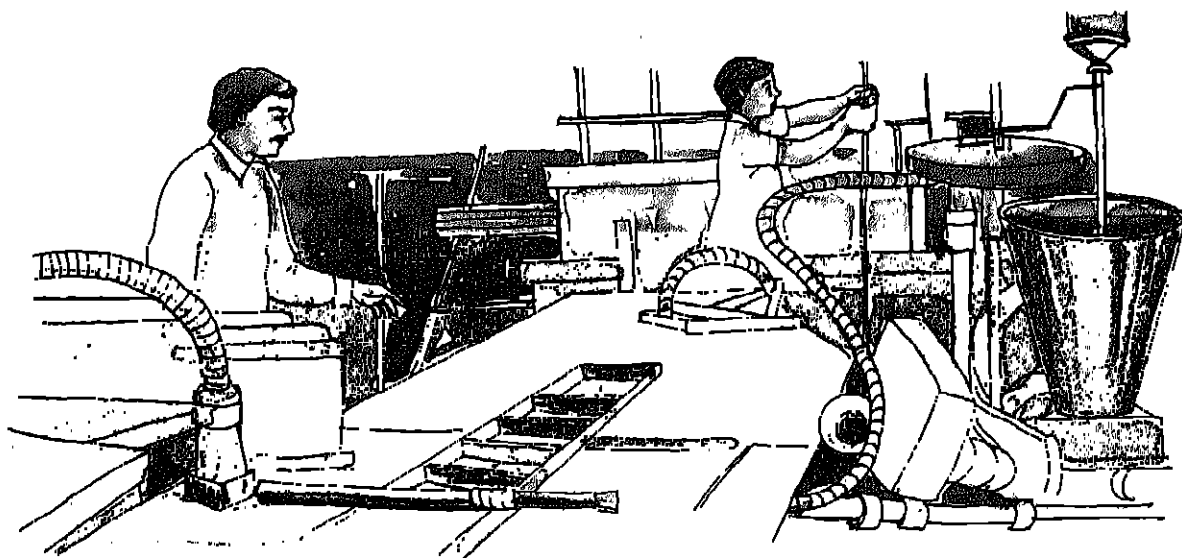
थामस एडीसन अब अनेक मशीनों पर प्रयोग करने लगा। उसने प्रतिदिन के उपयोग में आने वाली कई वस्तुओं की खोज की। उनमें से एक है बल्ब। इससे पहले बिजली की खोज तो हो चुकी थी किंतु उसका प्रयोग रोशनी के लिए नहीं होता था। बिजली का पंखा भी सबसे पहले एडीसन ने ही बनाया।

एडीसन ने ग्रामोफ़ोन भी बनाया। आज भी तुम बापू और चाचा नेहरु की आवाज़ ग्रामोफ़ोन पर सुन सकते हो। पहले सिनेमा में केवल चलती-फिरती तस्वीरें ही होती थीं। वे बोलती नहीं थीं। उनमें आवाज़ भरी एडीसन ने। बेतार का तार, टाइपराइटर और टेलीफ़ोन को भी उन्होंने अधिक उपयोगी बनाया।

थामस एडीसन तो अब इस दुनिया में नहीं हैं परंतु उनके द्वारा बनाया गया बल्ब आज भी चारों ओर रोशनी फैला रहा है। बटन दबाओ और रोशनी ही रोशनी !

1. सही वाक्य चुनो

जो वाक्य थामस एडीसन के बारे में ठीक है, उसके आगे (√) लगाओ।

[ ] एडीसन बहुत परिश्रमी था।
[ ] एडीसन बहुत पढ़ा-लिखा व्यक्ति था।
[ ] एडीसन दिनभर खोज के कामों में लगा रहता था।
[ ] एडीसन ने बल्ब और ग्रामोफ़ोन की खोज की।
[ ] एडीसन महान व्यक्ति न बन सका।
[ ] एडीसन ने कई तरह की मशीनें बनाईं।

2. विपरीत अर्थवाले शब्द लिखकर वाक्य पूरे करो

नीचे लिखे वाक्यों को पढ़ो। जिस शब्द के नीचे रेखा खींची है उसके विपरीत अर्थवाले शब्द को खाली जगह में लिखो। अब वाक्य को फिर से पढ़ो।

(क) बल्ब जलाते ही प्रकाश हो जाता है और ………… दूर हो जाता है।
(ख) रामू बहुत परिश्रमी है पर उसका भाई बहुत ………… है।
(ग) सलीम ने पाँच प्रश्न ठीक किए और दो ………………।

3. श्रुतलेख

महान	परिश्रम	कारीगर	प्रकाश	बुद्धिमान	अध्यापक
बल्ब	प्रयोग	प्रतिदिन	संसार	उपयोग	मग्न

4. पढ़ो और समझो

अध्यापक	अध्यापिका	मालिक	मालकिन
लेखक	लेखिका	पड़ोसी	पड़ोसिन

5. करो

पुस्तकालय से वैज्ञानिकों के जीवन से संबंधित पुस्तकें लेकर पढ़ो। किसी वैज्ञानिक के बचपन की कोई घटना कक्षा में सुनाओ।

14

खेल दिवस

माइक	ट्रक	रेखाएँ	लुढ़कते-लुढ़कते
निर्णय	चकित	करतब	

विद्यालय में कई दिनों से खेल दिवस की तैयारियाँ चल रही हैं। बच्चों ने मिलजुल कर पूरे मैदान की सफ़ाई की है। मैदान में जगह-जगह चूने से सफ़ेद रेखाएँ बनाई गई हैं।

आज बच्चे बिना बस्ता लिए ही स्कूल आए हैं। सभी के चेहरे खिले हुए हैं। आज खेल दिवस है। दिनभर खेल-कूद ही होंगे।

मुख्य अध्यापिका ने माइक पर खेल प्रारंभ होने की सूचना दी। खेल अध्यापिका ने सीटी बजाई। मेंढक दौड़ होने वाली थी। इसमें भाग लेने वाले बच्चे सामने आ गए। बच्चों को मेंढक की तरह बैठकर फुदकते हुए दौड़ना था। जब सब तैयार हो गए, तब अध्यापिका ने दौड़ शुरू करने का इशारा किया। बच्चे फुदक-फुदक कर दौड़ने लगे। दुबली-पतली नमिता सबसे आगे थी। गोलू दौड़ते-दौड़ते लुढ़क गया फिर उठा और खिलखिला कर हँस पड़ा।

अब बारी थी— लंगड़ी दौड़ की। बच्चों को एक पैर से ही दौड़ना था। दौड़ने वाले सभी बच्चे कतार में खड़े हो गए। अध्यापिका ने सीटी बजाई। दौड़ शुरू हुई। कुछ दूर पहुँचने के बाद रीता ने अपना दूसरा पैर भी ज़मीन पर रख दिया। वह दौड़ से बाहर हो गई। अभिनव तेज़ी से दौड़ रहा था। वह सबसे आगे निकल गया।

रबड़ की गेंद दूर तक फेंकने का खेल भी हुआ। बारी-बारी से गोल घेरे में खड़े होकर बच्चे गेंद फेंकते। अध्यापिका देख रही थीं कि कौन गेंद को अधिक दूर तक फेंकता है। जब गोलू की बारी आई,

---

अध्यापन संकेत : वर्णन शैली में लिखे गए इस पाठ में हास्य का पुट है। बच्चों को इसे स्वयं पढ़कर आनंद लेने दें। बीच-बीच में प्रश्न पूछकर बच्चों का ध्यान पाठ में बनाए रखें। ट् ड् जब र् के साथ संयुक्त होते हैं तो लिखते समय उन्हें **ट्र, ड्र** के रूप में लिखते हैं, जैसे– ट्रक, ड्रम, ड्रामा, राष्ट्र आदि शब्द। घर के अंदर और बाहर मैदान में खेले जाने वाले खेलों पर चर्चा करें। खेलते समय खेल के नियमों का पालन करना चाहिए। खेलों को खेल-भावना से खेलना चाहिए– इन बातों पर बल दें।
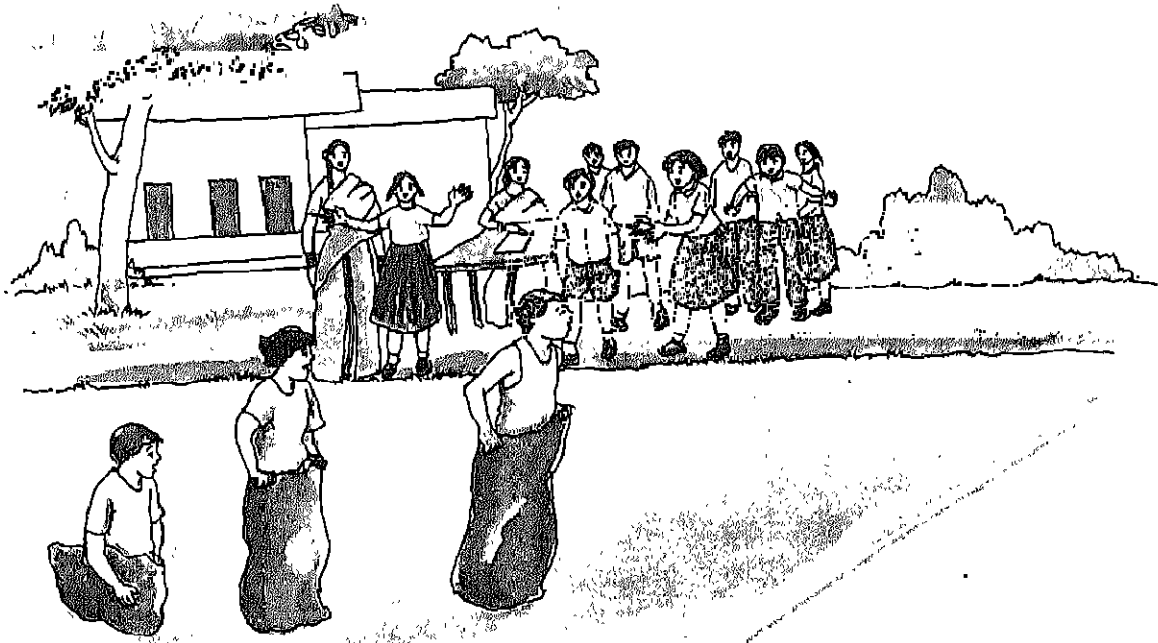
उसने खूब ताकत लगाकर गेंद को फेंका। गेंद सड़क पर जा रहे ट्रक की छत पर जा गिरी। वह ट्रक के साथ ही चली गई। बच्चे गोलू का करतब देखकर बहुत खुश हुए और ज़ोर-ज़ोर से तालियाँ पीटने लगे।

बोरा दौड़ में भाग लेने वाले बच्चे बोरा हाथ में लिए थे। अध्यापिका बारी-बारी से बच्चों को पास बुलातीं, बोरा पहनाकर बोरे के दोनों सिरे उन्हें पकड़ा देतीं। निखिल भी बोरा लेकर आया था। यह देखकर सभी बच्चे चकित थे। सदा पढ़ाई में जुटा रहने वाला निखिल भी आज खेल के मैदान में था।

दौड़ शुरू हुई। बोरे पहने हुए बच्चे उछलते, फुदकते, कूदते हुए आगे बढ़ने लगे। दौड़ते-दौड़ते गौरव अचानक गिर गया। उसने खड़ा होने की कोशिश की। वह खड़ा नहीं हो पाया। वह लुढ़कते-लुढ़कते ही आगे बढ़ने लगा। दौड़ देखने वाले बच्चे हँस-हँसकर तालियाँ बजाने लगे।

अब बारी थी टाफ़ी दौड़ की। इस दौड़ में हिस्सा लेने वाले बच्चों के हाथ पीछे करके बाँध दिए गए। सामने कुछ दूर ऊँचाई पर बँधी रस्सी में टाफ़ियाँ लटक रही थीं। सीटी बजते ही बच्चों को दौड़कर टाफ़ियों तक पहुँचना था। उछलकर एक टाफ़ी मुँह में दबानी थी। फिर दौड़ते हुए लौटना था।

सीटी बजी। बच्चे दौड़ने लगे। धीरज सबसे लंबा था। वह पहले पहुँच गया। उसने उछलकर एक टाफ़ी मुँह में दबाई और मुड़ा। मुड़ते ही विजय से टकरा गया। दोनों गिर पड़े। देखने वाले बच्चे खिलखिला कर हँसने लगे। इस बीच सुलभा ने उछलकर टाफ़ी दाँतों से पकड़ी और तेज़ी से दौड़ने लगी। कुछ और बच्चे भी उसके पीछे आ रहे थे।

अब बारी थी– रस्सा खींच की। इस खेल के लिए दो दल मैदान में थे। एक ओर भीम दल था, दूसरी ओर शक्ति दल। अध्यापिका ने सबको समझाते हुए कहा, "जो दल रस्से को खींचता हुआ अपने पाले में ले जाएगा, वह विजयी होगा।" दोनों दलों के खिलाड़ियों ने मज़बूती से रस्सा पकड़ लिया। सीटी बजते ही रस्सा खींचना शुरू हो गया। दोनों दल बराबरी के थे। देखने वाले बच्चे चिल्ला रहे थे– ज़ोर लगाकर हैया, खींचो मेरे भैया।

कभी लगता कि रस्सा इस पाले में आएगा तो कभी दूसरे पाले में जाता लगता। कई मिनट तक दोनों दल ज़ोर लगाते रहे पर निर्णय नहीं हो पाया। अध्यापिका ने सीटी बजाते हुए कहा, "खेल बराबरी पर समाप्त हुआ।"

इसके बाद अध्यापिका ने सीटी बजाई। सब बच्चे उनके आसपास इकट्ठे हो गए।

पहले और दूसरे स्थान पर आने वाले बच्चों को पुस्तकें और खिलौने दिए गए। सभी बच्चों को फल बाँटे गए। बच्चे खुशी-खुशी अपने घर चल दिए।

1. प्रश्नों के उत्तर दो

(क) खेल दिवस के दिन बच्चे क्यों प्रसन्न थे?

(ख) खेल दिवस के लिए क्या-क्या तैयारियाँ की गईं?

(ग) रीता को दौड़ से बाहर क्यों कर दिया गया?

(घ) रस्सा खींच में कौन-सा दल जीता?

(ङ) निखिल को बोरा लिए देखकर बच्चे क्यों हैरान हुए?

2. वाक्य पूरे करो

है हैं थी थीं

(क) लड़के मैदान में खेल रहे ....।

(ख) रमा कल मेला देखने गई ....।

(ग) चिड़ियाँ दाना चुग रही ....।

(घ) रेलगाड़ी तेज़ी से भाग रही ....।

(ङ) रीना पुस्तक पढ़ रही ....।

(च) सभी सहेलियाँ कल बाज़ार गईं ......।

3. पढ़ो, समझो और लिखो

संकेत	=	इशारा	ट् + ट	ट्ट	पट्टी	....
दिवस	=	....	ड् + ड	ड्ड	हड्डी	....
पंक्ति	=	....	ट्+ ठ	ट्ठ	चिट्ठी	....
चकित	=	....	ट् + र	ट्र	राष्ट्र	....
निर्णय	=	....	ड् + र	ड्र	ड्रामा	....

4. लिखो

तुम कौन-सा खेल खेलना पसंद करते हो – उसके बारे में लिखो।

5. करो

किसी खिलाड़ी का चित्र एलबम में लगाओ।

15

चिड़िया का गीत

सबसे पहले मेरे घर का
अंडे जैसा था आकार
तब मैं यही समझती थी बस
इतना-सा ही है संसार।
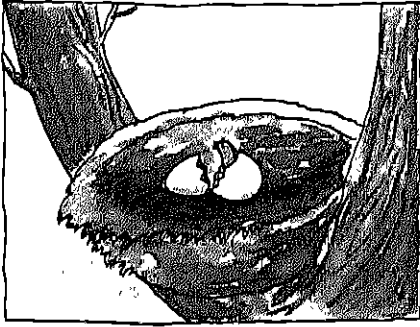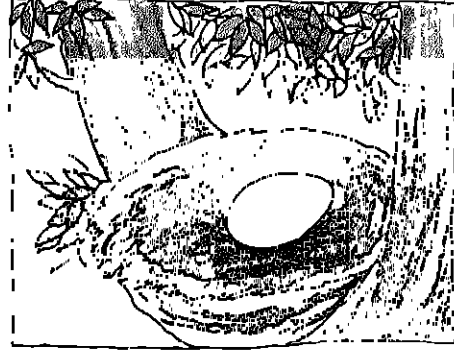
फिर मेरा घर बना घोंसला
सूखे तिनकों से तैयार
तब मैं यही समझती थी बस
इतना-सा ही है संसार।

फिर मैं निकल गई शाखों पर
हरी-भरी थीं जो सुकुमार
तब मैं यही समझती थी बस
इतना-सा ही है संसार।

अध्यापन संकेत : यहाँ चिड़िया का जन्म (अंडे के रूप में) से लेकर बड़े होने तक की पूरी प्रक्रिया दी गई है। बड़े होने के साथ-साथ हमारे सोचने का ढंग बदलता जाता है। जानकारी और आसपास की दुनिया का दायरा भी बड़ा होता जाता है। इस बात को बच्चों के जीवन से जोड़ें। परिवार से विद्यालय और फिर आगे बढ़ने की बात समझाते हुए, उन्हें कार्यक्षेत्र में सक्रिय होने को प्रोत्साहित करें। पक्षियों की अन्य कविताएँ सुनें और सुनाएँ। उन्हें कविता-संग्रह बनाने को कहें।

आखिर जब मैं आसमान में
उड़ी दूर तक पंख पसार
तभी समझ में मेरी आया
बहुत बड़ा है यह संसार।
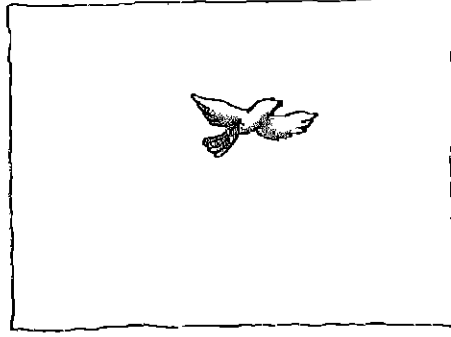
— *निरंकार देव 'सेवक'*

1. करो

(क) अपनी कविता-पुस्तिका में चिड़ियों के बारे में कुछ और कविताएँ इकट्ठी करके लगाओ। उन्हें कक्षा में सुनाओ।

(ख) चिड़िया और उसके बच्चों का चित्र बनाओ।

16

चतुर गीदड़

(पहला दृश्य)

(स्थान : तालाब का किनारा)

मगरमच्छ : (*तालाब की ओर देखते हुए, अपने आप से*) तालाब की सारी मछलियाँ तो मैं धीरे-धीरे चट कर गया। अब क्या खाऊँ? कई दिन से खाने को कुछ भी नहीं मिला। मुझे बहुत भूख लगी है। आज वह गीदड़ भी तालाब पर पानी पीने नहीं आया।

(कछुए का प्रवेश)

कछुआ : कहो भाई मगरमच्छ, क्या है? सब ठीक तो है? इतने उदास क्यों हो?

अध्यापन संकेत : यह पाठ नाट्य विधा के रूप में है। इसके पात्रों के बारे में बातचीत करें। इसके संवादों को उचित हाव-भाव तथा उतार-चढ़ाव के साथ नाटकीय रूप में पढ़वाएँ। बच्चों को घटनाओं के क्रम के अनुसार एक-एक अंश कहानी के रूप में सुनाने को कहें। पाठ में आए मुहावरों का सही संदर्भ में प्रयोग कर अर्थ स्पष्ट करें। प्रत्येक पात्र के बारे में अलग-अलग चर्चा कर बच्चों की प्रतिक्रिया जानें कि कौन कैसा था। बच्चों से मुखौटे बनवाएँ और उन्हें पहनकर नाटक का अभिनय करने को कहें।

मगरमच्छ : क्या बताऊँ मित्र। भूख के मारे मेरे प्राण निकल रहे हैं।

कछुआ : क्यों, क्या आज खाने के लिए मछलियाँ नहीं मिलीं?

मगरमच्छ : मछलियाँ तो कब की समाप्त हो चुकीं। सोचा था कि गीदड़ मिलता तो आज का काम चलता। पर वह तो ऐसा चतुर है कि पकड़ में ही नहीं आता।

कछुआ : हाँ, गीदड़ को पकड़ना तो बहुत कठिन है।

मगरमच्छ : मित्र ! कोई ऐसा उपाय करो कि वह पकड़ में आ जाए। उसे खाकर आज मैं अपनी भूख मिटा लूँगा। मैं तुम्हारा बहुत उपकार मानूँगा।

कछुआ : अच्छा ! तुम कहते हो तो चला जाता हूँ। किसी तरह गीदड़ को इधर लाने की कोशिश करता हूँ। *(कुछ सोचकर)* लेकिन पहले तुम एक काम करो। *(कान में कुछ कहता है)*

मगरमच्छ : ठीक है, ठीक है। मैं ऐसा ही करूँगा।

(दूसरा दृश्य)

(एक ओर मगरमच्छ साँस रोके मरा हुआ सा पड़ा है और कछुआ पास खड़ा है।)

कछुआ : (*दूर से गीदड़ को आते हुए देखकर*) हाय ! अब मैं क्या करूँ ! मेरे प्यारे मित्र को न जाने क्या हो गया ! अचानक उसके प्राण निकल गए। अब तो मैं बिलकुल अकेला रह गया।

(गीदड़ का प्रवेश)

गीदड़ : क्या है भाई कछुए? क्यों रो रहे हो?

कछुआ : मेरा प्यारा मित्र मगरमच्छ स्वर्ग सिधार गया। अब दुनिया में मेरा कोई नहीं रहा।

गीदड़ : क्या कहा? मगरमच्छ मर गया? *(अपने आप से)* अब तो मैं निश्चिंत होकर तालाब का पानी पी सकता हूँ। उसके डर से मैं कई बार प्यासा ही रह जाता था।

कछुआ : क्या कहा, क्या कहा?

गीदड़ : नहीं, कुछ नहीं, कुछ नहीं, यह तो बड़े दुख की बात है। मैं तुम्हारी क्या सहायता कर सकता हूँ?

कछुआ : आओ, उस पर कुछ सूखे पत्ते डालकर उसे ढाँप दें। देखो, मरा पड़ा है।

गीदड़ : (*डरते-डरते कुछ पास जाकर, धीमे स्वर में*) अरे, यह तो बिलकुल शांत है। नहीं, नहीं (*ऊँचे स्वर में*) यह तो साँस ले रहा है। भाई कछुए ! क्या यह सचमुच मर गया है?

कछुआ : हाँ-हाँ ! देखते नहीं, यह मरा पड़ा है।
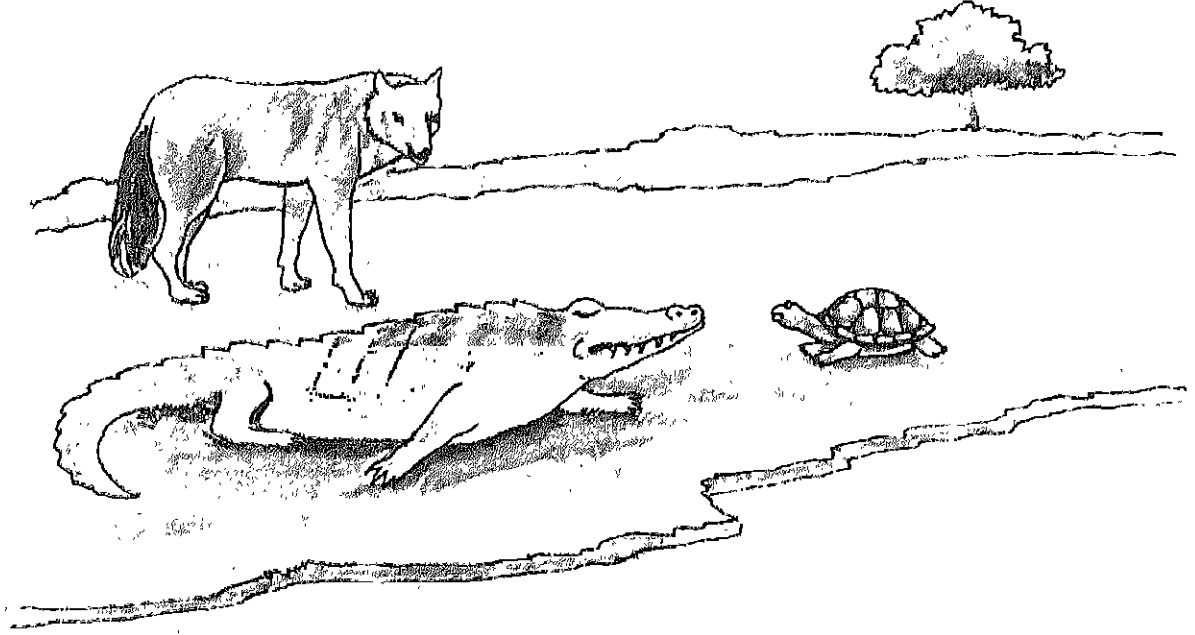
गीदड़ : पर भाई, मैंने तो सुना है कि मर जाने पर मगरमच्छ की दुम हिलती रहती है। लगता है, अभी यह पूरी तरह नहीं मरा।

कछुआ : नहीं भाई, यह बिलकुल मर गया है। *(तभी मगरमच्छ अपनी दुम हिलाने लगता है)*

गीदड़ : (*भागकर दूर जाते हुए*) ओह ! अपने मित्र को देखो, अपने मित्र को देखो !

कछुआ : *(ऊँचे स्वर में)* खोल दो आँखें। भाग गया गीदड़। तुम बिलकुल मूर्ख हो। तुम उस चतुर गीदड़ की चाल में आ ही गए । अब उसे पकड़ना मुश्किल है।

1. किसने कहा? क्यों कहा?

(क) भूख के मारे मेरे प्राण निकल रहे हैं।

(ख) अब तो मैं बिलकुल अकेला रह गया।

(ग) पर वह तो ऐसा चतुर है कि पकड़ में ही नहीं आता।

(घ) अब तो मैं निश्चिंत होकर तालाब का पानी पी सकता हूँ।

(ङ) लगता है अभी यह पूरी तरह नहीं मरा।

2. अर्थ बताकर वाक्य बनाओ

समाप्त कठिन उपाय उपकार चतुर

3. पढ़ो, समझो और लिखो

द् + य = द्य	विद्या, विद्यालय, विद्यार्थी
द् + व = द्व	द्वार, विद्वान, द्वारिका
द् + ध = द्ध	युद्ध, शुद्ध, सिद्धार्थ
द् + ऋ = दृ	दृश्य, दृढ़, दृष्टि

4. बताओ

इस पाठ का कौन-सा भाग तुम्हें सबसे अच्छा लगता है? क्यों?

5. करो

(क) इस पाठ को कहानी के रूप में सुनाओ।

(ख) इस नाटक का अभिनय करो।

17

ईद

ईद	**ईदगाह**	**ईदी**	**पंक्ति**	**नमाज़**
मिठाइयाँ	**त्योहार**	**मुबारक**	**ईदुलफ़ितर**	**खर्च**

आज ईद का त्योहार है। छोटे-बड़े सभी ईदगाह जाने की तैयारी कर रहे हैं। सभी ने नए कपड़े पहने हैं। बच्चे बहुत खुश हैं। उन्हें आज ईदी मिली है। वे ईदी के पैसों को बार-बार गिनते हैं। इन्हीं पैसों से वे खिलौने, मिठाइयाँ और गुब्बारे खरीदेंगे। सबसे अधिक उत्साह उन्हें मेला देखने का है।

अब्दुल भी आज बहुत प्रसन्न है। उसके पिता ने उसके लिए नया कुरता, पाजामा और टोपी बनवाई है। नहा-धोकर वह भी ईदगाह जाने की तैयारी कर रहा है। उसकी बहिन सलमा ने भी नया कुरता और सलवार पहनी है। वह गोटेवाली चुन्नी ओढ़कर बहुत खुश है।
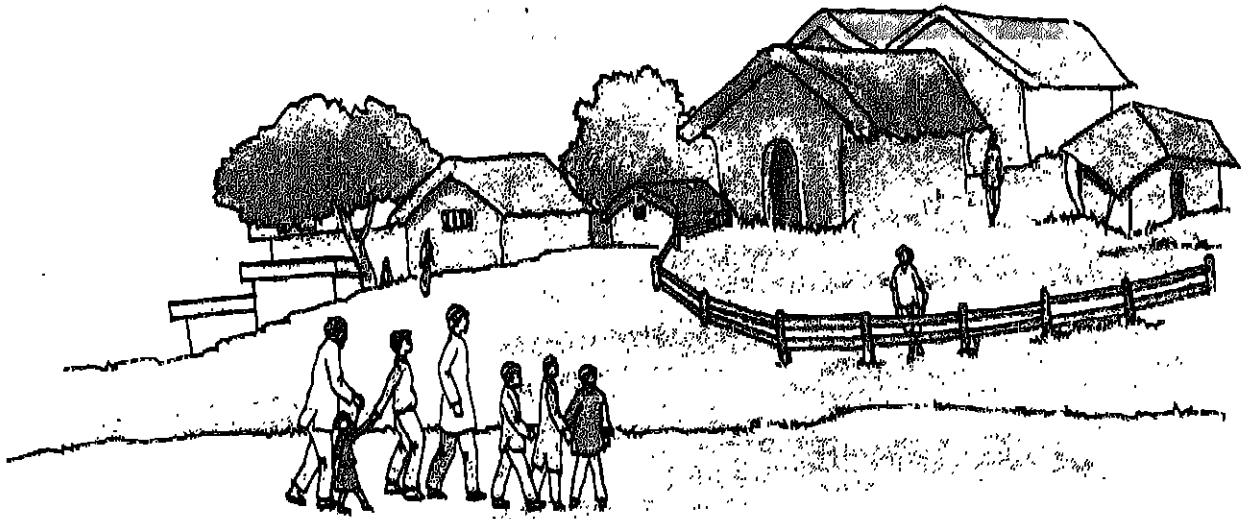
अध्यापन संकेत : बच्चे घरों में विभिन्न त्योहार मनाते हैं– चर्चा करें। विशेष रूप से ईद के बारे में पूछें कि यह त्योहार कैसे मनाया जाता है। यह खुशी और भाईचारे का त्योहार है– इसे उभारें। बच्चों की भूमिका को स्पष्ट करें। 'ईदी' के बारे में बताएँ कि ईदी के रूप में बच्चों को कुछ पैसे दिए जाते हैं। ईद से संबंधित शब्दों के अर्थ समझाएँ। मिठाई-मिठाइयाँ, दवाई-दवाइयाँ तथा इसी तरह के कुछ अन्य शब्दों के बहुवचन श्यामपट पर लिखकर बताएँ। त्योहारों से संबंधित कोई कविता याद करवाएँ।

गाँव से लोगों की टोली ईदगाह की तरफ़ निकल पड़ी है। साथ में बच्चे भी हैं। वे उछलते-कूदते, हँसते-खेलते जा रहे हैं। सब लोग ईदगाह पहुँच गए हैं। वहाँ सभी ने पंक्ति बनाकर नमाज़ पढ़ी। नमाज़ समाप्त होने पर सभी गले मिले और एक दूसरे को 'ईद मुबारक' कहा।

ईदगाह के बाहर मेला लगा हुआ है। मिठाई और खिलौनों की दुकानें सजी हैं। झूले भी लगे हुए हैं। बच्चे झूला झूल रहे हैं।

अब्दुल के पिता ने बच्चों के लिए मिठाई खरीदी। खिलौने की दुकान से अब्दुल ने सलमा और अपने लिए खिलौने खरीदे।

सभी घर लौटे। अब्दुल को देखते ही सलमा दौड़ी। अब्दुल ने उसे मिठाई और खिलौने दिए। सलमा बहुत खुश हुई।

आज घर-घर में मीठी सेवइयाँ बनी हैं। सभी सेवइयाँ खाते हैं और एक-दूसरे को 'ईद मुबारक' कहते हैं। इस ईद का नाम है – ईदुलफ़ितर, पर सब इसे 'मीठी ईद' कहते हैं।

शाम को विनोद, कुलदीप और विक्टर अब्दुल के घर 'ईद मुबारक' कहने आए। अब्दुल की माँ ने उन्हें मीठी सेवइयाँ खाने को दीं।

ईद, मिलन और भाईचारे का त्योहार है।

1. प्रश्नों के उत्तर दो

(क) ईद के दिन नमाज़ पढ़ने कहाँ जाते हैं?

(ख) ईद के दिन बच्चे बहुत खुश क्यों थे?

(ग) ईदगाह के बाहर क्या हो रहा था?

(घ) विनोद, कुलदीप और विक्टर अब्दुल के घर क्यों गए?

(ङ) ईदुलफ़ितर को 'मीठी ईद' क्यों कहते हैं?

2. वाक्य पूरे करो

ईद मुबारक   सेवइयाँ   पंक्ति   ईदगाह

(क) ईद के दिन लोग .... में नमाज़ पढ़ने जाते हैं।

(ख) ईदगाह में सभी ने .... बनाकर नमाज़ पढ़ी।

(ग) सब एक-दूसरे को .... कहते हैं।

(घ) आज माँ .... बनाएगी।

3. सही वाक्य चुनो

नीचे लिखे वाक्य पढ़ो। पाठ के अनुसार जो वाक्य ठीक हैं उन पर (√) निशान लगाओ।

( ) सभी नमाज़ पढ़ने ईदगाह जाते हैं।

( ) सलमा ने नाचने वाली गुड़िया खरीदी।

( ) ईद के दिन सभी नए कपड़े पहनते हैं।

( ) अब्दुल विक्टर के घर 'ईद मुबारक' कहने गया।

( ) सब एक-दूसरे को 'ईद मुबारक' कहते हैं।

4. लिखो

ईद का त्योहार कैसे मनाया जाता है – पाँच वाक्य लिखो।

5. श्रुतलेख

मिठाइयाँ	अब्दुल	पंक्ति	ईदुलफ़ितर	त्योहार
मुबारक	सेवइयाँ	ईदगाह	खिलौना ,	उत्साह

18

किसान
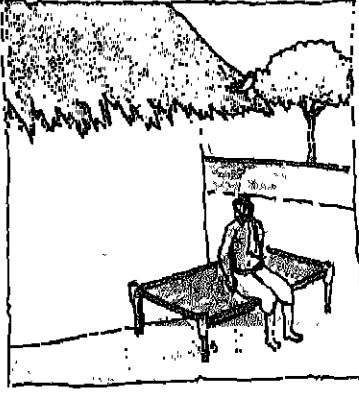
नहीं हुआ है अभी सवेरा
पूरब की लाली पहचान
चिड़ियों के जगने से पहले
खाट छोड़ उठ गया किसान।

खिला-पिलाकर बैलों को ले
करने चला खेत पर काम
नहीं कभी त्योहार न छुट्टी
उसको नहीं कभी आराम।
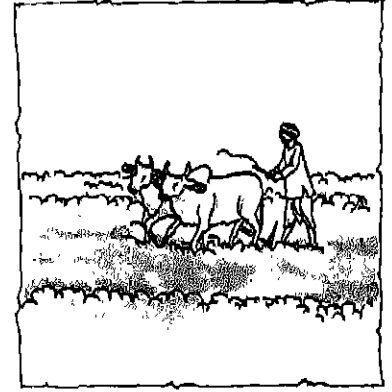
गरम-गरम लू चलती सन-सन
धरती जलती तवा समान
तब भी करता काम खेत पर
बिना किए आराम किसान।

अध्यापन संकेत : कविता का स्वयं इस प्रकार भावपूर्ण वाचन करें कि बच्चे इसे समझकर आनंद उठाएँ। **नहीं कभी त्योहार न छुट्टी, उसको नहीं कभी आराम, धरती जलती तवा समान, मूसलधार बरसता पानी** आदि के भाव स्पष्ट करें। 'समान' शब्द के प्रयोग द्वारा दो वस्तुओं या जीवों के बीच बराबरी दिखाई जाती है, जैसे– **तवे के समान तपना, बरफ़ के समान ठंडा** आदि। चर्चा कर ध्यान दिलाएँ : मेहनत से काम करने वालों का आदर करना चाहिए। संभव हो तो बच्चों को खेत पर ले जाएँ और किसान से बातचीत कर उसकी दिनचर्या के विषय में जानकारी दिलवाएँ।

बादल गरज रहे गड़-गड़-गड़
बिजली चमक रही चम-चम
मूसलधार बरसता पानी
ज़रा न रुकता लेता दम।

हाथ-पाँव ठिठुरे जाते हैं
घर से बाहर निकले कौन
फिर भी आग जला, खेतों की
रखवाली करता वह मौन।

है किसान को चैन कहाँ, वह
करता रहता हरदम काम
सोचा नहीं कभी भी उसने
घर पर रह करना आराम।

1. सही अर्थ ढूँढ़ो

नीचे लिखे (क) और (ख) वाक्यों को एक-एक करके पढ़ो और हर एक वाक्य के नीचे लिखे उसके सही अर्थ पर (√) लगाओ।

(क) धरती जलती तवा समान
[ ] धरती बहुत गरम हो जाती है।
[ ] धरती पर आग जलने लगती है।

(ख) हाथ-पाँव ठिठुरे जाते हैं।
[ ] हाथ-पाँव काम करना बंद कर देते हैं।
[ ] बहुत सरदी लगती है।

2. बताओ और लिखो

कौन-सी ऋतु है –
जब हाथ-पाँव ठिठुरते हैं ....
जब धरती तवे की तरह जलती है ....
जब बादल गरजते हैं ....

3. करो

इस कविता को याद करो और कक्षा में सुनाओ।

19

रास्ते का पत्थर

न्यायप्रिय	भ्रमण	वृद्ध	विद्यार्थियों
ग्राहक	मुख्य	आशीर्वाद	प्रशंसा

एक राजा था। उसे अपनी प्रजा से बहुत प्यार था। वह प्रजा की भलाई का सदा ध्यान रखता था। राजा दयालु और न्यायप्रिय था।
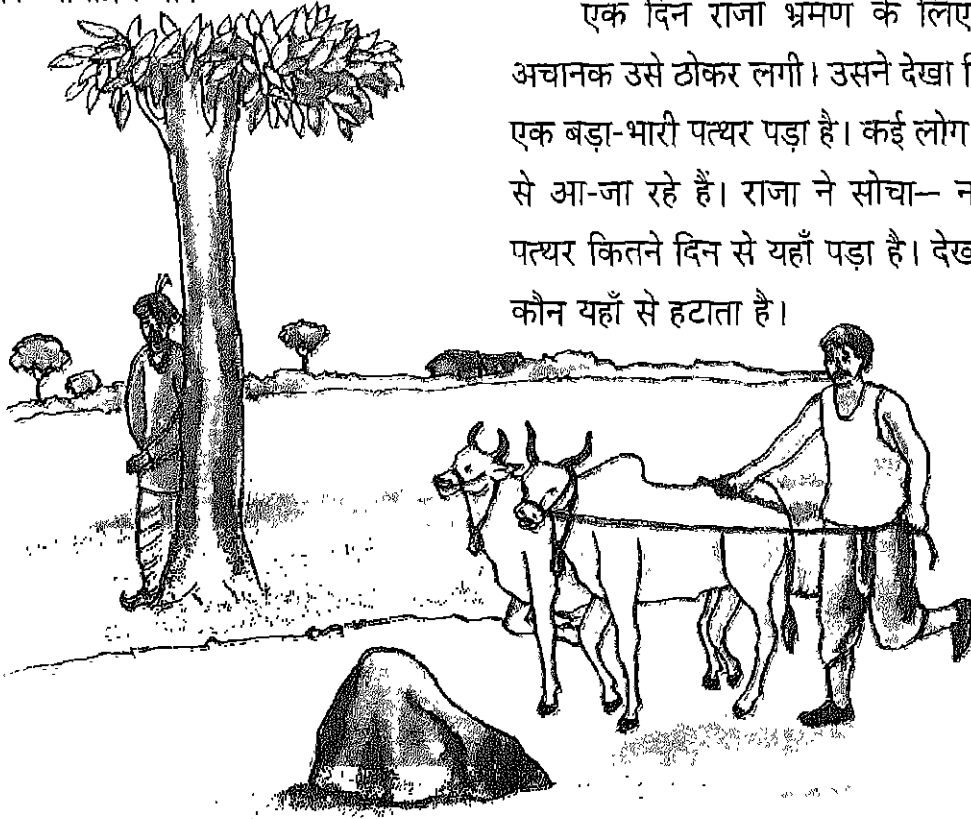
एक दिन राजा भ्रमण के लिए निकला। अचानक उसे ठोकर लगी। उसने देखा कि रास्ते में एक बड़ा-भारी पत्थर पड़ा है। कई लोग उसी रास्ते से आ-जा रहे हैं। राजा ने सोचा— न जाने यह पत्थर कितने दिन से यहाँ पड़ा है। देखता हूँ, इसे कौन यहाँ से हटाता है।

अध्यापन संकेत : बच्चों को स्वयं कहानी पढ़ने को प्रेरित करें जिससे उनमें मौन वाचन की आदत का विकास हो सके। कुछ प्रश्न श्यामपट पर लिखें और उनके उत्तर खोजने के लिए कहें। **श** और **स** के शुद्ध उच्चारण पर ध्यान दें। **प्रशंसा, किसान, शंकर, सिपाही, पाठशाला, आलसी, आशीर्वाद** आदि पढ़वाएँ तथा लिखवाएँ। **उभारें :** आगे बढ़कर स्वयं काम करने वाले व्यक्ति ही जीवन में सफल होते हैं।

राजा पास ही एक पेड़ के पीछे छिप गया। थोड़ी देर में राजा को एक किसान दिखाई दिया। वह अपने हल-बैल लेकर उसी रास्ते पर आ रहा था। किसान ने पत्थर को देखा और अपने बैलों को मोड़कर आगे निकल गया।

किसान के जाने के बाद एक दूधवाला डिब्बे में दूध लेकर उधर से निकला। उसने पत्थर नहीं देखा और ठोकर खाकर गिर पड़ा। दूधवाले के घुटने पर चोट लगी और सारा दूध बह गया। वह बड़ी मुश्किल से उठा और बड़बड़ाता हुआ बोला, "रास्ते में इतना बड़ा पत्थर पड़ा हुआ है और कोई उसे हटाता नहीं। मेरा इतना दूध गिर गया, अब मैं ग्राहकों को क्या दूँगा।"

दूधवाला लँगड़ाता हुआ अपने रास्ते चला गया। उसने भी पत्थर नहीं हटाया। जैसे ही राजा पेड़ के पीछे से निकला, उसे घोड़े की टाप सुनाई दी। वह फिर पेड़ के पीछे छिप गया।

इतने में घोड़ा पत्थर के पास आ गया। राजा ने देखा घोड़े पर एक सिपाही बैठा है। वह मस्ती से गा रहा है । अचानक घोड़े को पत्थर से ठोकर लगी। घोड़ा पीछे हटा। सिपाही गिरते-गिरते बचा। उसने नीचे देखा और ऊँचे स्वर में बोला, "मैं कई दिन से इस पत्थर को यहाँ पड़ा हुआ देख रहा हूँ, पर कोई इसे हटाता नहीं। यहाँ के लोग बहुत आलसी हैं।"

सिपाही ने अपना घोड़ा आगे बढ़ाया और दूर निकल गया।

कुछ ही देर में एक बूढ़ा आदमी अपने सिर पर फलों की टोकरी लिए आया और पत्थर से ठोकर खाकर गिर पड़ा। उसके सारे फल रास्ते में बिखर गए। तभी एक लड़का दौड़ता हुआ आया और बूढ़े को उठाते हुए बोला, "बाबा, कहीं चोट तो नहीं लगी?"

"नहीं बेटा, पर मेरे फल ...." बूढ़े ने कहा।

"आप यहीं रुकिए, मैं अभी फल उठाकर टोकरी में रख देता हूँ", लड़के ने कहा। उसने फल उठाकर वृद्ध की टोकरी में रख दिए। बालक को आशीर्वाद देते हुए वृद्ध चला गया। लड़के ने इधर-उधर देखा और फिर रास्ते से पत्थर हटाने लगा। पत्थर थोड़ा-सा हिला और फिर अपनी जगह आ गया। लड़के ने फिर प्रयत्न किया, पर पत्थर नहीं हिला। उसने इधर-उधर देखा और फिर पत्थर को हटाने का प्रयत्न करने लगा। अचानक पत्थर हिला। लड़के ने देखा कि एक आदमी उसकी सहायता कर रहा है। दोनों ने मिलकर ज़ोर लगाया और पत्थर को रास्ते से हटाकर एक ओर कर दिया।

उस आदमी ने पूछा, "बेटा, तुम कौन हो?"

लड़के ने कहा, "मैं शंकर हूँ," इसी गाँव में रहता हूँ।

दूसरे दिन शंकर पाठशाला पहुँचा । उसके मुख्य अध्यापक ने सभी विद्यार्थियों के सामने उसकी प्रशंसा की। उन्होंने बताया कि शंकर को राजा ने पुरस्कार दिया है।

1. प्रश्नों के उत्तर दो

(क) राजा पेड़ के पीछे क्यों छिप गया?

(ख) किसान ने पत्थर देखकर क्या किया?

(ग) लड़का पहले पत्थर क्यों नहीं हटा सका?

(घ) पत्थर अचानक कैसे हिल गया?

(ङ) राजा ने लड़के को इनाम क्यों दिया?

2. किसने कहा? किससे कहा? क्यों कहा?

(क) "देखता हूँ, इसे कौन हटाता है?"

(ख) "यहाँ के लोग बहुत आलसी हैं।"

(ग) "बाबा, कहीं चोट तो नहीं लगी?"

(घ) "बेटा, तुम कौन हो?"

3. पढ़ो, समझो और लिखो

(क)				(ख)	
	न्यायप्रिय	=	न्याय + प्रिय	भला	भलाई
	राजकुमार	=	....	बुरा	....
	राजमहल	=	....	लंबा	....
	राष्ट्रपति	=	....	चौड़ा	....
	पाठशाला	=	....	गहरा	....

4. श्रुतलेख

प्रजा भ्रमण न्यायप्रिय प्रयत्न विद्‌यार्थी
पुरस्कार प्रशंसा पत्थर वृद्‌ध आशीर्वाद

5. करो

इस कहानी के किसी अंश का अभिनय करो।

20

छब्बीस जनवरी की परेड

परेड	**राजपथ**	**राष्ट्रपति**	**सेनाध्यक्ष**	**राष्ट्रीय**
कमांडर	**टैंक**	**रेगिस्तान**	**अभिवादन**	**प्रदान**
रक्षामंत्री	**लोकनर्तक**	**लोकनृत्य**	**स्वीकार**	

नई दिल्ली
27 जनवरी, 2001

प्रिय अमर

तुम्हें मेरा पहला पत्र मिल गया होगा। कल छब्बीस जनवरी थी। हम छब्बीस जनवरी की परेड देखने गए थे। अगर तुम भी हमारे साथ होते तो कितना अच्छा होता !

इस परेड को देखने के लिए दूर-दूर से लोग आए हुए थे। हमारे पास परेड देखने का पास था। हम समय से कुछ पहले ही पहुँच कर कुरसियों पर बैठ गए। सूरज निकलने तक वहाँ काफ़ी भीड़ हो गई थी। बहुत से विदेशी भी इस परेड को देखने आए हुए थे। परेड के रास्ते के दोनों ओर बड़ी भीड़ थी। पुलिस के जवान घूम-घूमकर लोगों को ठीक तरह से बैठाने का प्रबंध कर रहे थे।

सब लोगों की आँखें राजपथ की ओर लगी हुई थीं। उसी समय विजय चौक से राष्ट्रपति की सवारी आती दिखाई दी।

राष्ट्रपति के आने पर प्रधानमंत्री, रक्षामंत्री और सेनाध्यक्ष ने उनका स्वागत किया। राष्ट्रपति ने सबका अभिवादन स्वीकार किया। फिर सब अपनी-अपनी जगह बैठ गए।

सबसे पहले राष्ट्रपति ने झंडा फहराया । उन्हें इक्कीस तोपों की सलामी दी गई। हैलीकॉप्टर से

अध्यापन संकेत : विद्यालय में गणतंत्र दिवस कैसे मनाया गया – चर्चा कीजिए। पूछिए– क्या तुमने दूरदर्शन पर छब्बीस जनवरी की परेड देखी? क्या-क्या देखा? तुम्हें क्या अच्छा लगा? क्या तुम भी परेड में शामिल होना चाहोगे? तुम परेड में क्या करना चाहोगे? पत्र लिखने के तरीके की ओर ध्यान दिलाएँ। वीरता पुरस्कार के संबंध में जानकारी दें। किसी पुरस्कार पाने वाले बच्चे के बारे में बताएँ कि उसे पुरस्कार क्यों दिया गया। छब्बीस जनवरी और पंद्रह अगस्त हमारे राष्ट्रीय त्योहार हैं– चर्चा करें।
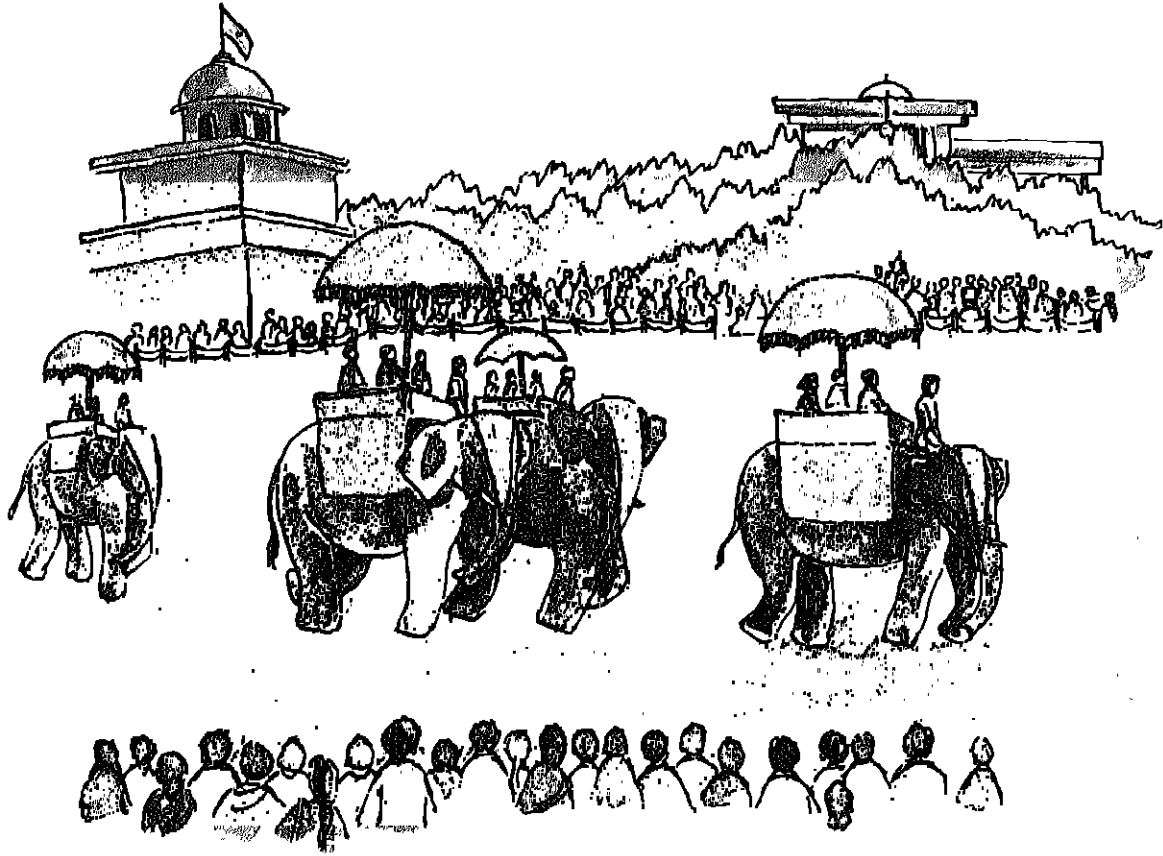
राजपथ पर फूलों की वर्षा की गई। इसके कुछ देर बाद परेड आती दिखाई दी। सबसे आगे एक जीप-गाड़ी थी। इसमें परेड कमांडर हाथ में खुली तलवार लिए खड़े थे। जीप धीरे-धीरे आगे बढ़ रही थी। इसके पीछे सेना के जवान पंक्तियों में कदम-से-कदम मिलाकर चल रहे थे।

परेड में सभी तरह की सैनिक टुकड़ियाँ थीं। प्रत्येक टुकड़ी की अलग-अलग वरदी थी। सभी के अपने-अपने बैंड थे जिनकी धुनें बड़ी अच्छी लग रही थीं। थल-सेना के सैनिकों के पीछे सफ़ेद वरदी पहने नौसेना के जवान थे। उनके पीछे-पीछे वायु-सेना के जवान चल रहे थे। कितना सुंदर था वह दृश्य!

अब घुड़सवार आ रहे थे। घोड़ों पर बैठे हुए ये सैनिक बहुत अच्छे लग रहे थे। उनके पीछे-पीछे रेगिस्तान में लड़ने वाले जवान थे। वे ऊँटों पर बैठे थे। यह देखकर बड़ा आश्चर्य होता था कि घोड़े और ऊँट भी कदम से कदम मिलाकर पंक्तियों में चल रहे थे।

घोड़ों और ऊटों के बाद आईं बड़ी-बड़ी फ़ौजी गाड़ियाँ जिनमें से किसी पर तोपें और किसी पर मशीनगनें रखी हुई थीं। इनके पीछे धड़-धड़ करते टैंक चल रहे थे। जब फ़ौजी गाड़ियाँ सड़क के दोनों ओर बैठे लोगों के सामने से निकलतीं तब वे इन्हें आश्चर्य से देखते रह जाते।
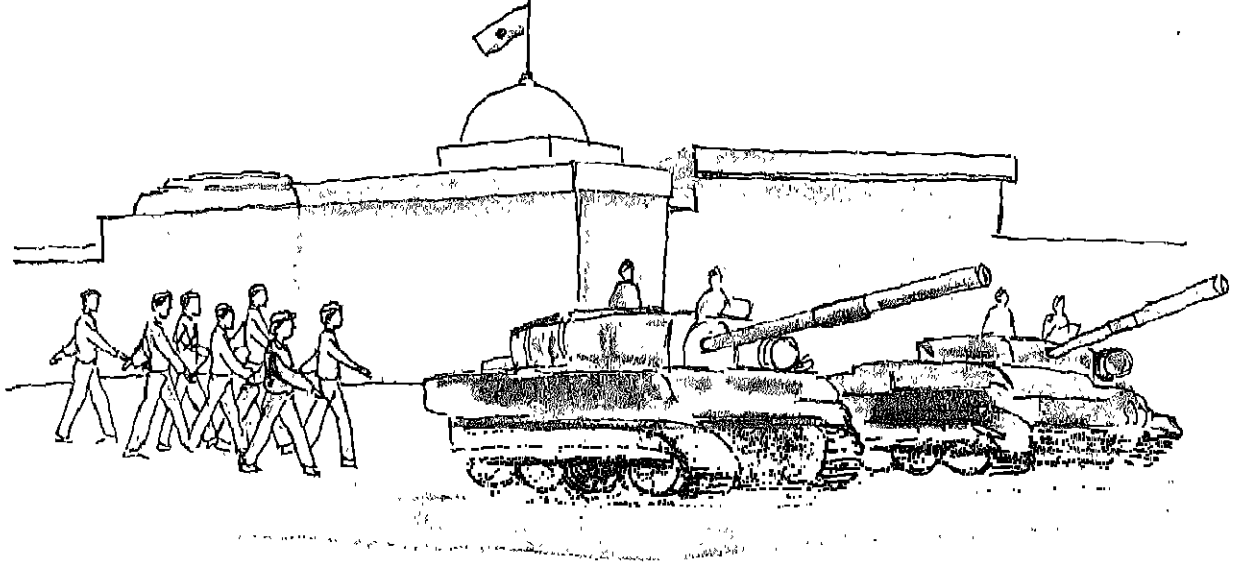
फ़ौजी गाड़ियों के पीछे चल रहे थे विद्यालयों के सैकड़ों विद्यार्थी। वे कदम-से-कदम मिलाकर चलते हुए देशभक्ति के गीत गा रहे थे। उनका व्यायाम-प्रदर्शन और नृत्य देखने लायक था । वे राष्ट्रपति के सामने से निकलते हुए उन्हें सलामी देते और आगे बढ़ जाते।

तभी सजे हुए हाथी आते दिखाई दिए। इन पर बैठे थे– वे बहादुर बच्चे जिन्हें इस वर्ष बहादुरी के कामों के लिए 'वीरता पुरस्कार' प्रदान किया गया था।

इतने में अलग-अलग राज्यों की झाँकियाँ निकलनी शुरू हुई। इनमें अपने-अपने राज्य की खास-खास बातें दिखाई गई थीं। किसी पर खेती का दृश्य था, तो किसी पर कारखाने का। एक झाँकी तो पूरी की पूरी फूलों से ही बनी थी। वे झाँकियाँ बहुत सुंदर थीं।

अंत में आकाश में उड़ते हवाई जहाज़ों ने राष्ट्रपति को सलामी दी। हवाई जहाज़ राष्ट्रीय झंडे के तीन रंगों का धुआँ छोड़ रहे थे। देखकर लगता था मानो आकाश में बहुत से तिरंगे उड़ रहे हों। तभी राजपथ से तीन रंगों के गुब्बारे भी छोड़े गए। कैसा लुभावना दृश्य था वह !

अमर ! अगले साल तुम दिल्ली अवश्य आना ! हम दोनों मिलकर परेड देखेंगे। अपनी माता जी और पिता जी को मेरा प्रणाम कहना।

तुम्हारा मित्र

राजेंद्र

1. प्रश्नों के उत्तर दो

(क) राजेंद्र ने अमर को पत्र क्यों लिखा?

(ख) छब्बीस जनवरी की परेड में किसको सलामी दी जाती है।

(ग) झाँकियों में क्या-क्या होता है?

(घ) परेड में हवाई जहाज़ क्या करते हैं?

(ङ) परेड में तुम किस रूप में भाग लेना पसंद करोगे?

2. वाक्यों के सही अर्थ बताओ

नीचे लिखे (क) वाक्य को पढ़ो। फिर इसके नीचे लिखे अर्थों में से सही अर्थ पर (√) लगाओ। इसी तरह से (ख) वाक्य करो।

(क) लोगों की आँखें राजपथ की ओर लगी हुई थीं।

[ ] लोग राजपथ की ओर देख रहे थे।

[ ] लोग राजपथ की ओर आ रहे थे।

(ख) कैसा लुभावना दृश्य था वह!

[ ] भीड़ भरा दृश्य था।

[ ] बहुत सुंदर दृश्य था।

3. बोलो और समझो

स	–	सब	साल	सूरज	समुद्र	हँसना	छब्बीस
श	–	शत्रु	शाल	शोभा	शस्त्र	शीशा	शौक

4. करो

छब्बीस जनवरी की परेड से संबंधित चित्रों का संग्रह करो।

21

जादू का बुरुश

बुरुश	शौक	चित्रकार	अभ्यास	क्रोध	प्रकार
प्रबंध	निर्धन	आवश्यकता	बेचैन	आँगन	

सुरेश एक निर्धन बालक था। वह पढ़ने-लिखने में बहुत होशियार था। उसे चित्र बनाने का बहुत शौक था। अपने घर की दीवारों पर उसने तरह-तरह के सुंदर चित्र बना रखे थे।

गाँव के लोग उन चित्रों को देखते और आश्चर्य करते। वे कहते, "शाबास सुरेश ! तुम बहुत सुंदर चित्र बनाते हो। यदि अभ्यास करते रहे तो एक दिन बहुत अच्छे चित्रकार बनोगे।"

सुरेश उनकी बात सुनकर बहुत प्रसन्न होता। वह चित्र बनाने का और अधिक अभ्यास करता। लेकिन उसके पास बुरुश और रंग न थे। वह किसी पेड़ की डाली से बुरुश बनाता और फूल-पत्तियों से रंग निकालता।

सुरेश कई बार सोचता, "मेरे पास एक बुरुश होता तो कितना अच्छा होता !" सुरेश के मन की यह इच्छा भी पूरी हो गई। एक दिन वह पाठशाला से घर लौटा तो आँगन में एक बुरुश पड़ा देखा। उसे देखकर वह बहुत प्रसन्न हुआ । दौड़कर जब उसने बुरुश उठाया तो उसे नीचे एक कागज़ दिखाई दिया। कागज़ पर लिखा था – यह जादू का बुरुश है । इसे सोच-समझकर काम में लाना।

"कितना अच्छा बुरुश है ! इससे तो मैं बहुत सुंदर चित्र बना सकूँगा", सुरेश ने मन-ही-मन सोचा। उसके हाथ चित्र बनाने को बेचैन हो रहे थे। उसने तुरंत एक चिड़िया का चित्र बना दिया। चित्र पूरा होते ही, वह सचमुच की चिड़िया बन गई। सुरेश आश्चर्यचकित देखता ही रह गया और चिड़िया फुर्र से उड़ गई।

अध्यापन संकेत : कहानी स्वयं पढ़कर सुनाएँ । बच्चों से कहानी का एक-एक अंश पढ़वाएँ। प्रसन्न, बुरुश, क्रोध, समुद्र तथा निर्धन, आश्चर्य, फुर्र, मूर्ख में र और ॅ के प्रयोग की ओर ध्यान दिलाएँ। 'चित्र' शब्द के अंत में कार जोड़ने से चित्रकार शब्द बनता है। इसी तरह मूर्ति + कार = मूर्तिकार, शिल्प + कार = शिल्पकार आदि शब्दों के उदाहरण दें। कहानी का अभिनय कराएँ । ध्यान दिलाएँ : किसी ताकत या योग्यता का उपयोग सोच-समझकर ही करना चाहिए। उसका गलत इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।
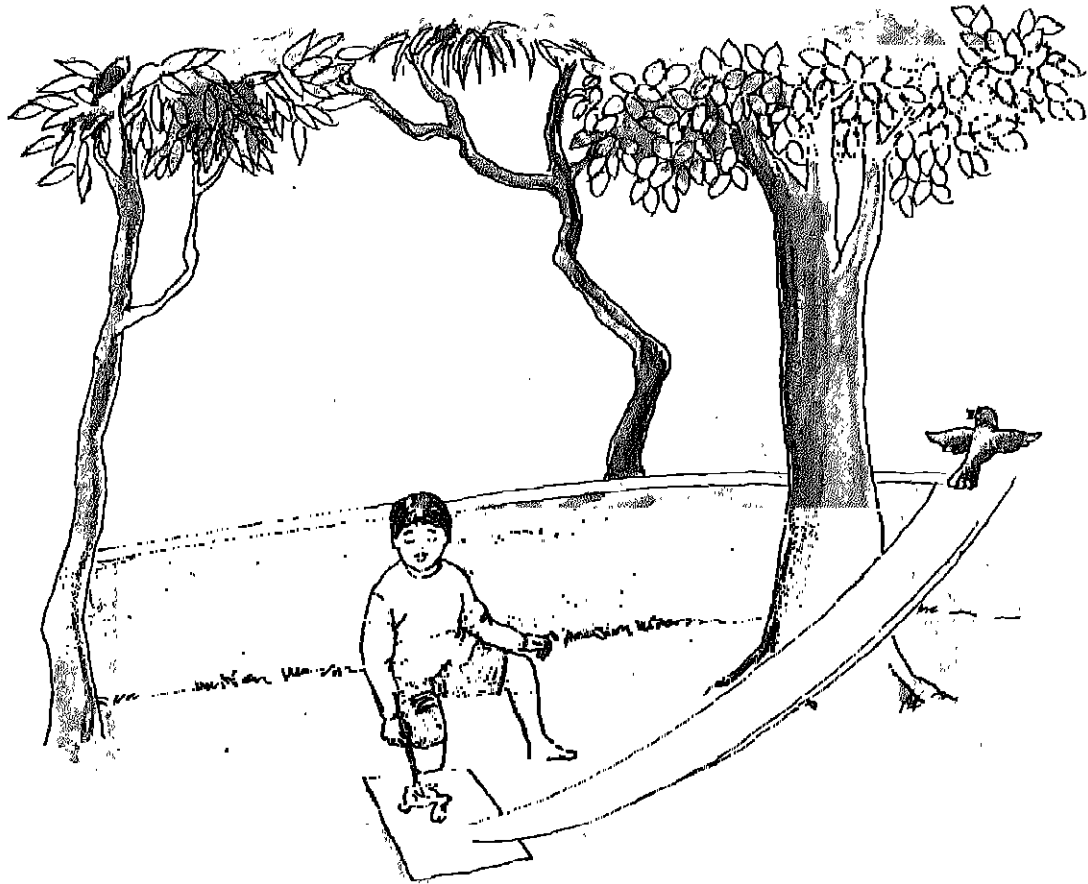
अब उसने खरगोश का एक चित्र बनाना प्रारंभ किया। जैसे ही चित्र पूरा हुआ, उसने देखा कि उसके सामने सचमुच का एक खरगोश है। "अरे ! यह तो सचमुच जादू का बुरुश है," वह खुशी से चिल्ला उठा।

सुरेश उस बुरुश से जो भी चित्र बनाता, वह सचमुच की चीज़ बन जाती। सुरेश बहुत ही बुद्धिमान बालक था। वह खूब सोच-समझकर गाँववालों की ज़रूरत की चीज़ों के चित्र बनाता। फिर वह उन चीज़ों को गाँववालों को दे देता। इससे गाँववाले बहुत प्रसन्न होते। धीरे-धीरे आसपास के गाँवों में भी सुरेश का नाम फैल गया। लोग उसके पास सहायता के लिए आने लगे।

कुछ ही दिनों में सुरेश और उसके बुरुश की बात राजा तक भी जा पहुँची। राजा को बहुत आश्चर्य हुआ और उसने सुरेश को बुला भेजा। राजा ने सुरेश से तरह-तरह की चीज़ों के चित्र बनाने को कहा। सुरेश जानता था कि राजा को इन चीज़ों की कोई आवश्यकता नहीं है। इसलिए उसने कोई चित्र नहीं बनाया।

राजा को बहुत क्रोध आया। उसने सुरेश से बुरुश छीन लिया और बोला, "मूर्ख ! देख मैं इससे अभी सोने का पहाड़ बनाता हूँ।"

राजा ने पहाड़ का चित्र बनाना शुरू किया। परंतु जैसे ही वह चित्र पूरा हुआ, सोने के पहाड़ की जगह उसके सामने पत्थर का एक काला पहाड़ खड़ा था। देखते-ही-देखते उस पहाड़ के पत्थर इधर-उधर गिरने लगे।

राजा को बड़ा आश्चर्य हुआ। अब उसने सोने की छड़ का चित्र बनाया। जैसे ही चित्र पूरा हुआ, सोने की छड़ की जगह काला साँप बन गया। साँप बड़ी तेजी से राजा पर झपटा, राजा बुरी तरह डर गया। उसने बुरुश एक ओर फेंक दिया और अपने सिपाहियों को आज्ञा दी, "इस शैतान को अभी पकड़ लो और जेल में बंद कर दो।"
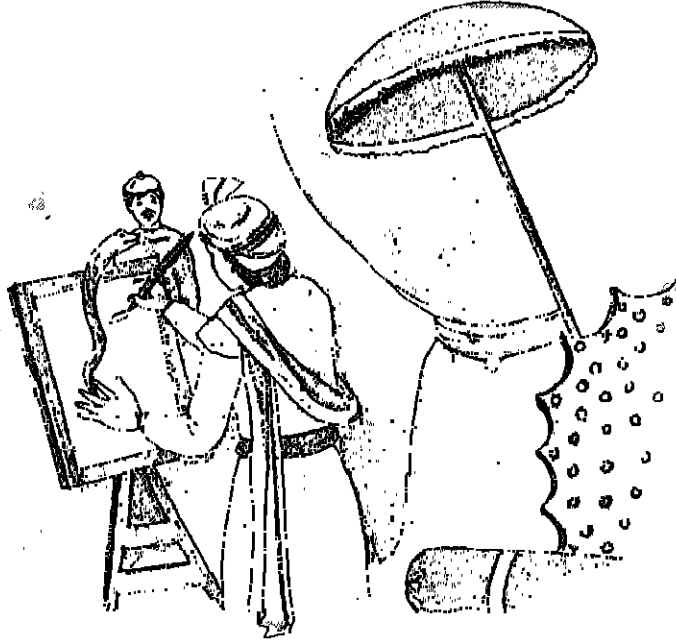
सुरेश ने दौड़कर बुरुश उठाया ही था कि सिपाहियों ने उसे पकड़ लिया और जेल में बंद कर दिया।

जेल की कोठरी में बहुत अँधेरा था। वहाँ सरदी भी बहुत थी। सुरेश को खाने-पीने को भी कुछ नहीं दिया गया। पर सुरेश को जिस चीज़ की आवश्यकता होती वह उसका चित्र बनाता और वह वस्तु उसे मिल जाती।

तीन-चार दिन बाद राजा सुरेश को देखने गया। उसने खिड़की से झाँककर देखा कि सुरेश की कोठरी में सब प्रकार का प्रबंध है। वह बड़े आराम से कोठरी की दीवारों पर चित्र बना रहा है।

यह देखकर राजा गुस्से से लाल हो गया। उसने सिपाहियों से कहा, "इसे पकड़कर मेरे पास लाओ।"

आज्ञा पाते ही सिपाही कोठरी में घुसे, पर वहाँ कोई न था। सिपाहियों ने बाहर देखा कि सुरेश एक घोड़े पर चढ़कर भागा जा रहा है। सिपाही भी अपने-अपने घोड़ों पर बैठकर उसका पीछा करने लगे।

सुरेश ने जल्दी से अपने और सिपाहियों के बीच समुद्र का चित्र बना दिया। लहराता हुआ समुद्र देखकर सिपाही आगे न बढ़ सके।

इस तरह सुरेश राजा की पहुँच से बाहर हो गया। वह जहाँ-जहाँ जाता, गरीब लोगों की ज़रूरत की चीज़ों के चित्र बना-बनाकर उनकी सहायता करता। लोग उससे बहुत प्रसन्न रहते ।

1. प्रश्नों के उत्तर दो

(क) सुरेश को कैसे पता चला कि बुरुश जादू का था?
(ख) सुरेश लोगों की सहायता किस तरह करता था?
(ग) सुरेश ने राजा के लिए चित्र क्यों नहीं बनाए?
(घ) राजा ने सुरेश के साथ कैसा व्यवहार किया?
(ङ) सुरेश ने समुद्र का चित्र क्यों बनाया?

2. लिखो

नीचे लिखे शब्दों में से कौन-से शब्द सुरेश के लिए आएँगे और कौन-से राजा के लिए?

चतुर बुरा अच्छा चित्रकार निर्दयी
लालची मेहनती साहसी डरपोक

3. मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग करो

गुस्से से लाल होना = बहुत गुस्सा होना
नाम फैलना = बहुत मशहूर होना

4. इनके लिए एक शब्द बताओ

जो मूर्ति बनाए = मूर्तिकार
जो चित्र बनाए =
जो सेना में काम करे =
जहाँ पढ़ने जाते हैं =
जो इलाज करता है =

5. सोचो और बताओ

तुम्हें यदि जादू का बुरुश मिल जाए तो क्या करोगे?

22

जंगल का राजा

सिंह	दहाड़ना	पैने	केसरी	गद्दीदार
पालन-पोषण	अधिकतर	संख्या	सुरक्षा	निश्चिंत

क्या तुम जानते हो कि जंगल का राजा कौन है? सिंह । हाँ, सिंह ही जंगल का राजा है। जंगल में हाथी जैसे बड़े-बड़े पशु भी पाए जाते हैं पर सबसे अधिक निडर और साहसी सिंह ही होता है। देखने से ही यह जंगल का राजा लगता है। जब यह दहाड़ता है तो सारा जंगल काँप उठता है।
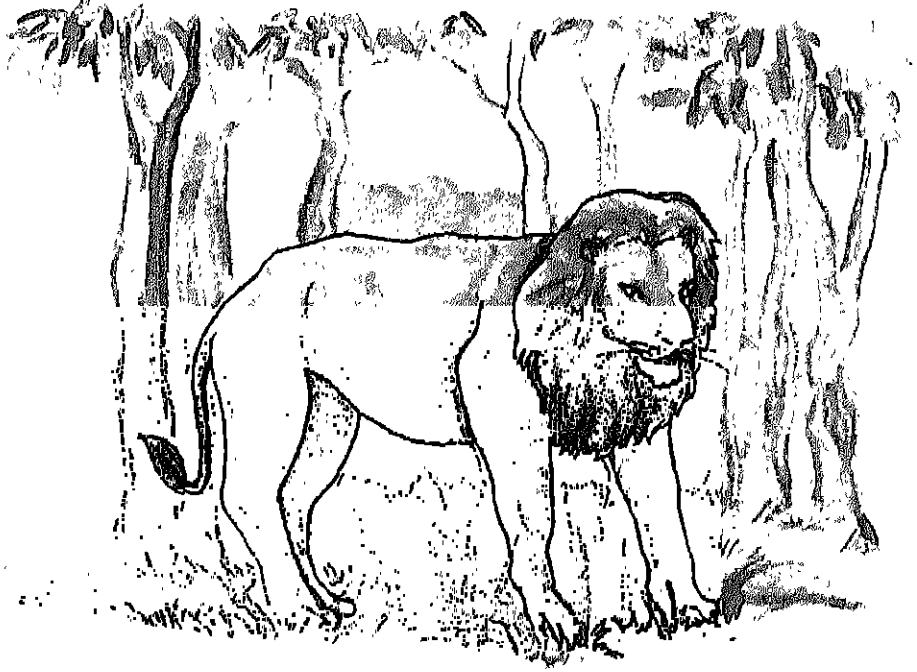
अध्यापन संकेत : जंगली पशुओं के बारे में बातचीत करें। पूछें– जंगल का राजा कौन है? यह जंगल का राजा क्यों कहलाता है? आदि। कठिन शब्दों – **गद्दीदार, केसरी, पैने, सुरक्षा, संख्या** को अर्थपूर्ण वाक्यों में स्पष्ट करें। वाक्यांशों के लिए एक शब्द के रूप में मांसाहारी जैसे कुछ अन्य शब्द बताएँ। जंगली जानवर पर्यावरण की रक्षा में हमारे सहायक हैं अतः इनकी सुरक्षा का विशेष ध्यान रखना चाहिए– इस पर बल दें। अतिरिक्त जानकारी के लिए पुस्तकालय से 'सिंह' के बारे में कोई पुस्तक लेकर पढ़वाएँ । संरक्षित वनों के नाम तथा जिस राज्य में वे हैं लिखकर चार्ट बनवाएँ।

सिंह बिल्ली जाति का बलवान पशु है। इसके शरीर की बनावट और चाल बिल्ली जैसी ही होती है। बिल्ली की तरह यह भी अंधेरे में देख सकता है। इसके पंजे गद्दीदार होते हैं। इसीलिए जब सिंह चलता है तो आवाज़ बिलकुल नहीं होती। इसके पंजों के नाखून बहुत पैने होते हैं और दबाव पड़ने पर बाहर निकल आते हैं।

सिंह के बच्चे शुरू में बिलकुल बिल्ली के बच्चों जैसे ही लगते हैं। उनके शरीर पर पतली-पतली धारियाँ होती हैं। बच्चे जैसे-जैसे बड़े होते जाते हैं, धारियाँ कम होती जाती हैं और कुछ दिनों में बिलकुल समाप्त हो जाती हैं। तब इनका रंग भूरा हो जाता है।

सिंह आकार में सिंहनी से बड़ा होता है। उसकी गरदन पर लंबे-लंबे बाल होते हैं जिन्हें आयाल या केसर कहते हैं। इसी से सिंह को 'केसरी' भी कहा जाता है।

सिंह मांस खाता है। वह सूर्य छिपने पर ही शिकार की खोज में निकलता है। दिन में यह जहाँ भी जाता है, वहाँ चिड़ियाँ शोर मचाकर इसके आने की सूचना अन्य पशुओं को दे देती हैं। इसलिए दिन में यह किसी झाड़ी में सो जाता है और अँधेरा होने पर ही शिकार के लिए निकलता है। कभी-कभी यह शिकार की खोज में नदी या तालाब के किनारे छिपकर बैठ जाता है। जब कोई पशु पानी पीने आता है तब वह उस पर अचानक हमला कर देता है।

सिंह और सिंहनी दोनों मिलकर बच्चों का पालन-पोषण करते हैं। परंतु बच्चों को शिकार करना सिंहनी ही सिखाती है। वह अपने बच्चों को शिकार पर झपटना और पंजे चलाना सिखाती है। शिकार को खाने के बाद सिंहनी चाटकर उनके मुँह साफ़ कर देती है। कभी-कभी बच्चे शिकार पर झगड़ भी पड़ते हैं। तब सिंहनी माँ आती है और प्यार से एक थप्पड़ लगाती है। बच्चे शांत हो जाते हैं।

सिंह कई देशों में पाए जाते हैं। भारत में ये गुजरात में गिरनार के जंगलों में पाए जाते हैं।

मनुष्य इनका शिकार करता रहा है, इसलिए सिंहों की संख्या कम हो गई है। भारत सरकार ने इनके शिकार पर रोक लगा दी है। सिंह वन की शान है इसलिए इनकी रक्षा की जानी चाहिए।

1. प्रश्नों के उत्तर दो

(क) सिंह के चलने से पैरों की आवाज़ क्यों नहीं होती?

(ख) सिंह दिन में शिकार क्यों नहीं करता?

(ग) सिंह के बच्चे शिकार करना कैसे सीखते हैं?

(घ) भारत में सिंह कहाँ पाया जाता है?

2. पढ़ो और करो

उन वाक्यों पर (√) लगाओ जो सिंह की विशेषता बताते हैं।

[ ] सिंह सबसे अधिक बलवान पशु है।

[ ] सिंह केवल दिन में शिकार करता है।

[ ] सिंह रात को देख सकता है।

[ ] सिंह निडर और साहसी होता है।

[ ] सिंह की गरदन पर छोटे-छोटे बाल होते हैं।

[ ] जब सिंह दहाड़ता है, पूरा जंगल काँप उठता है।

3. लिंग बदलो

शेर	×	शेरनी	बाघ	×	बाघिन
सिंह	×	....	नाग	×	....

4. करो

बिल्ली जाति के पशुओं के चित्र एकत्रित करो और उनसे एक चार्ट बनाओ।

23

अर्जुन का निशाना

पांडु	पांडव	युधिष्ठिर	द्रोणाचार्य	लक्ष्य
अस्त्र-शस्त्र	शिष्य	परीक्षा	मिट्टी	

बात बहुत पहले की है। हमारे देश में एक राजा थे– पांडु । पांडु के पाँच पुत्र थे जिन्हें पांडव कहते हैं। युधिष्ठिर इनमें सबमें बड़े थे। युधिष्ठिर से छोटे थे– भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव।

पाँचों राजकुमार गुरु द्रोणाचार्य से अस्त्र-शस्त्र चलाना सीखते थे। भीम गदा चलाने में बहुत कुशल थे और अर्जुन धनुष-बाण चलाने में।

गुरु द्रोणाचार्य समय-समय पर अपने शिष्यों की परीक्षा लिया करते थे। एक दिन उन्होंने पेड़ पर मिट्टी की एक चिड़िया टाँग दी। फिर राजकुमारों से चिड़िया की आँख पर बाण मारने को कहा।

अध्यापन संकेत : महाभारत की चर्चा करते हुए अर्जुन के बारे में प्रश्न पूछें। प्रश्नों द्वारा पाठ में आए नामों को निकलवाएँ तथा श्यामपट पर लिखें। शुद्ध उच्चारण पर बल दें। विभिन्न समूहों में बच्चों से बारी-बारी से विभिन्न पात्रों का अभिनय करवाएँ।

गुरु द्रोणाचार्य ने बारी-बारी से अपने सभी शिष्यों को बुलाया। उन्होंने चिड़िया की ओर संकेत करते हुए पूछा, "उधर देखो, तुम्हें क्या दिखाई देता है?"

किसी ने कहा, "गुरुजी, मुझे राजकुमार, पेड़ और चिड़िया" सब कुछ दिखाई दे रहा है। किसी ने कहा, "मुझे पेड़ और चिड़िया दिखाई दे रही है।" किसी ने कहा, "मुझे चिड़िया के पंख दिखाई दे रहे हैं।"

अर्जुन की बारी आने पर द्रोणाचार्य ने उससे भी वही प्रश्न किया। अर्जुन ने कहा, "गुरुजी ! मुझे तो केवल चिड़िया की आँख दिखाई दे रही है।"

अब द्रोणाचार्य ने बारी-बारी से सभी को बाण चलाने का आदेश दिया। अर्जुन का निशाना तो ठीक आँख पर लगा किंतु और भाइयों का निशाना चूक गया।

द्रोणाचार्य ने सभी राजकुमारों को बताया, "क्या तुम लोग समझ गए कि अर्जुन का तीर निशाने पर क्यों लगा? जिसे केवल लक्ष्य दिखाई दे वही सफल होता है। तुम लोगों को लक्ष्य के साथ-साथ और बहुत सी चीज़ें भी दिखाई दे रही थीं। इसलिए तुम्हारा ध्यान बँट गया और निशाना ठीक नहीं बैठा। अर्जुन का ध्यान केवल चिड़िया की आँख पर था, इसलिए उसका निशाना बिलकुल ठीक बैठा और बाण ठीक चिड़िया की आँख पर लगा।"
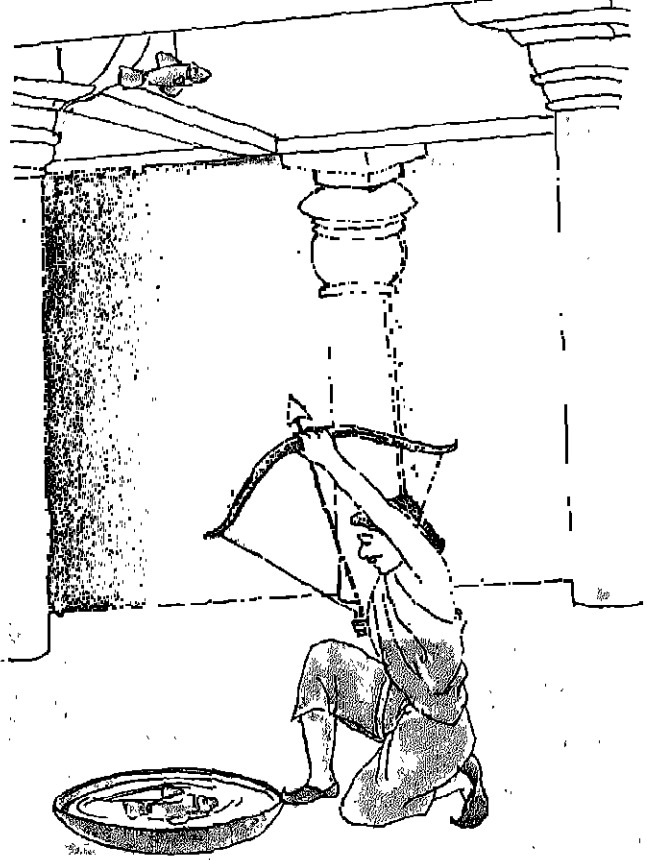
1. प्रश्नों के उत्तर दो

(क) पांडव कौन थे? उनके नाम बताओ।

(ख) द्रोणाचार्य राजकुमारों को क्या सिखाते थे?

(ग) द्रोणाचार्य ने अपने शिष्यों की परीक्षा किस प्रकार ली?

(घ) अर्जुन के भाइयों का निशाना क्यों चूक गया?

2. विपरीत अर्थवाले शब्द लिखो

युद्ध	×	....	कम	×	....
शत्रु	×	....	निर्धन	×	....
विजय	×	....	वीर	×	....

3. श्रुतलेख

अर्जुन	द्रोणाचार्य	नकुल	युधिष्ठिर	अस्त्र-शस्त्र
लक्ष्य	शत्रु	धनुष-वाण	शिष्य	मिट्टी

4. करो

इस कहानी का नाटक के रूप में अभिनय करो।

24

पहेलियाँ और चुटकुले

पहेलियाँ

एक थाल मोती से भरा
सिर के ऊपर औंधा धरा
जैसे-जैसे थाल फिरे
मोती उससे एक न गिरे।

ऊँट की बैठक, हिरन की चाल
कौन-सा जानवर, जिसके दुम न बाल?

दिन को सोए, रात को रोए
जितना रोए, उतना खोए।

ऐसा लिखिए शब्द बनाए
फूल, फल, मिठाई बन जाए।

पंछी एक देखा अलबेला
पंख बिना उड़ रहा अकेला
बांध गले में लंबी डोर
नाप रहा अंबर का छोर।

(उत्तर पृष्ठ 75 पर देखो)

अध्यापन संकेत : यह पाठ बच्चों के मनोरंजन तथा सूझबूझ की क्षमता बढ़ाने के लिए है। पहेलियाँ बुझाकर उत्तर पूछें। न बता पाने पर सहायता करें। कुछ अन्य पहेलियाँ भी बुझाने को दें। उन्हें मनपसंद पहेलियाँ याद करने और साथियों तथा घर के लोगों को सुनाने को प्रेरित करें।

बीरबल तथा तेनालीराम के प्रसिद्ध चुटकुले सुनाएँ और कुछ उनसे पढ़वाएँ। 'बीरबल की खिचड़ी' का अभिनय करवाएँ। इसमें बारी-बारी से हर बच्चे को भाग लेने का अवसर दें। पत्र-पत्रिकाओं से पहेलियाँ तथा चुटकुले एकत्र करवाकर समय-समय पर कक्षा में उनका उपयोग करें।

चुटकुले

अमित	:	भाई ! रात को सूर्य क्यों नहीं निकलता?
सुमित	:	निकलता तो है।
अमित	:	फिर दिखाई क्यों नहीं देता?
सुमित	:	अरे ! अँधेरे में दिखाई कैसे देगा?
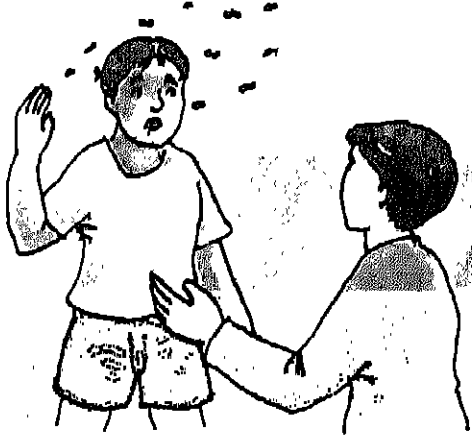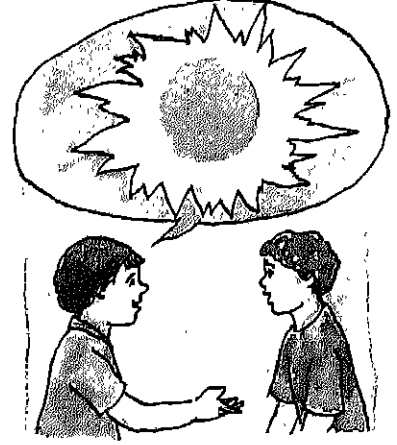
एक मित्र	:	भाई मनोज, तुम्हारे घर की मक्खियाँ बहुत तंग कर रही हैं। बार-बार उड़ाता हूँ फिर भी आकर मुँह पर बैठ जाती हैं।
मनोज	:	मैं भी इनकी आदत से परेशान हूँ। जो भी गंदी चीज़ देखती हैं, उसी पर बैठ जाती हैं।

मालकिन	:	रामू, मैंने कहा था, पूजा के लिए धूप ले आना।
रामू	:	मगर लाता कहाँ से मालकिन? आज तो दिन भर बादल छाए रहे।

पहेलियों के उत्तर

1. आकाश 2. मेंढक 3. मोमबत्ती 4. गुलाबजामुन 5. पतंग
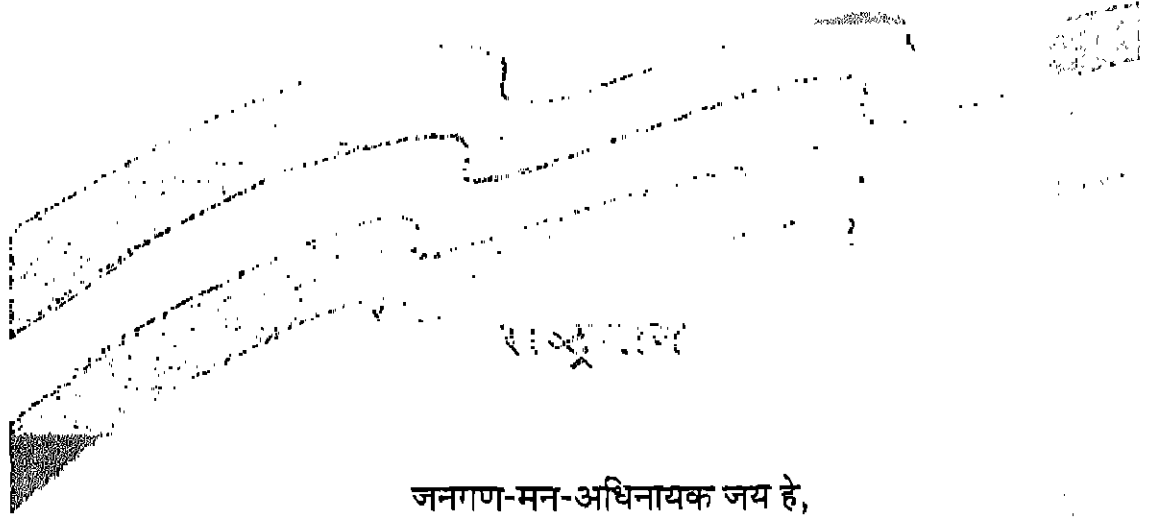
जनगण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब-सिंधु-गुजरात-मराठा,
द्राविड़-उत्कल-बंग,
विंध्य-हिमाचल, यमुना-गंगा
उच्छल जलधि-तरंग,
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मागे,
गाहे तव जय-गाथा।
जनगण-मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय, जय हे।

कुछ कठिन शब्द और उनके अर्थ

1. बढ़े चलो

ध्वजा, ध्वज = झंडा, **दहाड़** = सिंह की आवाज़, **तड़क** = बिजली का गिरना, टूटना

2. कबूतर और मधुमक्खियाँ

मधुमक्खी = शहद की मक्खी, **प्रयत्न** = कोशिश, **उपाय** = तरीका, **प्रतीक्षा** = इंतज़ार, **विश्वास** = भरोसा, **रक्षा** = बचाव, बचाना

3. स्वच्छता

स्वच्छता = सफ़ाई, **प्रथम** = पहला, **बदबू** = दुर्गंध, **भिनकना** = भिन-भिन करना, **उत्साह** = हौसला, **दोष** = बुराई, **व्यक्ति** = आदमी, **सप्ताह** = हफ्ता, सात दिन

4. कोयल

मिसरी = मिठास, चीनी से बनी, **मिश्री** = मिठाई, **संदेश** = खबर, **धरती** = ज़मीन, पृथ्वी, **मेघ** = बादल, **भली** = अच्छी

5. ईश्वरचंद्र विद्यासागर

संकेत = इशारा, **विशेष** = खास, **चरण** = पाँव

6. तूफ़ान की सूचना

सूचना = खबर, **भंडार** = ढेर, खज़ाना, **समुद्र** = सागर, **तट** = किनारा, **वृद्ध** = बूढ़ा, **स्त्रियाँ** = औरतें, **चिंतित** = सोच (फ़िक्र) में पड़ा हुआ, **डोंगी** = छोटी नाव, **सराहना** = तारीफ़, प्रशंसा

7. रक्षाबंधन

पूर्णिमा = पूर्णमासी, जिस रात पूरा चाँद निकले, **त्योहार** = उत्सव, **रक्षाबंधन** = राखी का त्योहार, **निराश** = बिना आशा के, जिसे आशा न हो, **सैनिक** = सिपाही, **संकटों** = मुसीबतों, **प्रण** = प्रतिज्ञा, **मुकाबला** = सामना

8. गौरैया के लिए

पुरखे = दादा, परदादा, **परती** = ऐसी ज़मीन जिस पर बहुत समय तक खेती न की गई हो, **बटोरना** = इकट्ठा करना, **उत्सुकता** = जानने की इच्छा, **चाव** = शौक, **निर्णय** = फैसला, **परिश्रम** = मेहनत

9. सबसे बढ़कर

बाँह = बाजू, **डोलना** = हिलना, **मनुष्य** = इंसान, **दुनिया** = संसार

10. नीम

कुल्हाड़ी = लकड़ी काटने का औज़ार, **आनंद** = खुशी, **शुद्ध** = साफ़, **निबौरी** = नीम का फल, **भाग** = हिस्सा, **कराहना** = दर्द से 'आह-आह' करना

11. बीरबल की खिचड़ी

विद्वान = बहुत पढ़ा-लिखा, **नम्रता** = विनय, **उपस्थित** = हाज़िर, **हाँडी** = मिट्टी का एक बरतन, **दीपक** = दीया, **सम्मान** = आदर, **भेंट की** = उपहार के रूप में दी

12. फूलों की घाटी में

घाटी = दो पहाड़ों के बीच की नीची ज़मीन, **देवलोक** = स्वर्ग, **महके** = खुशबू फैले, **फुलवारी** = फूलों का छोटा बगीचा, **मंद** = धीमा, **पवन** = हवा, **दुलारना** = प्यार करना, **न्यारी** = अलग तरह की, अनोखी, **भीनी** = हलकी, **बासंती** = बसंत ऋतु की, **तट** = किनारा, **निर्मल** = साफ़

13. एडीसन

प्रकाश = रोशनी, **बुद्धिमान** = चतुर, होशियार, **महान** = बड़ा, **उत्साह** = हिम्मत, **परिश्रम** = मेहनत, **उपयोग में** = काम में, इस्तेमाल में, **प्रयोग** = इस्तेमाल, **मग्न** = डूबा हुआ, मगन

14. खेल दिवस

दिवस = दिन, **प्रारंभ** = शुरू, **कतार** = पंक्ति, **करतब** = अचरज में डालने वाले खेल, काम, चकित = हैरान

15. चिड़िया का गीत

आकार = शक्ल, रूप, **संसार** = दुनिया, **तिनके** = सूखी घास, **शाखों** = डालियों, **सुकुमार** = कोमल, **पसार** = फैलाकर

16. चतुर गीदड़

कठिन = मुश्किल, **चट करना** = खाकर समाप्त कर देना, **कठिन** = मुश्किल, **उपकार** = भलाई, **चतुर** = होशियार, **निश्चिंत** = बिना चिंता के, बेफ़िक्र, **शांत** = चुपचाप, **सहायता** = मदद, **दुम** = पूँछ

17. ईद

मुबारक = शुभ, बधाई

18. किसान

खाट = चारपाई, **मूसलधार** = बहुत अधिक वर्षा, **चैन** = आराम, शांति, **मौन** = चुपचाप

19. रास्ते का पत्थर

दयालु = दूसरों पर दया करने वाला, **न्यायप्रिय** = उचित न्याय करने वाला, **भ्रमण** = सैर, **ग्राहक** = खरीदने वाला, **टाप** = घोड़े के पैर की आवाज़, **आशीर्वाद** = आशीष, **मुख्य** = प्रधान, बड़ा, **प्रशंसा** = तारीफ़

20. छब्बीस जनवरी की परेड

दृश्य = नज़ारा, **विद्यालय** = पाठशाला, स्कूल, **विद्यार्थी** = पढ़ने वाले बच्चे, **पुरस्कार** = इनाम, **वीरता-पुरस्कार** = बहादुरी के काम करने के लिए दिया जाने वाला पुरस्कार, **नर्तक** = नाचने वाले, **नृत्य** = नाच, **लोकनृत्य** = अपने-अपने राज्यों में प्रचलित नाच

21. जादू का बुरुश

अभ्यास = कोई कार्य बार-बार करना, **चित्रकार** = चित्र बनाने वाला, **आश्चर्यचकित** = हैरान, **आवश्यकता** = ज़रूरत

22. जंगल का राजा

साहसी = हिम्मतवाला, **पैने** = तेज़, **पालन-पोषण** = पालकर बड़ा करना, **मनुष्य** = आदमी, **चतुराई** = होशियारी, **संख्या** = गिनती, **सुरक्षा** = बचाव

23. अर्जुन का निशाना

अस्त्र-शस्त्र = हथियार, **कुशल** = होशियार, **लक्ष्य** = निशाना